# गोसाईं बागान का भूत

शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय

H
028.5 M 896 G
028.5
M896G

# गोसाईं बागान का भूत

मूल बाङ्ला

**शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय**

हिन्दी अनुवाद

**अमर गोस्वामी**

रेखांकन

**दीपक हरिचन्दन**

साहित्य अकादेमी

*Gosain Bagan Ka Bhoot:* Hindi Translation of Shirshendu Mukhopadhyaya's *Gosain Baganer Bhoot*, a children novel in Bengali, by Amar Goswami, Sahitya Akademi, New Delhi (1997), Rs. 30.00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1993

पुनर्मुद्रण : 1997

**साहित्य अकादेमी**

**प्रधान कार्यालय**

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

**क्षेत्रीय कार्यालय**

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23, ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304-305, अन्ना सालई तेनामपेट, मद्रास 600 018

एडीए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

H
028.5
M896G

**मूल्य** : तीस रुपये

ISBN : 81-260-0226-3

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 896 G
00115976

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा,

Indian I... ...co
115976
17.11.04

# 1

वार्षिक परीक्षा में गणित के पर्चे में सिर्फ़ तेरह नम्बर पाकर बुरुन बिल्कुल बेवकूफ़ समझ लिया गया। जहाँ उसे इतिहास में अस्सी, बाङ्ला भाषा में पैंसठ और अंग्रेज़ी में साठ नम्बर मिले थे, वहाँ गणित में सिर्फ़ तेरह।

हेडमास्टर सचिन सरकार बरीसाल के रहनेवाले थे। वे जितने रोब-दाब वाले थे उतने ही क्रोधी थे। मगर वे अपने विद्यार्थियों को बिल्कुल नहीं पीटते थे। लेकिन अपने कमरे से निकलकर उनके बरामदे में खड़े होते ही स्कूल में सुई गिरने की आवाज़ सुनाई देने वाला सन्नाटा छा जाता था। अपने स्कूल के हर विद्यार्थी को वे अच्छी तरह जानते थे, उन सबके नाम-धाम, आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य वगैरह की सारी बातें उन्हें मुँहजबानी याद रहती थीं।

परीक्षाफल निकल जाने के बाद उन्होंने बुरुन को बुलाकर कहा, "जिस लड़के को गणित नहीं आती, वह बड़ा होकर क्या बनता है, जानते हो? बेहिसाबी, ख़र्चीला और अव्यावहारिक। गणित की शिक्षा आदमी की नींव को मजबूत करती है। मन को निर्मल बनाती है और विचार-शक्ति को स्पष्ट। बेकार की भावुकता में कमी आती है। इसलिए जो लड़का गणित की पढ़ाई में मेहनत नहीं करता, उसे मैं अच्छा लड़का नहीं समझता।"

घर लौटने के बाद पिताजी ने बुरुन को अपने कमरे में बुलाया। वे बहुत गम्भीर व्यक्ति थे। अच्छे डॉक्टर होने के कारण वे बड़े लोकप्रिय थे, इसलिए व्यस्तता भी काफ़ी थी। अपने बच्चों की खोज-ख़बर लेने का भी उन्हें समय नहीं मिलता था। कहा जाए तो अपने बच्चों से वे बहुत कम बातचीत करते थे। ज़रूरत न पड़े तो लगातार सात-आठ दिन तक वे किसी से बात ही नहीं करते थे। इसलिए बुरुन और उसके भाई-बहन अपने पिता को एक रहस्यमय व्यक्ति समझते थे। उनके सामने पड़ने से वे कतराते थे।

बुरुन जब अपने पिताजी के कमरे में गया तब वे खिड़की के पास रखी

आरामकुर्सी पर बैठे थे। वे अपने कपड़े वगैरह पहनकर गले में स्टेथेस्कोप लटकाकर तैयार थे। यानी अब वे रोगियों को देखने के लिए निकलने ही वाले थे। बुरुन के कमरे में घुसते ही पिताजी ने हाथ बढ़ाकर कहा, "अपनी प्रोग्रेस रिपोर्ट दिखाओ।"

बुरुन के डरते-डरते एक तहाया हुआ काग़ज़ हाथ में देते ही उसके पिताजी अपने माथे पर बल डालकर खीझते हुए उसके नम्बरों को देखने लगे। इसके बाद उस काग़ज़ को लौटाते हुए बोले, "मैं भी अपनी पढ़ाई के समय गणित में बहुत अच्छा नहीं था। लेकिन अस्सी नम्बर भले ही न मिलते, चालीस-पचास मिलने में कोई दिक्कत नहीं होती थी।"

बुरुन की निगाहें नीची हो गयीं।

पिताजी ने उठते-उठते कहा, "कल से कराली मास्टर साहब के यहाँ गणित की पढ़ाई के लिए जाना शुरू कर दो। वहाँ तक रोज़ पैदल जाओगे और पैदल ही वापस लौटोगे।"

कराली मास्टर साहब वहाँ से ढाई मील दूर कामराडाँगा में रहते थे। वे रोज़ वहाँ से साइकिल पर स्कूल आते थे। गणित के अध्यापक के रूप में उनका खूब नाम था। कहा जाता है कि वे खाना खाने के बाद बैठे-बैठे उसी जूठी थाली में अपनी उँगली से गणित लगाया करते थे। गणित के बड़े-बड़े सवालों का सपना देखते थे। लोग जिस तरह कहानी-उपन्यास की किताबें पढ़ते हैं, कराली सर ठीक उसी तरह गणित की किताबें पढ़ते थे। लोग जिस तरह दुःख की कहानियाँ पढ़कर रोते हैं, हँसी की कहानी पढ़कर हँसते हैं, भूत की कहानी पढ़कर रोमांचित होते हैं, कराली सर भी उसी तरह गणित की मोटी-मोटी किताबें पढ़ते-पढ़ते कभी ठठाकर हँस पड़ते थे, कभी रोते-रोते अपने आँसू पोंछने लगते थे और कभी गणित का ग़लत सवाल देखकर डर से सिहरकर 'राम-राम-राम' करने लगते थे। मगर वे स्वभाव के बड़े भुलक्कड़ थे। अपने विद्यार्थियों में से किसी का भी नाम उन्हें याद नहीं रहता था। किसी के घर में दावत खाने के बाद अगर कोई उनसे पूछता, "कराली बाबू, रोहू मछली कैसी बनी थी ?"

जवाब में कराली सर चकित होकर पूछते, "रोहू मछली ! खाने में रोहू मछली भी थी क्या ?"

एक बार खीर खाने के बाद डकार लेकर कहा था, "वाह, बहुत बढ़िया दही था। इतना मीठा दही मैंने कभी नहीं खाया।" गणित के इतने प्रसिद्ध अध्यापक

होते हुए भी कराली बाबू हिसाब-किताब के मामले में बड़े कच्चे थे। सवा रुपये किलो करेले की ढाई सौ ग्राम की कीमत का हिसाब वे बाज़ार में सब्जी ख़रीदते समय किसी तरह भी लगा नहीं पाते थे। आख़िर में परेशान होकर वे उस दुकानदार से ही कहते, "भैया, तुम्हीं हिसाब लगाकर पैसे बता दो। मैं इसमें थोड़ा कमज़ोर हूँ।"

रोज़ ढाई-मील पैदल चलकर कराली सर से गणित सीखने की बात पर बुरुन को बहुत गुस्सा आ रहा था।

इस बात को शायद समझकर ही पिताजी ने कहा था, "बिना तकलीफ़ उठाये आदमी आगे नहीं बढ़ पाता। तुम लोग सुख-सुविधा से पल रहे हो, इसलिए सब कुछ बड़ा आसान लगता है। खुद रवीन्द्रनाथ इतने धनी आदमी की संतान होते हुए भी नौकरों के बीच पले-बढ़े थे। अपनी सुख-सुविधाएँ, मनोरंजन वगैरह भी आज से ख़त्म समझो। अब से तुम्हारी तकलीफ़ों के दिन शुरू होंगे। गणित की पढ़ाई के लिए तुम्हें रोज़ पाँच मील पैदल जाना और आना पड़ेगा। यह हुई पहली तकलीफ़। इसके बाद दूसरी, तीसरी, ऐसी ही और भी तकलीफ़ें आयेंगी। तैयार रहना।"

इतना कहकर पिताजी चले गये।

बुरुन को गणित में तेरह नम्बर मिलने के बाद से घर में सभी मुँह फुलाये रहते थे। कोई भी उससे ज्यादा बातें नहीं करता था। माँ तो करती ही नहीं थी, छोटा भाई और बहन–गुरुन और बेली भी उससे कटे-कटे रहते। बुरुन ने एक बार बेली को अपनी पीठ खुजा देने के लिए कहा था। बेली ने जवाब दिया था, "तुमसे ज़्यादा बातें करने के लिए पिताजी ने मना किया है। तुम दीवार से अपनी पीठ रगड़ लो। खुजली ठीक हो जायेगी।"

बुरुन समझ गया कि घर वाले उसकी उपेक्षा करने लगे हैं।

परीक्षाओं के बाद अभी स्कूल बंद ही चल रहा था। बुरुन को दिन भर बड़ा अकेलापन सताता। अपने साथियों के साथ ज़्यादा मिलने-जुलने से उसे रोक दिया गया था। सिर्फ़ शाम को उसे खेलने के लिए डेढ़ घंटे तक की छूट मिली थी। इसलिए बुरुन का मिज़ाज़ बेहद उखड़ा हुआ रहता था। घर में दादाजी ही उससे पहले जैसा व्यवहार करते। प्यार भी करते। लेकिन उनके साथ ज्यादा वक़्त बिताने का कोई उपाय नहीं था। वे दिन रात वैद्यक की दवाइयाँ बनाने में व्यस्त रहते थे। वे वैद्यक में धातव और भेषज दोनों तरह का इलाज करते थे। वे दिन रात

हीराभस्म, मुक्ता भस्म, स्वर्ण सिन्दूर बनाते। मैदानों-जंगलों से बेल की जड़, कंटकाकरी, खानकुनी और भी न जाने कितनी तरह के पत्ते इकट्ठा करते। इसके बाद उन सबसे दवाई तैयार करते। एलोपैथी चिकित्सा से वे बड़े चिढ़ते थे और इस मामले में वे अपने डॉक्टर बेटे को भी तुच्छ समझते थे। शाम के वक़्त जब उनकी बाज़ार वाली दुकान में बूढ़ों की महफ़िल बैठती, तब वे मौक़ा पाते ही उनसे यह बात कहना नहीं भूलते थे, "भला भेलू भी कोई डॉक्टर है। अभी तक उसे नाड़ी देखना नहीं आया।"

घर में बुरुन आजकल बड़ा अकेलापन महसूस करता। गणित में तेरह नम्बर पाना क्या होता है, इसे वह रग-रग में समझ रहा था।

दोपहर को घर में ख़ामोशी छायी हुई थी। पिताजी किसी रोगी को देखने कसबे से बाहर गये हुए थे। माँ, बेली और बुरुन सो रहे थे। दादाजी और घर का नौकर शिबू आँगन में बैठकर खरल में भांग की सूखी पत्तियाँ कूट रहे थे। घर का परचा हुआ नेवला इधर-उधर घूम रहा था। अपनी पालतू मैना के पिंजड़े के सामने जाकर बुरुन जैसे ही खड़ा हुआ, मैना चहचहाने लगी, "बुरुन को मिला है गणित में तेरह !......बुरुन को मिला है गणित में तेरह ! ......बुरु को मिला है गणित में......"

बुरुन चौंक गया। मैना को यह बात किसने सिखायी ? मैना सचमुच बड़ी चतुर थी। कोई भी बात दो-चार बार सुनते ही वह उसे याद कर लेती थी। ज़रूर बुरुन को चिढ़ाने के लिए ही इस बीच किसी ने मैना को यह बात रटा दी होगी।

पूरी तरह अपमानित होने में अब रह ही क्या गया था ? आजकल बुरुन को अपने कपड़े भी खुद ही साफ़ करने पड़ते थे। अपने जूठे बर्तन तक खुद धोने पड़ते थे। इसके अलावा अपने जूते पॉलिश करने, अपना बिस्तर बिछाने और मसहरी लगाने, अपने पढ़नेवाले कमरे में सुबह-शाम झाड़ू लगाने जैसे काम भी उसे खुद ही करने पड़ते थे। घर में अपने भाई-बहनों या नौकरों पर वह किसी भी काम के लिए हुक्म नहीं चला सकता था। यह सब अपमान किसी तरह सहा जा सकता था लेकिन घर की पालतू चिड़िया के मुँह से अपने तेरह नम्बर पाने की बात सुनकर वह गुस्से से बौखला गया। वह काफ़ी देर तक उस मैना को घूरता रहा। इसके बाद किसी को कुछ बताये बिना ही वह चुपचाप घर से बाहर निकल गया।

जाड़े की दोपहर थी। गुनगुनी धूप फैली हुई थी। मुहल्ले के मैदान में बुरुन

अपने में खोया हुआ पैदल चलता-चलता उस छोटे से कस्बेनुमा शहर से बाहर निकलकर एकदम गोसाईं डकैत के बागान में पहुँच गया।

## 2

गोसाईं डकैत की बगिया या गोसाईं बागान एक विशाल जंगली इलाका था। उस जंगल में एक खंडहर था। एक बहुत बड़ा ताल था। जंगली बेर तथा करौंदे के असंख्य पेड़ थे। ऐसे बढ़िया बेर और कहीं नहीं होते थे। देखने में वे मटर के दानों की तरह लगते पर स्वाद में बड़े मीठे थे। मगर उस जंगल में इतने साँप-बिच्छू, खुजली वाले बिच्छू पौधे और कँटीले झाड़-झंखाड़ थे कि उन जंगली बेरों को खाने वहाँ कोई नहीं आता था। वे सारे बेर चिड़ियों के पेट में ही चले जाते। जो पेड़ जंगल के बाहरी हिस्से में थे, उनमें फल लगते-न-लगते झुंड-के-झुंड लड़के आकर उन्हें साफ़ कर जाते। चूँकि झाड़ियों के उस घने जंगल में ज़्यादा लोग जा नहीं पाते थे इसलिए पोखर की दक्षिण दिशा के पेड़ों में लगने वाले बेर वैसे ही पड़े रहते थे। बेरों का मौसम बीत जाने के बाद ज़मीन में गिरे बेरों से नये-नये पेड़ पैदा हो जाते थे। इस तरह जंगल बढ़ता जा रहा था।

बुरुन का मन उस दिन बहुत उखड़ा हुआ था। और मन उखड़ा होने पर कुछ उल्टा-पुल्टा करने की इच्छा होती है। जैसे इस वक़्त बुरुन की इच्छा कर रही थी कि किसी तरह से उस दुर्गम जगह में पहुँचकर वहाँ के वीराने में कुछ देर गुमसुम बैठा रहे और जंगली बेर खाये। अगर साँप-बिच्छू काट भी ले तो ज़्यादा से ज़्यादा यही होगा कि वह मर जायेगा। इस वक़्त उसका मरना ही अच्छा। अगर बिच्छू (खुजली) का पत्ता लगता हो तो लगे। जिस अपमान की आग में वह जल रहा था, उस जलन से भला बिच्छू पत्ते की जलन कितनी ज़्यादा होती।

उसी उदासी में बुरुन जंगल में घुस गया। वहाँ घुस जाने के बाद उसकी समझ में आया कि इस दुर्भेद्य जंगल को पार करके जंगली बेर की झाड़ियों तक पहुँच पाना असम्भव काम है। काँटों और खुजली वाले बिच्छू पत्ते की वह भले ही परवाह न करे लेकिन आगे बढ़ने के लिए रास्ता तो चाहिए। वह जिधर से

भी जाने की कोशिश करता, उधर ही झाड़ियों और पेड़ों की पतली-पतली डालियाँ हाथ बढ़ाकर उसका आगे बढ़ना रोक देतीं ।

आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका टार्जन की तरह एक बड़े पेड़ पर चढ़कर उसकी एक शाख को पकड़कर पेंग लगाकर दूसरे पेड़ पर, फिर वहाँ से तीसरे पेड़ पर होते हुए इसी तरह आगे बढ़ना था । ऐसा करते हुए वह अगर गिर भी पड़े तो कोई परवाह नहीं । वह चोट उसे ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देगी । बल्कि तभी शायद उसके घर वाले यह महसूस करें कि उन्होंने बुरुन का कितना दिल दुखाया है ।

पेड़ पर चढ़ने में बुरुन उस्ताद था । एक शिरीष के पेड़ पर वह बंदर की तरह चढ़ गया । ज़मीन के समानांतर एक मोटी डाल पर थोड़ा पैदल, थोड़ा घुटनों के बल चलते हुए उसने एक कदम्ब की डाल पकड़ ली । बुरुन ज़मीन से तीस हाथ की ऊँचाई पर था । इस तरह आगे बढ़ने में बुरुन को ख़ास कठिनाई नहीं हो रही थी । आसपास कहीं कोई नहीं था । सिर्फ़ जाड़े की ठंडी हवा बह रही थी । चारों तरफ़ सिंदूरी धूप छायी हुई थी । पेड़ों के झुरमुटों में असंख्य चिड़ियाँ और पतंगों के उड़ने का शोर था ।

पेड़ की डालों से हाथ-पैरों की चमड़ी छिल जाने के कारण जलन हो रही थी । एक नीम के पेड़ पर बैठकर बुरुन ने थोड़ा आराम किया । इसके बाद फिर सँभल-सँभल कर आगे बढ़ने लगा । कड़ी मेहनत के कारण इस जाड़े में भी वह पसीने-पसीने हो गया था । वह जितना आगे बढ़ रहा था, पेड़-पौधे उतने ही घने होते जा रहे थे । सारे पेड़ एक दूसरे से सटे हुए थे । उन सभी पेड़ों की डालियाँ एक दूसरे से उलझी हुई थीं । इसलिए उसे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी । किसी-किसी पेड़ पर बुरुन को चमगादड़ लटके हुए मिले । एक पेड़ पर गिलहरी बैठी हुई गूलर खा रही थी । नीचे जंगल की झाड़ियों से कोई साही खड़खड़ आवाज़ करते हुए गुज़र गयी । बुरुन पेड़ पर लगे चिड़ियों के घोंसलों को लाँघता हुआ आगे बढ़ने लगा । किसी-किसी घोंसले में चिड़ियों के अंडे भी पड़े थे । एक घोंसले में बैठे चिड़ियों के बच्चे उसे देखकर घबड़ाकर शोर मचाने लगे ।

बेर वन में पहुँचने में बुरुन को तकलीफ़ ज़रूर हुई मगर यह काम उसके अलावा अभी तक और कोई नहीं कर पाया था, यह सोचकर वह खुद को बड़ा बहादुर समझने लगा । एक शीशम के पेड़ के तने से होता हुआ वह धीरे-धीरे नीचे

के निर्जन सन्नाटे और अँधेरी जगह में उतरने लगा। उतरते समय पकड़ने लायक़ कोई नीची डाल न होने के कारण उसे लगभग दस हाथ की ऊँचाई से कूदना पड़ा। सड़े हुए पत्तों का ढेर ज़मीन पर गद्दे की तरह बिछा होने के कारण बुरुन को चोट नहीं आयी। बस उसके दोनों पैर पत्तों में कुछ दूर तक धँस गये। नीचे शायद कोई काँटा या काँच रहा होगा जो उसके पैर में चुभ गया।

एक खुली हुई जगह में पहुँचकर बुरुन ने ज़मीन पर बैठकर अपने तलुवे को देखा। चिंता की कोई बात नहीं थी। घोंघे के खोल का टूटा हुआ टुकड़ा बिंध गया था। मगर इस सबकी उसे आदत थी। इस टुकड़े को बाहर निकालकर बुरुन ने एक मुट्ठी दूब उखाड़कर उसे घिसकर उसका रस निकाल लिया। यह दवा उसके दादाजी की सिखायी हुई थी। दूब के रस से कई बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। कई तरह के ज़हर उतर जाते हैं।

दादाजी उसे कुछ न कुछ सिखाते ही रहते थे। मनुष्य के शरीर में रोज़ एक तरह का ज़हर तैयार होता है, जिसे टॉक्सिन कहते हैं। यह ज़हर जमते-जमते शरीर में तरहं-तरह के रोग पैदा करता है। मांस-मछली खाने से टॉक्सिन की मात्रा और बढ़ जाती है। इसेलिए उसके दादाजी उसे रोज़ सुबह खानकुनी पत्ते का रस थोड़े दूध और गुड़ के साथ देकर ढेर सारा पानी पिला देते। उससे शरीर में टॉक्सिन नहीं जम पाता। उसके दादाजी भोजन में मांस-मछली के सख्त विरोधी थे। इस बात को लेकर उसके पिताजी के साथ दादाजी की अक्सर बहस होती थी। पिताजी कहते, प्रोटीन के लिए मांस-मछली खाना ज़रूरी है। दादाजी कहते, पशु-पक्षियों के शरीर की कोशिकाओं में और मनुष्य के शरीर की कोशिकाओं में बहुत अंतर होता है। उन्हें खाने से तकलीफ़ें ही बढ़ती हैं।

बुरुन घास का रस लगाकर खड़ा हो गया। चारों तरफ़ के अनगिनत पेड़ों में बेर और करौंदे के गुच्छे घने बादलों की तरह झुक आये थे। वहाँ पर लगे कुछ एक अमरख के पेड़ों से पके अमरख की महक आ रही थी। चारों तरफ़ चिड़ियाँ अपने पंख फड़फड़ाते हुए उड़ रही थीं। तितलियाँ भी अपने रंग-बिरंगे पंख फैलाकर उड़ रही थीं। वहाँ का पूरा वातावरण भीगी हुई ज़मीन, घनी ठंडी छाँह और अपने सन्नाटे के कारण बड़ा डरावना लग रहा था।

बुरुन ने मुट्ठी भर जंगली बेर लेकर अपने मुँह में डाला ही था कि तभी उसकी नज़र पोखर की दूसरी तरफ़ खड़े एक नंगे बदन वाले लुंगी पहने हुए एक आदमी पर पड़ी, जो उसे लगातार घूर रहा था। यह चौंकाने वाली बात थी।

उस ताल के पानी का इस्तेमाल न होने के कारण उसका पानी सड़कर हरे रंग का हो गया था। उस ताल में जलकुंभियाँ ज़रूर नहीं थीं मगर पानी पर काई की महीन पर्त छायी हुई थी। उस ताल का घाट भी टूटा हुआ था। उसके किनारे पर घना जंगल था और चारों तरफ़ काँटों और बिच्छू के पत्तों की घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं। इस जंगल में कोई लकड़ियाँ भी बीनने नहीं आता था। तब वह आदमी कहाँ से आ गया?

बुरुन भी उसे देखने लगा। उस दिन उसका मन ठीक नहीं था। नहीं तो वह उस आदमी को देखकर ज़रूर चौंकता या हो सकता है डर भी जाता। लेकिन इस वक़्त वह इतना उखड़ा हुआ था कि उसे किसी भी चीज़ से डर नहीं लग रहा था, और न उसे किसी बात की कोई चिन्ता ही हो रही थी।

बुरुन के देखते ही देखते उस आदमी ने तट से उतरकर पोखर के पानी में अपना पैर रखा। इसके बाद बिना किसी परेशानी के वह उस पानी पर तेज़ क़दमों से बढ़ता हुआ उसकी तरफ़ आने लगा। पानी पर भी कोई इस तरह से चल सकता है, बुरुन को इसका पता नहीं था। वह चकित हो गया। विज्ञान तो इस पर यकीन नहीं करता। गुरुत्वाकर्षण नाम की कोई चीज़ होती है। स्पेसिफिक ग्रेविटी होती है। तब?

जो भी हो वह आदमी उसी तरह चलता हुआ इस पार चला आया। उसके पैर के तलुवे ज़रा भी नहीं भीगे थे।

वह आदमी अपने बड़े-बड़े दाँत दिखाकर हँसता हुआ बोला, "क्यों मुन्ना डर गये?"

बुरुन ने हैरान होकर पूछा, "कैसा डर? डरूँगा क्यों?"

"डरे नहीं?" वह आदमी चौंक गया।

"नहीं। भला इसमें डरने की क्या बात है? मैं तो सिर्फ़ विज्ञान की बात सोच रहा था। मुझे लगा विज्ञान को अभी बहुत कुछ जानना बाक़ी है।"

"वह तो होगा ही।" इतना कहकर उस आदमी ने मुस्कराते हुए, जिस तरह कोई अपनी टोपी उतारता है, ठीक उसी तरह अपने सिर को गर्दन से अलग किया और उसे अपने हाथ में लेकर सर की गंज वाली जगह को थोड़ा झाड़ने के बाद फिर से सही जगह पर लगाकर बोला, "सिर में काफ़ी जूँ पड़ गई हैं, इसलिए खुजला रहा था।"

"ओह!" बुरुन ने कहा।

वह आदमी खीझकर बोला, "क्या बात है, ज़रा बताओ तो ? इस बार भी तुम बिलकुल नहीं डरे !"

बुरुन ने कंधे उचकाकर कहा, "आपके सिर में काफ़ी जूँ पड़ गयी हैं, जिससे आपको खुजली हो रही है, इसमें डरने की क्या बात है ?"

उस आदमी ने नाराज़ होकर कहा, "तुम सोच रहे हो कि मैं तुमसे मज़ाक़ कर रहा हूँ ।"

"ऐसा क्यों सोचूँगा ?"

बेहद नाराज़गी से कुछ देर तक बुरुन को घूरने के बाद वह बोला, "सोचते होगे कि मैं जादू दिखा रहा हूँ ।"

"हो सकता है !"

उस आदमी ने अचानक अपना दायाँ हाथ ऊपर उठाया । बुरुन ने देखा कि वह काफ़ी लम्बा होकर अमरख के पेड़ की फुनगी तक पहुँच गया । दूसरे ही पल उसने एक पका हुआ अमरख तोड़कर उसे बुरुन का सामने फेंकते हुए बोला, "देखा ?"

बुरुन ने खीझकर कहा, "इसमें न देखने की क्या बात है ? मेरे सामने ही आपने इसे तोड़ा है ।"

उसने डाँटते हुए पूछा, "तब डरते क्यों नहीं हो ?"

"डर नहीं लगता तो मैं क्या करूँ ?" यह कहकर बुरुन ने उस बेर के गुच्छे से कुछ बेर तोड़कर अपने मुंह में डाल लिया ।

उस आदमी ने मुँह बनाकर कहा, "इस तरह से बेर खाते हुए शर्म नहीं आती ? अपनी आँखों के सामने मुझे मौजूद देखकर भी बड़े इतमीनान से बेर खाये जा रहे हो । और भी देखोगे ? ऐं !"

इतना कहकर दह अचानक अपने दाहिने हाथ से अपने बाँये हाथ को खोलकर उसे चारों तरफ़ तलवार की तरह भाँजने लगा । इसके बाद अपने बायें हाथ से उसने अपने दाहिने हाथ को खोला । फिर दोनों हाथों से अपने दोनों पैरों को खोलकर दिखाया । इसके बाद अचानक ग़ायब होकर फिर प्रकट हो गया । एकाएक तेरह-चौदह फुट लम्बा हो गया । फिर होमियोपैथी की शीशी जितना छोटा भी हो गया । इतना कुछ कर चुकने के बाद उसने अपना पहले जैसा रूप धरकर हाँफते-हाँफते बुरुन से कहा, "देखा ?"

"हूँ ।"

"हूँ, मतलब ? इतना कुछ देखने के बाद भी तुम बेहोश नहीं हुए। न यहाँ से भाग रहे हो। बस खड़े-खड़े बेर खाये जा रहे हो। जानते हो, मैं कौन हूँ ?"

"कौन हैं ?"

"मैं गोसाईं डकैत का दाहिना हाथ निधिराम हूँ। यहाँ पर दो सौ साल से रह रहा हूँ। समझे ? दो सौ साल से !"

"समझ गया।"

"क्या समझे ?"

बुरुन ने खीझते हुए कहा, "बड़ी-सीधी सी बात है। इसमें न समझने का क्या है ? आप दो सौ सालों से यहाँ रह रहे हैं।"

उस आदमी ने गंभीर होकर कहा, "मुन्ना, तुम इस सचाई को नहीं समझ रहे हो। भला दो सौ साल तक कोई आदमी ज़िंदा रहता है ?"

"नहीं रहता।"

"तब मैं किस तरह से हूँ ?"

"इस बारे में मैं क्या कह सकता हूँ ?"

वह आदमी बिगड़कर बोला, "अभी भी तुम हक़ीक़त नहीं समझ रहे हो। दरअसल मैं ज़िंदा ही नहीं हूँ।"

बुरुन ने फिर से एक बेर अपने मुँह में डालते हुए कहा, "इससे मुझे क्या ?"

"ओफ ! बहुत लपड़-झपड़ किये जा रहे हो। भूत से नहीं डरते ? तुम कैसे बेअदब लड़के हो !"

बुरुन ने कहा, "मुझे बिल्कुल डर नहीं लग रहा है।"

यह सुनकर उस आदमी का चेहरा लटक गया। बेहद कातर होकर छलछलायी आँखों से बुरुन को देखने लगा। फिर एक गहरी साँस लेकर बोला, "सचमुच, ज़रा भी डर नहीं लग रहा है ?"

"नहीं।"

निधिराम ने अपने हाथ से शायद अपनी आँखें पोंछीं। दुख से भरकर उसके नथुने काँपने लगे। आँखें पोंछकर भरे हुए गले से बोला, "तुमने तो मुझे बहुत मुश्किल में डाल दिया। अब मुझे अपने लोगों के बीच अपना मुँह दिखाना मुश्किल हो जायेगा। गोसाईं सरदार को पता लगेगा तो मेरी गर्दन नाप लेगा।"

बुरुन ने मज़ाक़ में कहा, "भला आपको अपनी गर्दन का क्या डर ? अपने सिर को तो आप थोड़ी देर पहले ही फुटबाल की तरह हाथों में नचा रहे थे।"

उस आदमी ने बड़े दुख से कहा, "हमारी दुनिया के नियम कुछ दूसरी तरह के हैं। अगर किसी से कोई ग़लती हो जाये तो गोसाईं सरदार उसका सिर छीन लेते हैं। तुम लोग कहते हो, शर्म से गर्दन कट (झुक) गयी।" वह तो सिर्फ़ मुहावरे की बात होती है। गर्दन तो सचमुच की नहीं कटती। लेकिन हम लोगों की गर्दन सचमुच कट जाती है। हमारे समाज में यह बड़े शर्म की बात है। मुन्ना, तुम तुम ज़रा एक बार फिर से कोशिश करो, अगर मुझसे थोड़ा डर सको।"

बुरुन ने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता। आज मेरा मन उखड़ा हुआ है। मन उखड़ा रहने पर मुझे डर-वर नहीं लगता।"

वह आदमी बड़ी उम्मीद से बोला, "क्यों, तुम्हारा जी क्यों उखड़ा हुआ है? तुम्हारे मन को ठीक करने के लिए तुम जो कहोगे, वही करूँगा। लेकिन तुम्हें भी वायदा करना होगा कि इसके बाद तुम मुझसे ज़रूर डरोगे।"

बुरुन ने गहरी साँस लेकर कहा, "तुम्हारे बूते का नहीं है। मुझे गणित में सिर्फ़ तेरह नम्बर मिले हैं।"

वह आदमी मुस्कराता हुआ बोला, "यह बात है। मैं तुम्हें सारे सवाल सिखा दूँगा। कहोगे तो परीक्षा के समय सबकी आँखों से ओझल रहकर तुम्हारे सभी सवाल लगा दूँगा। अब तो तुम थोड़ा-सा डरो। मेरे प्यारे राजा बेटे!"

बुरुन ने इस बार चार बेर एक साथ मुँह में डालकर कहा, "भूत से भला कोई गणित सीखता है? मैं जाकर कराली सर से गणित पढ़ूँगा।"

उस आदमी ने चिंतित होकर कहा, "ठीक कहते हो। मै तो बड़े संकट में फँस गया। जब तक तुम्हारा मन उखड़ा रहेगा, तब तक तुम मुझ से डरोगे नहीं। मुन्ने राजा, मैं तुम्हें और भी कई तरह के करतब दिखा सकता हूँ। कहो तो ऐसा मंत्र पढ़ूँ कि बड़े ज़ोर से आँधी आ जाए, फटाफट ओले गिरने लगे। तुम कहो तो दिन में अमावस का अँधेरा कर दूँ। उस अंधेरे में कंकालों और पिंजरों को नाचते हुए देखना।"

बुरुन ने लापरवाही से कहा, "जो खुशी हो करिए, मना कौन करता है?"

"फिर भी तुम नहीं डरोगे?"

"नहीं।"

वह आदमी अपना सिर पकड़कर धम्म से ज़मीन पर बैठकर अपने आँसू पोंछते हुए बड़बड़ाने लगा, "गोसाईं बाबा मुझे सबसे निचले ओहदे पर बिठा देंगे। मेरी पगड़ी उतार लेंगे। मेरी इज्ज़त धूल में मिल जायेगी।"

चारों तरफ़ पेड़ों पर लटके भूत जो अब तक ख़ामोश बैठे थे, वे सब एक सुर में चिल्लाने लगे, "धिक्कार है निधिराम ! धिक्कार है निधिराम ! धिक्कार है निधिराम !"

बुरुन बुरी तरह खीझ गया। इस जगह को वह एकांत और वीरान समझकर आया था मगर यहाँ का माहौल तो कुछ और ही था। उसने बड़ी हताशा से अपने चारों तरफ़ देखा। वह फिर से शीशम के पेड़ पर चढ़कर पहले की तरह पेड़ों की डाल पकड़-पकड़कर वापस लौटने लगा।

बुरुन का मिज़ाज़ आज सचमुच ही बिगड़ गया था।

## 3

साँझ ढलने के बाद बुरुन के दादाजी राम वैद्यजी अपनी दुकान पर बैठे हुए थे।

इस बार हड्डियों को कँपा देनेवाली ठंड पड़ी थी। सूरज डूबने के बाद सड़क लगभग सूनी हो जाती थी। बाज़ार की ज़्यादातर दुकानें भी बंद हो गयी थीं। ख़रीदारों की भीड़ भी काफ़ी कम हो गयी थी। सिर्फ़ वैद्यजी की दुकान पर रोज़ के अड्डेबाजों की बैठकी जमी हुई थी।

इस बैठकी में बूढ़े ही शामिल रहते थे। आज भी वे सब पशम की चद्दर ओढ़े, सिर पर कनटोपा लगाये, गले में मफलर लपेटे और पैरों में मोजा चढ़ाये अपने में सिमटे-सिकुड़े बैठे हुए थे। सामने मेज़ पर एक लालटेन जल रही थी।

वैद्यजी बोले, "पता है तुम्हें, इस बार मेरे पोते बुरुन को गणित में सिर्फ़ तेरह नम्बर मिले हैं।"

सभी ने कहा, "हाँ हाँ, हमें मालूम है।"

रामबाबू मुँह बनाकर बोले, "भला यह क्यों नहीं मालूम होगा ! जब लड़के के बाप ने ही सारे शहर में इस बात का ढिंढोरा पीट रखा है। लेकिन मैं पूछता हूँ कि भैया, अगर गणित में तेरह मिल भी गये तो ऐसा कौन-सा आसमान सिर पर आ गिरा है। जो लोग अपने को बड़ा विद्वान और बुद्धिमान कहते हैं, उनका हाल तो मैं देख ही रहा हूँ। अब मेरे बेटे भेलू को ही देख लो ! डाक्टरी की पढ़ाई

में उसे सोने का मेडल मिला है। अपने पेशे में उसका सम्मान भी है। लेकिन अभी भी वह किसी रोगी की नाड़ी देखकर यह नहीं बता सकता कि उस रोगी के पेट में गैस है या दिल में दर्द है, रोगी बिगड़ैल स्वभाव का है या बेवकूफ़। यह सब समझना क्या कोई खेल है ! मगर गले में स्टेथेस्कोप लटकाकर बाँहों में सुई लगाते हुए रोगियों के प्राण निकाले जा रहे हो। मैं तो कहे देता हूँ कि अपने पोते को मैं वैद्यकी ही सिखाऊँगा। उसे गणित में तेरह मिला है तो कोई परवाह नहीं। ग़लत विद्या सीखने से तो मूर्ख रहना बेहतर है।'

सभी ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "ठीक कहते हैं !"

हाँ में हाँ मिलाये बिना उपाय भी नहीं था। राम वैद्यजी से सभी घबड़ाते थे। वे बड़े सच्चे, दबंग और आदर्शवादी व्यक्ति थे।

राम वैद्यजी अपने पोते का पक्ष लेकर और भी कुछ कहने जा रहे थे कि तभी रिटायर्ड सबजज धीरेन चटर्जी हाथ में छाता लेकर दुकान में घुसे।

छाता देखकर सभी हैरत में पड़ गये।

महिम बाबू ने पूछा, "धीरेन, बात क्या है ? आज बिल्कुल छत्रपति बनकर निकल पड़े हो। बाहर क्या बदली-बरसात का मौसम हो गया है ?"

धीरेन बाबू ने गहरी साँस लेकर कहा, "अरे नहीं, यह छाता तो एक हथियार है।"

"हथियार ? हथियार की बात कहाँ से आ गयी ?"

"बताता हूँ।" कहकर धीरेन बाबू एक कुर्सी पर बैठकर अपने बंद गले के कोट के ऊपर वाले बटन को खोलते हुए बोले, "ज़माना अच्छा नहीं है भाई ! इस बस्ती में एक शेर घुस आया है। पता है तुम्हें ?"

शेर !

शेर !!

शेर !!!

वहाँ बैठे सभी लोगों के गले से बस यही एक ही बात निकली।

धीरेन बाबू ने कहा, "कभी एक कहानी सुनी थी कि एक अंग्रेज़ साहब हाथ में छाता लेकर जंगल में घूमते वक़्त अचानक एक शेर के सामने पड़ गया। अपना दिमाग़ लगाकर साहब ने शेर के मुँह के सामने फटाक से अपना छाता खोल दिया। अचानक इस हमले से शेर घबड़ाकर भाग गया। इसलिए आज मैंने भी बाहर निकलते समय साथ में छाता रख लिया।

राम वैद्यजी ने नाराज होते हुए कहा, "बेकार की बातें छोड़कर मतलब की बात पर आओ। मैं पूछता हूँ शेर को देखा कहाँ ?"

"कुछ मत पूछो। आज शाम को हाथपखा के चाय बागान के खुले मैदान की ओर घूमने निकल गया था। साथ में मेरा पोता भी था। अचानक मेरे पोते ने ज़िद पकड़ी कि वह एक कुत्ते का बच्चा लेगा। मुझे मैदान में चार-पाँच कुत्ते के बच्चे खेलते हुए नज़र आये। पोते की ज़िद के कारण आख़िरकार एक कुत्ते के बच्चे को पकड़ने के लिए मुझे उनकी तरफ़ जाना पड़ा। लेकिन नजदीक पहुँचने पर मैंने देखा, अरे बाप रे। ये कोई कुत्ते के बच्चे-वच्चे नहीं थे। चार-पाँच शेर के बच्चे एक-दूसरे पर लदे हुए आपस में खेल रहे थे।"

"ठीक से देखा भी था कि वे शेर के बच्चे ही थे ?"

धीरेन बाबू ने बड़े विश्वास से कहा, "एकदम रॉयल टाइगर। चीता या लकड़बग्घा नहीं, धारियोंवाला असली सुंदरवन का राजा। इतना देखते ही मैंने लपककर अपने पोते को गोद में उठाया और वहाँ से सरपट भाग खड़ा हुआ। जब शेर के बच्चे वहाँ पर थे तो आसपास उनकी माँ या उनके पिता भी ज़रूर रहे होंगे। तुम बहुत सावधान रहना।"

हेम बाबू ने उठकर जूता पहनते हुए कहा, "बेहतर हो, मैं अब चलूँ। दिगिन, मुझे ज़रा कुछ दूर तक छोड़ आओ।"

बाक़ी लोग भी उतावले हो गये। उपेन बाबू को 'राम राम' का जाप करते देखकर शशधर बाबू ने उन्हें टोकते हुए कहा, "यह तो भूत का मंत्र है। शेर भला राम का नाम सुनकर भागेगा ?"

"तब ?" उपेन बाबू ने पूछा।

राम बाबू बेहद साहसी थे। बड़े धैर्य से बोले, "मगर शेर से डरकर कैसे काम चलेगा ? उत्तर-बंगाल के इन सभी जगहों में शेर तो बस्तियों में आते ही रहते हैं। पिछले साल भी आया था। हाँ, बस्ती के अंदर में नहीं घुसा था।"

सभी ने कहा, "बात तो ठीक है। मगर...... !"

बैठकी करने वाले अब और ज़्यादा देर तक बैठ नहीं सके। कुछ देर तक दिखावे के लिए बैठकी के बाद सब एक साथ उठ खड़े हुए। बस मन्मथ बाबू ही रह गये।

राम बाबू को किसी से डर नहीं लगता। सभी के चले जाने के बाद भी वे बड़े इतमीनान से बैठे रहे। उनके यहाँ रोगियो की ज़्यादा भीड़ नहीं रहा करती

थी। वे सभी काँखते-कूँखते जाकर उनके लड़के भेलू के ही चेम्बर में भीड़ लगाते थे। इसके बावजूद रामबाबू बड़े इतमीनान से बैठे रहते थे। वे सत्तर साल से ज़्यादा के हो गये थे, फिर भी वे आनेवाले दिनों के बारे में बेहद आशावादी थे।

मन्मथ बाबू ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा, ''मुझे कोई जल्दी नहीं है। भई, मैं शेर-वेर से नहीं डरता। बल्कि उससे भी ज़्यादा एक ख़तरे की बात मैं महसूस कर रहा हूँ।''

''कैसा ख़तरा ?''

''तुम्हें हाबू गुंडे की याद है ?''

राम वैद्यजी ने कहा, ''खूब याद है। हाबू के मुक़दमे में तुम हाकिम थे और मैंने गवाही दी थी। यही कोई बारह-चौदह साल पहले की ही तो बात है, याद क्यों नहीं रहेगी ?''

मन्मथ बाबू ने एक और गहरी साँस लेकर कहा, ''मैंने हाबू को उमर क़ैद की सज़ा सुनायी थी।''

''यह भी याद है। बहुत अच्छा किया था तुमने। हाबू जैसे बदमाश की जोड़ी मिलनी मुश्किल है। इस पूरे इलाके में उसने कितने क़त्ल किये, इसका हिसाब नहीं है।''

मन्मथ बाबू चिंतित होकर बोले, 'हाँ यह सच है। लेकिन जेल जाने के बाद पता चला, हाबू ने रोज़ का गीता पाठ शुरू कर दिया, संध्या-वंदन करने लगा। एकादशी-पूर्णमासी का उपवास भी। जेलख़ाने में जाकर उसका तो कायाकल्प ही हो गया। जेल में सभी उसे साधू बाबा कहने लगे। यहाँ तक कि पुलिस, जेलर सभी उसके भक्तों में शामिल हो गये।''

''हाँ, यह सब बातें भी सुनी हैं।''

मन्मथ बाबू ने एक बार और गहरी साँस ली। बोले, ''लेकिन कहावत है न जिसका अंत भला तो सब भला।''

''मतलब ?''

''तुम खुद देख लो।''

यह कहकर मन्मथ बाबू ने अपनी चादर के भीतर हाथ डालकर अपने कुर्ते की सामने वाली जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकालकर वैद्य जी को पकड़ा दिया।

राम बाबू अपने माथे पर बल डालकर उस चिट्‌ठी को पढ़ने लगे— 'श्री श्री काली माता सहाय। मान्य महोदय, चिट्‌ठी में हम लोगों का नमस्कार जानिए।

हम आपसे विधिवत इस बात का निवेदन कर रहे हैं कि हमारे परम माननीय हाबू उस्ताद आगामी होली के ठीक एक दिन पहले जेल से छूट रहे हैं। हाबू उस्ताद को आपने जैसी कठोर सज़ा सुनायी थी उसे हमलोग भूले नहीं हैं। श्री श्री कालीमाता के नाम पर हम शपथ लेते हैं कि हाबू उस्ताद के जेल से छूटने के सात दिनों के अंदर हम लोग आपसे इसका भयानक बदला लेंगे। आप तैयार रहियेगा। इति हाबू उस्ताद की भक्त मंडली।'

इस चिट्ठी को पढ़ने के बाद वैद्यजी ने पूछा, "तुम्हें यह चिट्ठी कब मिली ?"

"आज ही की डाक से आयी है।"

राम वैद्यजी बड़े इतमीनान से हँसते हुए बोले, "डर गये क्या ?"

मन्मथ बाबू उदास होकर बोले, "डरने की क्या बात है। बूढ़ा हो गया हूँ। अब मरने से कोई ख़ास डर नहीं लगता। लेकिन बात यह है कि ये तो भले लोग नहीं हैं। इनके हाथों से अगर बेमौत मारा जाऊँगा तो आत्मा को मुक्ति नहीं मिलेगी।"

राम वैद्यजी खिलखिलाते हुए अपनी रोबदार आवाज़ में बोले, "मुक्ति नहीं मिलेगी तो न मिले। हम दोनों ही हादसे में मारे जाने के बाद भूत बनकर मज़े से रहेंगे और जमकर बैठकी करेंगे। गोसाईं बागान जगह भी बुरी नहीं है। काफ़ी एकांत है। लोग आते-जाते भी नहीं। वहाँ पेड़-पौधे भी खूब हैं। भूतों के रोगों का इलाज करने के लिए मैं वहाँ के पेड़-पौधों से बड़े आनंद से दवा तैयार करूँगा। प्रैक्टिस अच्छी ही जमेगी। तुम भी वहाँ पर हाकिमी करना।"

राम वैद्यजी ने जैसे ही अपनी बात ख़त्म की वैसे ही दुकान में जैसे कोई बवंडर आ गया। सारे शीशी-बोतल एक दूसरे से टकराकर खट-खट आवाज़ करने लगे। राम वैद्य जी ने चकित होकर चारों तरफ़ देखा। मन्मथ बाबू भी चौंकते हुए बोले, "आँधी आयी है क्या ?"

रामबाबू ने सिर हिलाकर कहा, "अरे नहीं, जाड़े में भला आँधी कहाँ से आयेगी ? लगता है उत्तरी हवा का कोई झोंका आया होगा।"

मन्मथ बाबू कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद बोले, "रात काफ़ी हो गयी है। अब चलूँ।"

"बैठो ! हुक्का तैयार करता हूँ।"

मन्मथ बाबू बैठ गये। राम वैद्यजी उठकर दुकान के पीछे की छोटी कोठरी

Institute of ...
115976
17.11.04

में हुक्का तैयार करने लगे। चिलम सुलगाकर उसमें फूँक मारते-मारते वे दुकान में आकर उस चिलम को हुक्के पर टिकाकर उसके नैचे को आगे बढ़ाते हुए बोले, ''लो पीयो !'' कहने के साथ ही राम बाबू ने हैरत से देखा कि जिसके सामने उन्होंने हुक्के का नैचा बढ़ाया था, वही ग़ायब था।

कहाँ चला गया मन्मथ ? मन ही मन यह सोचते हुए राम वैद्यजी कुर्सी पर बैठकर कुछ अनमने होकर हुक्का पीने लगे। चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। बाज़ार की लगभग सभी दुकाने बंद हो चुकी थीं। उस छोटे से कस्बे में वैसे भी लोगों की आबादी कम थी, उस पर ऐसी हाड़ कँपानेवाली ठंड की रात। ऐसे में लोग बिना किसी जरूरत के भला घर से बाहर क्यों रहते ?

मगर राम वैद्यजी पर ठंड, शेर, भूत किसी का भी कोई असर नहीं होता था। वे बैठे-बैठे हाबू गुंडे के बारे में सोचने लगे।

## 4

राम वैद्यजी को हाबू के बारे में राई-रत्ती मालूम था। इस क़स्बे में वे उसे बचपन से देखते आये थे। दासू राय का इकलौता लाड़ला बेटा था हाबू। अपने माता-पिता का अत्यधिक दुलार और उनसे बढ़ावा पाकर हाबू कम उम्र में ही बिगड़ गया था। वह स्कूल से भागकर गोसाईं बागान में जाकर बिगड़े हुए लड़कों के साथ बैठकर बीड़ी पीता। यह देखकर एक दिन राम बाबू ने जाकर दासू राय से शिकायत की थी, ''अपने लड़के पर ज़रा नज़र रखो भाई दासू ! वह अभी से बीड़ी फूँकने लगा है।'' मगर दासू बेटे के प्रेम में अंधा हो गया था। मुँह बिगाड़कर बोला, ''जाओ, अपने काम से मतलब रखो। मेरा लड़का वैसा नहीं है। लोग मारे जलन के उसके ख़िलाफ़ उल्टी-सीधी बातें करते रहते हैं।''

एकलौता लड़का होने के कारण दासू हाबू को किसी भी तरह की कोई कमी नहीं होने देता था। इतने छोटे-से बच्चे को वह हर महीने हाथ ख़र्च के लिए दस-पंद्रह रुपये तक दे देता। रुपये पाकर हाबू और बिगड़ने लगा। पतंग, कंचे, लट्टू यहाँ तक कि ढेरों लेमनचूस ख़रीदकर भी उसके पैसे ख़त्म नहीं होते थे। वह अक्सर आवारा लड़कों के साथ गुलछर्रे उड़ाकर, नाटक-सिनेमा देखकर वक़्त बिताता।

इतनी कम उम्र में ही मस्ती के सिवा उसे और कोई बात नहीं सूझती थी। हर बार अपनी कक्षा की परीक्षा में अंडा पाने के बाद वह घर लौटकर आँसू बहाने लगता। वे आँसू सिर्फ़ दिखाने के होते। अपने लाडले की आँखों में आँसू देखकर अगर उसके माता-पिता का बस चलता तो वे उसे गोद में उठाकर उसके आँसू पोंछ देते। दासू इस बात का चारों तरफ़ ढिंढोरा पीटता रहता, "मेरे लड़के जैसा सयाना कोई और नहीं होगा। लेकिन वह जब भी पढ़ने बैठता है उसकी आँखें दुखने लगती हैं। उसे किसी अच्छे आँख के डॉक्टर को दिखाने की सोच रहा हूँ। अगले साल देखना, वह अपनी कक्षा में ज़रूर पहले नंबर पर आयेगा।"

दासू ये सारी बातें खूब बढ़ा-चढ़ाकर कहता, ऐसा भी नहीं था। हाबू वाकई बुद्धिमान लड़का था। बुरी संगत में पड़ने से पहले तक वह अपनी कक्षा में पहला स्थान पाता भी था।

ख़ैर, जब हाबू कुल चौदह बरस का ही था तब वह अपने पिता के संदूक़ से लगभग पाँच हजार रुपये और माँ के गहने चुराकर घर से भाग गया। उस शोक में दासू ज़्यादा दिनों तक ज़िंदा नहीं रहा। दो साल बाद हाबू की माँ ने भी आँखें मूँद लीं। इसके कई साल बाद अपने कुछ गुंडे-बदमाश चेलों सहित लौटकर हाबू ने गोसाईं बागान में डेरा जमा लिया। उसका चेहरा बेहद भारी-भरकम हो गया था। उसकी दोनों आँखें हमेशा लाल रहतीं। किसी की रत्ती भर भी परवाह नहीं करता था। कभी किसी को पीट देता, किसी को पकड़ कर उसका सारा रुपया-पैसा छीन लेता। उसके आने के बाद से कस्बे और आसपास के इलाके में चोरी डकैती और खून ख़राबी की घटनाएँ बढ़ने लगीं, भयानक सपने की तरह। कोई आदमी निश्चिन्त होकर बाहर निकल नहीं पाता था। शाम ढलते ही सड़कें सूनी हो जाती थीं। घरों में बैठे हुए लोग भी आशंका से डरे-सहमे रहते थे।

हाबू शायद इस बार काफ़ी मंत्र-तंत्र सीखकर आया था। यह भी अफ़वाह फैल गयी कि गोसाईं बागान की कोठरी में वह तरह-तरह की साधना किया करता था। कइयों ने राम वैद्यजी को बताया कि हाबू कभी-कभी शाम को एक विशाल शेर की पीठ पर बैठकर सैर करने निकलता है। एक आदमी ने तो यहाँ तक बताया कि उसने खुद अपनी आँखों से हाबू को उड़ते हुए भी देखा है।

उन दिनों वहाँ के दारोग़ा निशिकान्त थे। निशि दारोग़ा का कभी अपना ज़माना था। लेकिन उस वक़्त उनकी उम्र हो गयी थी। वे जल्दी ही रिटायर होने वाले थे। इसलिए ज़्यादा झूठ-झमेले में पड़ने से वे बचते थे। हाबू के अत्याचारों

से परेशान होने के बावजूद लोग डर के मारे थाने में शिकायत नहीं करते थे। उस समय राम वैद्यजी ने अपनी ओर से पहल करके निशि दारोग़ा को समझा-बुझाकर हाबू के विरुद्ध कदम उठाने के लिए राजी किया था।

दो-तीन दिनों के बाद एक दिन निशि दारोग़ा, रामबाबू की दुकान पर आकर अपना हैट उतारते हुए गहरी साँस लेकर बोले, "अरे साहब! आपने भी मुझे किस आदमी को पकड़ने के लिए भेज दिया। मेरी तो नाक में दम कर दिया उसने।"

"कैसे ?" राम वैद्यजी के कान खड़े हो गये।

"कुछ मत पूछिए। गोसाईं बागान पहुँचकर मैंने छापा मारने के लिए पूरे मकान को घेर लिया। उस वक़्त हाबू अपने दल के लोगों के साथ वहाँ मौजूद था। मगर जब हम लोग वहाँ घुसे तब मकान एकदम ख़ाली पाया। एक भी आदमी वहाँ नहीं था।"

"सचमुच ?"

"और क्या कह रहा हूँ आपसे ? इतने लोग देखते-देखते न जाने कहाँ ग़ायब हो गये। मैंने खुद अपनी आँखों से घर के बाहर की खिड़की से हाबू को घेरकर बैठे दस-बारह लोगों को गाँजा पीते हुए देखा था। मैंने पूरे मकान की ज़बरदस्त घेराबंदी करके सीटी बजाते हुए रिवाल्वर-बन्दूक़ों समेत घुसकर हाबू को ललकारा था, हाबू , फटाफट हथियार डाल दो!

लेकिन यह सब कहा किसे जा रहा था ? कमरे में जाकर देखा तो हाबू और उसके दल के दूसरे लोगों का नामोनिशान तक नहीं था। किसी गुप्त कोठरी या सुरंग की गुँजाइश से काफ़ी खोजबीन भी की गयी मगर कुछ भी हाथ नहीं आया। बड़ी हैरानी की बात है।"

यह सुनकर राम वैद्यजी काफ़ी देर तक चुपचाप बैठे हुए अपना हुक्का पीते रहे। उनके माथे पर बल पड़ गये थे।

तभी से हाबू गुंडे के नाम से न जाने कितनी सम्भव-असम्भव बातें अफ़वाह बनकर फैलने लगीं। कोई कहता, हाबू भूतों से अपना काम करवाता है। वह मंत्रबल से ग़ायब हो सकता है। किसी भी आदमी को आँख उठाकर देख ले तो वह ग़ायब हो जाता है। हाबू के डर से सभी काँपने लगे थे।

राम वैद्यजी तंत्र-मंत्र और भूतों-प्रेतों पर यकीन करते थे। मगर इस तरह की अफ़वाहों को वे सच नहीं मानते थे। वे जानते थे कि दुर्जन व्यक्ति भले ही तंत्र-मंत्र से अपनी कितनी ही क्षमता बढ़ा ले, लेकिन एक न एक दिन वह सज्जन

और दूसरों का भला करनेवाले व्यक्ति के हाथों मारा ही जाता है।

तभी से राम वैद्यजी तरह-तरह के उपाय करने लगे थे। हाबू को राम वैद्यजी के इन सब उपायों की जानकारी नहीं थी। जानकारी होती तो वह बग़ैर हमला किये छोड़ता नहीं।

निशि दारोग़ा के रिटायर होने के बाद उनकी जगह पर एक बड़ा रोबीला नौजवान दारोगा आया। उसका नाम अयस्कान्त था। अपने काम में उसका कोई जवाब नहीं था।

उस क़स्बे में पैर रखते ही उसे हाबू गुंडे के बारे में पता चल गया था। हाबू ने हाल ही में हरिहरपुर के ज़मींदार की कोठी लूटी थी। इसके अलावा एक बैंक डकैती और दो बड़ी चोरियाँ भी की थीं। इसके साथ ही हत्या और मारपीट की वारदातें तो थीं ही। लेकिन आतंक के मारे कभी कोई भी उसके ख़िलाफ़ शिकायत करने नहीं जाता था।

मज़े की बात यह थी कि हाबू बदनाम होने के बदले चर्चित ही हो रहा था। उसकी अलौकिक क्षमता, उसका पराक्रम और उसके नाम से प्रचलित तरह-तरह की बातें सुनकर काफ़ी लोग मन-ही-मन उसे पूजने लगे थे। छोटे-छोटे बच्चे भी आपस में 'हाबू-हाबू' खेलते। थोड़ी बड़ी उम्र के लड़के हाबू के दल में शामिल होने के लिए काफ़ी तादाद में गोसाईं बागान के आसपास चक्कर काटते रहते।

राम वैद्यजी और उनके जैसे और भी जो भले और ईमानदार लोग थे, उन्होंने इस भयानक ख़तरे को महसूस किया कि अगर इस वक़्त हाबू को नहीं रोका गया तो पुलिस भी आगे चलकर उसे पकड़ने की हिम्मत नहीं कर पायेगी। फिर तो अधर्म की ही जीत होगी। हाबू का घमंड और उसकी बेअदबी इधर बढ़ भी काफ़ी गयी थी। उसकी चाल में किसी राजा-महाराज जैसी ही अकड़ रहती। राह चलने वाले उसे देखते ही एक तरफ़ हट जाते। बाज़ार-हाट में लोग उसे नमस्कार करते। किसी को उससे बात करने का मौक़ा मिलता तो वह धन्य हो जाता।

अयस्कान्त भी बड़ा घमंडी था। वह जानता था कि कस्बे में दारोग़ा से बड़ा कोई अधिकारी नहीं होता। सब-के-सब हमेशा दारोग़ा की ही ख़ातिर करते आये हैं। इसलिए हाबू का ऐसा सम्मान भला अयस्कान्त को क्यों अच्छा लगता। इन बातों से उसके अहं को चोट पहुँची।

अयस्कान्त जब हाबू को मज़ा चखाने के लिए तरह-तरह की चालें चलने की योजना बना रहा था, अचानक एक चौंकानेवाली घटना घट गयी।

उस दिन अयस्कान्त अपने क्वार्टर के बरामदे में अकेले बैठकर पूर्णिमा की चाँदनी का आनंद ले रहा था। ऐसे समय सड़क से एक धारियों वाला विशाल शेर चहलकदमी करते-करते फाटक से होता हुआ सीधा अंदर चला आया। उस शेर की पीठ पर हाबू बैठा हुआ था।

हालाँकि अयस्कान्त बड़ा साहसी था, लेकिन उस दृश्य को देखकर उसकी भी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गयी।

दुर्गन्ध का झोंका छोड़ते हुए हाबू के शेर ने पहले अपने गंदे मुँह से अयस्कान्त को सूँघा, उसका गाल चाटा, अगर फिर गुर्राते हुए प्यार करने लगा।

हाबू ने अयस्कान्त से कहा, ''देखो, दारोग़ा बाबू, अगर मुझसे टकराना चाहते हो तो जान हथेली पर रखकर आना पड़ेगा। अभी तो तुमने सिर्फ़ शेर ही देखा है, मेरे हाथी को नहीं देखा। इसके अलावा और भी भयंकर जीव मेरे पास हैं। सभी भूत-पिशाच एक-दूसरे से बढ़कर हैं। यहाँ नौकरी करने आये हो तो चुपचाप आँख मूँदकर नौकरी करते रहो। हर महीने वेतन लो, खाओ-पियो, मौज़ करो। कोई कुछ नहीं कहेगा। लेकिन अगर अपनी बहादुरी दिखाने आओगे तो फिर अपने अंजाम के लिए भी तैयार रहना।''

उस भरपूर चाँदनी में शेर की धारियाँ साफ़ नज़र आ रही थीं। उसकी दुर्गन्ध भी वहाँ बस गयी थी। उसकी गर्म-गर्म साँसें अयस्कान्त के बदन पर पड़ रही थीं। इस पूरी घटना को अयस्कान्त ने अपनी आँखों से देखा और खुद छूकर महसूस भी किया। इसमें संदेह की कोई बात ही नहीं थी।

अयस्कान्त ने कुछ कहना चाहा लेकिन गले से आवाज़ नहीं निकली। अपने हाथ-पैरों को हिलाना-डुलाना चाहा पर उसमें भी नाकामयाब रहा।

हाबू ने मुस्कराकर अपने शेर को वहाँ से हटाते हुए कहा, ''चाहे मुझे इस पूरे क्षेत्र का राजा कहो या सरदार समझो या भगवान। सभी मुझे यहाँ सिर झुकाकर चलते हैं। तुम भी ऐसा ही करना।''

उसी रात अयस्कान्त पागलों की तरह भागता हुआ राम वैद्यजी के पास हाज़िर हुआ। उसने कहा, ''वैद्यजी, हाबू हाड़-मांस का आदमी नहीं है।''

सारी बातें सुनकर राम वैद्यजी अपना दिमाग़ ठंडा रखकर विचार करने लगे। इसके बाद एक अत्यन्त बलबर्द्धक काढ़ा अयस्कान्त को पिलाकर बोले, ''तुम घड़ी भर दम तो ले लो, फिर बाद में बाक़ी बातें करेंगे।''

राम वैद्यजी ऐसा चमत्कारी काढ़ा तैयार कर सकते थे जिन्हें लोग पी लें तो

उनका कायाकल्प हो जाए। राम वैद्यजी का ऐसा ही एक काढ़ा पीकर अयस्कान्त का बावलापन घंटे भर बाद ठीक हो गया। इसके बावजूद वह एक ही रट लगाये रहा, "नहीं वैद्यजी, किसी चमत्कारी के साथ उलझना ठीक नहीं। कोई भी आदमी कितना दुष्ट और बदमाश क्यों न हो, उसे दुरुस्त करने से मैं ज़रा भी नहीं घबड़ाता, लेकिन हाबू तो ठीक हमारे जैसा इन्सान नहीं है।"

आख़िर वही हुआ। अयस्कान्त अपनी बदली करवाकर चला गया। उसकी जगह एक और रोब-दाब वाला दारोग़ा गदाधर आया।

गदाधर बड़ा हट्टा-कट्टा आदमी था। कभी नामी पहलवान भी रह चुका था। उसकी उम्र भी ज़्यादा नहीं थी। उसके पास एक बहुत बड़ा जर्मन नस्ल का शेफ़र्ड कुत्ता भी था।

गदाधर के आने से ही कस्बे के लोगों ने आपस में कहना शुरू किया, "हाबू के शेर के लिए एक नया बकरा आया है।" कस्बे के छोकरे गाने लगे—

'दारोग़ा गदाई, निकल जायेगी मोटाई!'

गदाधर के कानों में सारी बातें गयीं। हाबू के जलवे के बारे में उसने यहाँ आने से पहले ही काफ़ी कुछ सुन रखा था। कस्बे में आते ही उसने अपनी दारोग़ाई दिखाने की कोशिश नहीं की।

राम वैद्यजी के पास एक दिन देर रात को चुपके से आकर गदाई दारोग़ा ने कहा, "मैं आपसे उसके बारे में पूरी बात जानना चाहता हूँ।"

राम वैद्यजी ने गहरी साँस लेकर कहा, "जानकर करोगे भी क्या? कोई कुछ कर नहीं पायेगा। अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर काफ़ी लोग यहाँ से दूसरी जगह भाग रहे हैं।"

उन दिनों हाबू ने कस्बे में एक नया नियम लागू किया था। उसके शेर की खुराकी के लिए हर रोज़ किसी न किसी परिवार को बकरा, बकरी या कुत्ता भेंट चढ़ाना पड़ता था। शेरों को शायद कुत्तों का गोश्त अच्छा लगता है। इसलिए उस कस्बे के लगभग सभी आवारा कुत्ते ग़ायब हो चुके थे। साथ ही, यह भी सुनने में आ रहा था कि गोसाईं बागान में राज मिस्त्री लगाकर हाबू के लिए भव्य कोठी बनायी जा रही थी। मतलब हाबू के सितारे उस समय बुलंदी पर थे।

गदाई दारोग़ा ने कहा, "मैं यह बात नहीं कहता कि मैं बहुत लायक़ हूँ। मगर मैं सावधान रहनेवाला आदमी हूँ। सब कुछ समझ-बूझकर मुझसे जो बन पड़ेगा ज़रूर करूँगा। मुझे यहाँ ख़ास तौर पर भेजा गया है।"

राम वैद्यजी को बहुत भरोसा नहीं हुआ। फिर भी उन्होंने सारी बातें विस्तार से बतायीं। साथ ही सावधान भी कर दिया, "देखिए, यहाँ के सभी लोग हाबू के तरफ़दार हैं। इसलिए संकट में पड़ने पर कोई भी आपकी मदद के लिए आगे नहीं आयेगा।"

राम वैद्यजी समझ गये कि पहलवानी करते हुए भी गदाई की बुद्धि को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा था।

एक-दो दिन बीतते न बीतते ही हाबू गदाई दारोग़ा के पीछे पड़ गया। एक दिन सुबह पता चला कि दारोग़ा का बेहद प्यारा कुत्ता ग़ायब था। उसकी खोज शुरू हो गयी। आख़िरकार उसकी मख़मल जैसी मुलायम ख़ाल गोसाईं बागान के पास एक जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी मिली।

गदाई ने तीन दिनों तक ठीक से खाना नहीं खाया। ठीक से सोया भी नहीं।

कविराज राम ने उसके लिए भी एक असरदार काढ़ा तैयार करके भिजवा दिया।

गदाई दारोग़ा के कुत्ते को मारकर हाबू ने ग़लत चाल चल दी थी। वह कुत्ता गदाई को जान से भी प्यारा था। इस कुत्ते की मौत के बाद से गदाई दारोग़ा गदाई महाकाल बन गया।

हालाँकि यह बात कइयों को पता भी थी कि गदाई के उस हमलावर मिज़ाज़ के पीछे वैद्यजी के उस चमत्कारी काढ़े का भी कमाल था। राम वैद्यजी ने दुर्लभ जड़ी-बूटियों से एक ऐसा काढ़ा तैयार करके गदाधर को सेवन करवाया था जिसके असर से आदमी के शरीर में सिर्फ़ दुगुनी ताक़त ही नहीं आती थी बल्कि उसका स्वभाव भी उतना ही आक्रामक हो जाता था। मगर सिर्फ़ ताक़तवर और आक्रामक बनने से भी काम नहीं चलता, साथ में ठंडे दिमाग़ से कूट चालों में भी माहिर होने की ज़रूरत थी, अन्यथा हाबू जैसे धुरंधर पर काबू पाना आसान नहीं था। इसलिए वैद्यजी ने उस काढ़े में ऐसी चीज़ें मिला दी थीं जिससे दिमाग़ संतुलित रहे और सोचने-विचारने की क्षमता भी बनी रहे।

अचानक एक दिन ऐसी घटना घटी जिसके बारे में ठीक से किसी को पता नहीं था। हाबू का शेर कहीं लापता हो गया था। चारों तरफ़ उसकी खोज होने लगी। आख़िरकार एक दिन थाने के अहाते में लोगों ने देखा कि गदाई दारोग़ा के क्वार्टर के बगीचे की बाड़ पर उस शेर की ख़ाल धूप में सूख रही थी।

इस घटना से क़स्बे में उत्तेजना फैल गयी। सभी ने समझ लिया कि जब

हाबू का शेर मारा गया है तब गदाई भी बेमौत मारा जायेगा। जल्दी ही हाबू उसका सिर काटकर उसकी गेंद बनाकर खेलेगा।

शेर के ग़ायब होने के वक़्त हाबू कस्बे में नहीं था। वह बाहर कहीं लूटपाट करने या डकैती डालने गया हुआ था। लौटकर सब कुछ सुनने के बाद वह दो दिनों तक गुमसुम पड़ा रहा।

उसके बाद एक दिन सीधे गदाई के क्वार्टर में पहुँचकर उसने गदाई से पूछा, "अच्छा तुम्हारी मौत पर कौन-कौन रोनेवाला है, ज़रा यह तो बताओ ?"

गदाई ने बड़ी नम्रता से कहा, "कोई नहीं रोयेगा, क्योंकि मैं मरनेवाला नहीं हूँ।"

"अच्छा !" कहकर हाबू कुछ चकित होकर उसकी ओर देखते हुए बोला, "क्यों नहीं मरोगे भला ! क्या तुम्हारे पास भी कर्ण की तरह कोई कवच-कुंडल है ?"

"मेरे पास तो नहीं है, लेकिन मैंने सुना है आपके पास है। लोग कहते हैं कि आप तरह-तरह के जादू जानते हैं।"

हाबू ने एक गहरी साँस लेकर कहा, "मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा था। अगर कोई नाते-रिश्तेदार हो तो छुट्टी लेकर एक बार उनसे मिल आओ। आख़िरी बार !"

"इसकी ज़रूरत नहीं है।"

हाबू ने हँसते हुए कहा, "दारोग़ा, तुम बहुत उड़ने लगे हो। ख़ैर इसे छोड़ो। यह बताओ, उस शेर को तुमने किस तरह से मारा ?"

गदाई ने जँभाई लेते हुए कहा, "शेर मैंने बहुत मारे हैं। मगर आपके शेर को मैंने ही मारा है, यह आपसे किसने कहा ?"

"तुमने नहीं मारा ?"

"यह नहीं कहता। सिर्फ़ पूछता हूँ, मैंने ही मारा है, इसका क्या सबूत है ?"

"तब क्या यह बताना चाहते हो कि मेरा शेर जंगल में भाग गया और जाते समय तुमको प्यार से अपनी ख़ाल उतारकर दे गया।"

गदाई ने उदासीनता से कहा, "यह भी हो सकता है।"

हाबू ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "तो फिर ठीक है। मैं अपने उस बिना ख़ाल वाले शेर को दुबारा जंगल से पकड़ कर लाऊँगा और फिर तुम्हारी देह की चिकनी ख़ाल उतारकर उसे पहना दूँगा। तैयार रहना।"

कस्बे के सभी लोग इस पर यकीन करते थे कि हाबू जो कहता है वही करता भी है । इसीलिए सभी लोग गदाई दारोग़ा की ख़ाल मढ़े हुए शेर को देखने के लिए बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करने लगे ।

एक रात को अचानक लोगों ने एक भयानक घनगरज सुनी–घैऽड़ाऽम ! उस आवाज़ से धरती काँप गयी, घर के दरवाज़े-खिड़कियों के पल्ले हिल उठे और लोगों का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा । शेर की ऐसी भयानक दहाड़ इससे पहले किसी ने सुनी नहीं थी । तब क्या सचमुच ही हाबू का बिना ख़ाल का शेर वापस लौट आया ?

उधर गोसाईं बागान के खंडहर में हाबू और उसके साथी चौंककर उठ बैठे । सभी कान खड़ा करके सुनने लगे । उन्हें लगा, कहीं नजदीक से ही वह दहाड़ आयी थी ।

रात के प्रथम प्रहर में शेर की बस वही एक बार दहाड़ने की आवाज़ आयी थी ।

इसके बाद फिर एक रात को उसके दहाड़ने की आवाज़ आयी । हाबू उस दिन मयनागुड़ी के तम्बाकू के व्यवसायी घनश्याम बाजोरिया की गद्दी में चिट्ठी भिजवा आया था कि गोसाईं बागान के इमली के पेड़ के नीचे ठीक रात बारह बजे सौ मुहरें और नक़द बीस हज़ार रुपये पहुँचा दे । ऐसे मामलों में कभी कोई इनकार नहीं करता था । बहुत-से लोग तो अपनी खुशी से हाबू की इच्छा पूरी कर देते थे । कुछ लोग तो यह भी सोचते थे कि हाबू को कुछ देने से पुण्य ही होता है । मगर ऐसा सोचनेवालों में घनश्याम जी नहीं थे । सौ मुहरें और बीस हज़ार रुपये मामूली रक़म नहीं होती । मगर कोई चारा न था । रात बारह के क़रीब वे एक पुरानी गाड़ी में सवार होकर अपने ड्राइवर और नौकर के साथ इमली के पेड़ के नीचे पहुँचकर अंधेरे में इंतज़ार करने लगे । मच्छरों के उत्पात और कड़ाके की ठंड में वे डर से काँपते हुए वहाँ पर खड़े थे ।

रात के बारह बजकर पाँच मिनट पर उस घने अँधेरे से एक काली मूर्ति बाहर निकल आयी । घनश्यामजी ने काँपते हुए हाथों से उसके हाथों में मुहरों और रुपयों की थैली थमा दी । ठीक उसी वक्त कहीं नज़दीक से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आयी— घै ऽ ड़ा ऽ म !

घनश्यामजी बेहोश हो गये । ड्राइवर और नौकर दोनों ही भाग खड़े हुए ।

उस अँधेरे में हाबू आश्चर्यचकित होकर खड़ा रहा। वह किसी से डरनेवाला आदमी नहीं था, साथ ही उसमें कई तरह की खूबियाँ भी थीं। मगर एकदम नज़दीक से ऐसी दिल को दहलानेवाली आवाज़ सुनकर वह भी कुछ क्षण के लिए अकचकाकर खड़ा रह गया।

इसके बाद उसने टार्च जलाकर हैरत से देखा कि एक झाड़ी की आड़ से किसी लम्बे-चौड़े शेर की धारियाँ नज़र आ रही थीं। हैरानी की बात यह भी थी कि उस शेर की पीठ पर एक आदमी भी बैठा हुआ था। वह और कोई नहीं गदाधर दारोग़ा था।

ठीक उसी वक़्त वह शेर एक बार और दहाड़ा। बेवकूफ़ों की तरह मुँह बाये खड़े हाबू के हाथ से टार्च छूटकर ज़मीन पर जा गिरी। उस अँधेरे में शेर पर सवार गदाधर किधर ग़ायब हो गया, हाबू समझ नहीं पाया।

इस घटना के बाद से हाबू का आतंक कुछ कम हो गया। कुछ दिनों तक वह पहले की तरह सीना ताने बाहर नहीं निकला। उस रात की घटना के दो दिनों के बाद वह सुबह-सुबह गदाई के निवास पर पहुँचकर बोला, "देख रहा हूँ, सारा नियम-क़ानून तुमने भी सीख लिया है।"

गदाई ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "यह सब आपने ही सिखाया है।"

हाबू ने कुछ नहीं कहा। सिर्फ़ 'अच्छा देखा जायेगा' जैसा कुछ अस्पष्ट कहकर वहाँ से खिसक गया। उसने अब गदाई दारोग़ा की खाल उतारने की चर्चा करनी बंद कर दी थी।

राम वैद्यजी से मिलने गदाई लगभग हर रोज़ ही दवाख़ाने जा पहुँचता। वैद्यजी उसे नियमपूर्वक कई तरह की जड़ी-बूटियों से बना तरह-तरह का काढ़ा पिलाते थे। उससे गदाई की ताक़त बढ़ती थी, बुद्धि बढ़ती थी, दिमाग़ ठंडा रहता था, मन में साहस बना रहता था।

एक दिन राम वैद्यजी कह ही बैठे, "समझे भैया गदाई, लगता है हाबू इस बार यह जगह छोड़कर कहीं खिसकने की कोशिश में है। अगर वह हाथ से निकल जायेगा तो फिर तुम उसे सज़ा नहीं दे पाओगे। अब तुम अपना ज़ोरदार दाँव चला ही दो।"

यह बात झूठ भी नहीं थी। कई दिनों से हाबू को लग रहा था कि यहाँ से वह अब काफ़ी कमाई कर चुका है। इसके अलावा गदाई दारोग़ा भी कोई मामूली आदमी नहीं था। इसके पहले के सभी दारोग़ा जिस तरह उसे डरते थे, यह वैसा

नहीं था। यहाँ से किसी दूसरी जगह जाने पर धंधा भी बढ़ेगा और चिंता भी कम होगी। ऐसा सोचकर उसने अपने साथियों को तैयार रहने का हुक्म दिया। कहा, "यह जगह बहुत गरम और बंजर हो गयी है। तुम सब तैयार रहना। कभी भी अचानक गठरी बाँधनी पड़ सकती है।"

वहाँ से खिसकने के पहले हाबू ने सबसे मोटा दाँव मारने के लालच में सत्रह चाय बागानों के मालिक टॉमसन साहब के छोटे बच्चे का अपहरण करके उसे छिपा दिया। साहब को उसने एक चिट्ठी भिजवायी— "अगली अमावस की रात अपने बँगले के पिछवाड़े वाले बगीचे के गुड़हल के पेड़ के नीचे एक पत्थर से एक लाख रुपये दबाकर रख दीजियेगा, नहीं तो सुबह होने से पहले ही माँ काली के सामने आपके बच्चे की बलि चढ़ा दी जायेगी।"

साहब लोग इतनी जल्दी हार नहीं मानते थे। लेकिन टॉमसन साहब की बात अलग थी। अभी साल भर पहले ही उनकी पत्नी की मृत्यु हुई थी। माँ से बिछड़े अपने तीनों बच्चों से वह बहुत प्यार करते थे। इसलिए बेटे के अपहरण हो जाने के बाद वे गुस्से से आगबबूला होने के बावजूद कोई कड़ा क़दम नहीं उठा पाये।

असली बात क्या हुई थी इसे ठीक-ठीक कोई जानता। टॉमसन साहब के बगीचे के गुड़हल के पेड़ के नीचे एक लाख रुपये रख दिये थे। वक़्त पर हाबू का कोई साथी आकर उन रुपयों को ले गया था।

मगर लोग एक दूसरी कहानी भी सुनाते हैं। उनके अनुसार, हाबू का साथी आया ज़रूर था लेकिन वह लौटकर वापस नहीं जा पाया था। गदाई उसके हाथ-पैर बाँधकर उसे हवालात में भिजवाने के बाद उसकी वेश-भूषा में खुद हाबू के अड्डे पर पहुँच गया था।

इसके बाद बड़ी हायतोबा मची थी। रह-रहकर शेर की दहाड़, गोलियों की गूँज और चीख़-पुकार सुनकर सभी जाग गये थे।

दूसरे दिन ख़बर फैल गयी कि हाबू माल समेत पकड़ा गया। पकड़े जाने से पहले गदाई से उसकी ज़बरदस्त लड़ाई हुई थी। शायद कोई और वक़्त होता तो उसने गदाई को गदा की तरह घुमाकर फेंक दिया होता, लेकिन राम वैद्यजी का काढ़ा नियमित लेने के बाद फिर गदाई के सामने टिकने की भला किसमें हिम्मत थी!

# 5

करालीसर के गणित की कक्षा थी। उनके विद्यार्थी अब अंक गणित को अंक गणित नहीं कहते थे, कहते थे 'भयांक' गणित। भय और अंक गणित की संधि करके लड़कों ने यह नया शब्द गढ़ लिया था।

ख़ैर वह भयंकर तो था ही। कक्षा में गणित के जो सवाल हल करने पड़ते वह तो थे ही, इसके अलावा कराली बाबू अपने छात्रों को गणित में पक्का करने के लिए दूसरी किताबों के भी गणित के सवाल हल करवाते थे।

उस दिन कराली बाबू कक्षा में आकर बहुत खुश होकर बोले, "माई लिटिल फ्रेंड्स! आज भोर के सपने में मैंने एक गणित का सवाल हल किया था। बड़ा मज़ेदार सवाल है।"

सभी लड़के चौकन्ने हो गये। कराली बाबू को सपने में भी गणित के नये-नये सवाल मिलते थे। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं थी। इसके पहले भी उन्हें कई बार सपने में सवाल मिले थे। मगर कराली बाबू के लिए जो सपने सुखद होते थे, उनके छात्रों के लिए बड़े दुःखदायी होते थे।

कराली बाबू ने कहा, "पता है, सपने में मैंने देखा कि मैं एक जूते की दुकान में नौकरी कर रहा हूँ।"

बुरुन कक्षा में सबसे पीछे बैठा हुआ था। इन दिनों वह वहीं बैठता था। गणित में फेल हो जाने के बाद से अच्छे लड़कों के साथ आगे में उसे शर्म आती थी। उस पिछली बेंच पर उसके अलावा सिर्फ़ फटिक ही वहाँ पर बैठा हुआ था। कराली बाबू की बात सुनकर फटिक बड़बड़ाते हुए बोला, "काश, ऐसा होता तो जान बच जाती।"

बुरुन ने कोई जवाब नहीं दिया। इन दिनों वह हमेशा चुप ही रहता था। कराली सर ने हँसते हुआ कहा, "समझ गये न तुम लोग! मैं एक जूते की दुकान में नौकरी कर रहा था। मुझे भी अच्छा ही लग रहा था। दुकान के मालिक बड़े सीधे-सादे थे। सवाल वग़ैरह उनकी समझ में नहीं आता था। नफ़ा-नुक़सान या लेन-देन में कोई गड़बड़ी पाते ही वे मुझसे कहते, 'कराली बाबू ज़रा इस हिसाब को ठीक कर दीजिए।' ख़ैर मुझे भी अपना काम अच्छा ही लग रहा था। ग्राहकों के आने पर उनके नाप के जूते निकालकर उन्हें पहनाता। उनकी पसंद का जूता

उन्हें फिट आ रहा है यह नहीं, इसे देखता। बीच-बीच में मुँहज़बानी हिसाब लगाकर मालिक को बता भी देता। काफ़ी मज़ा आ रहा था।

"एक दिन एक ग्राहक आया। उसने एक जोड़ा जूता पसंद किया। मोल-भाव करके दाम तय हुए बीस रुपये। ग्राहक ने दुकान के मालिक को सौ रुपये का नोट दिया। उनके कैश बॉक्स में उस वक़्त उतने फुटकर नहीं थे इसलिए दुकान के मालिक ने मुझे नोट देकर कहा, 'कराली बाबू, ज़रा इसे बगल की दुकान से जाकर तुड़वा लाइए।'...... लिटिल फ्रेंड्स। तुम लोग ध्यान से इस लेन-देन पर ग़ौर करो।...... ठीक है, फिर मैंने उस सौ रुपये के नोट को बगल की दुकान से तुड़वाकर अपने मालिक को लौटा दिया। मालिक ने उसमें से बीस रुपये लेकर बाकी अस्सी रुपये ग्राहक को लौटा दिये। ग्राहक जूतों का डिब्बा लेकर चला गया। इसके कुछ देर बाद ही बगल के दुकानदार ने आकर मेरे मालिक को सौ रुपये के नोट को लौटाते हुए कहा, 'यह नोट जाली है। इसे बदल दीजिए।' मेरे मालिक ने उस नोट को अपनी आँखों के पास लाकर अच्छी तरह से घुमा-फिराकर देखा। वह नोट सचमुच जाली था। उस ग्राहक ने जाली नोट देकर ठग लिया था। मेरे मालिक ने अपने कैश बाक्स से ढूँढ़-ढाँढ़कर सौ रुपये का फुटकर निकालकर उस दुकानदार को दे दिया। दुकानदार अपने रुपये लेकर चला गया। इसके बाद मेरे मालिक अपने नुक़सान का हिसाब काफ़ी देर तक लगाते रहे। अपने मालिक बड़े सीधे-सादे आदमी थे, हिसाब में बेहद कच्चे इसलिए लाख कोशिशों के बावजूद सही हिसाब उनकी समझ में नहीं आया। एक बार तो वे घबड़ाकर चीख़ ही पड़े, 'मुझे दो सौ रुपयों का चूना लग गया।"

मैंने पूछा, "किस तरह ?"

वे बोले, "ग्राहक को मैंने अस्सी रुपये दिये, पड़ोस के दुकानदार को सौ, और एक जोड़ी जूते का दाम। कुल दो सौ रुपये हुए कि नहीं।" फिर बोले, 'नहीं नहीं, नुक़सान सिर्फ़ अस्सी रुपयों का ही हुआ है।...... अरे नहीं नहीं ...... सौ रुपये और बीस रुपये के जूते, कुल एक सौ रुपये बट्टे खाते चले गये।'...... फिर कुछ सोचकर बोले, 'अरे, नहीं, एक जोड़ा जूते के अलावा मुझे कोई नुक़सान नहीं हुआ।' मगर कुछ देर बाद उन्हें लगा, नहीं यह हिसाब भी ग़लत है। दुकानदार को सौ रुपये तो देने ही पड़े।' ......

"ख़ैर, आख़िरकार उन्होंने मेरी ओर बड़ी हताशा से देखकर कहा, 'कराली बाबू, ज़रा हिसाब लगाकर बताइए, मुझे कितना नुक़सान हुआ है ?'...... माई

फ्रेंड्स ! आज का यह पहला सवाल है। वेरी सिम्पल अर्थमेटिक ! कहा जाय तो यह दूसरी कक्षा का सवाल है। आईने की तरह । तीन मिनट का समय देता हूँ। फटाफट हल करो ।"

सभी अपनी कापियाँ निकालकर फटाफट सवाल हल करने में जुट गये।

बुरुन ने भी हल किया। ज़्यादा समय नहीं लगा। यही कोई डेढ़ मिनट। वह अपनी कापी लेकर कराली सर के पास जाने के लिए उठ ही रहा था कि तभी उसके कान में किसी ने फुसफुसाकर कहा, "ओह ! यह सवाल एकदम ग़लत बनाया है तुमने । क्या अब कराली बाबू के डस्टर से मार खाने का इरादा है ?"

बुरुन ने पहले समझा कि यह फटिक की आवाज़ थी। लेकिन उसकी ओर देखा तो पाया फटिक बेंच के दूसरे सिरे पर बैठा एक जासूसी किताब छिपाकर पढ़ रहा था ।

तब उससे यह बात किसने कही थी ?

उसके कानों के पास कोई फिक्क़ से हँसते हुए बोला, "डर गये ?"

बुरुन ने तुरंत गंभीर होकर दबे गले से कहा, "मैं किसी से नहीं डरता ।"

उस आवाज़ ने बहुत हताश होकर कहा, "तुम भी बड़े अजीब हे। खैर छोड़ो, किया ही क्या जा सकता है ! चलो तुम्हारा एक भला हीं करता जाऊँ। मुझे अपनी कापी दो। मैं सवाल हल कर देता हूँ ।"

बुरुन ने कुछ झिझकते हुए कहा, "कापी दूँगा तो कराली बाबू की नज़र पड़ जायेगी ।"

"तब तुम कापी खोलकर पेंसिल पकड़े रहो, मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर इसे हल किये दे रहा हूँ ।"

ऐसा ही हुआ। दस सेकेंड में उस सवाल का हल करके अदृश्य निधिराम ने उसे ठेलते हुए कहा, "जाओ, तुम्हीं सबसे पहले इसे जाकर दिखा आओ ।"

(सवाल का जवाब यहाँ नहीं दे रहा हूँ। इस क़िताब को पढ़नेवाले खुद ही हल करें ।)

बुरुन ने जाकर कराली बाबू को कापी दिखायी। उसे देखते ही उन्होंने उसकी पीठ ठोंककर कहा, "शाबाश !"

और भी कई लड़कों ने तीन मिनट के अंदर उस सवाल को हल कर लिया था। कराली सर ने उन सभी की पीठ ठोंकी। कराली बाबू ऐसे ही आदमी थे। बहुत आसान सवाल भी कोई हल कर लेता तो वे बहुत खुश हो जाते थे ।

दूसरा सवाल थोड़ा कठिन था। एक अनोखी गाड़ी के चारों पहिये चार तरह के थे। एक की गोलाई तीन फुट तीन इंच, दूसरे की तीन फुट आठ इंच, तीसरे की चार फुट दो इंच, चौथे की गोलाई दो फुट ग्यारह इंच थी। सवाल यह था कि यह विचित्र गाड़ी अगर पाँच मील की दूरी तय करे तो इन चारों पहियों में से हर पहिये ने कितनी बार पूरा तथा उससे कितना कम चक्कर लगाया। कराली बाबू ने इसे हल करने के लिये दस मिनट का समय दिया।

सभी इस सवाल को लगाने में व्यस्त हो गये। लेकिन बुरुन को कोई चिन्ता नहीं थी। उस सवाल को कापी में लिखने के साथ ही निधिराम ने उसका हाथ पकड़कर बीस सेकेंड में हिसाब हल कर देने के बाद बुरुन को ठेलते हुए कहा, "जाओ, दिखा आओ।"

बुरुन को कापी लेकर अपनी तरफ़ आते देखकर कराली सर चौंक गये। कापी देखकर उन्हें और भी ताज्जुब हुआ। कहा, "यह सवाल तुम्हारा पहले से हल किया हुआ था ?"

"नहीं सर ! अभी-अभी हल किया है।"

"बहुत खूब ! तब कहना पड़ेगा कि तुम स्वर्णपदक के हक़दार होगे।"

इसके बाद वाला सवाल एक हौज़ में पानी के भरने और उसे ख़ाली करने को लेकर था। इसे हल करने में बुरुन को लगभग तेरह सेकेंड लगे। कराली बाबू ने उस पर सही का निशान लगाते हुए कहा, "तुम्हें वार्षिक परीक्षा में कितने अंक मिले थे ? शायद बारह या तेरह, ऐसा ही कुछ था। लगता है तुम्हारी वह कापी मुझे एकबार फिर से जाँचनी पड़ेगी।"

कराली सर के बाद अवनी बाबू की अनुवाद की कक्षा थी। उन्होंने अंग्रेज़ी में अनुवाद करने के लिए कुछ वाक्य दिये—बेर खाकर रमेन के दाँत खट्टे हो गये।...... भवानी पाठक कोई सीधे आदमी नहीं हैं, अच्छे के लिए अच्छे और बुरे के लिये यमदूत हैं। ......यह वही जनस्थान मध्यवर्ती प्रस्रवण गिरि है जिसके शिखर पर सतत संचरणमान जलधर-पटल के कारण निरंतर निविड़ नीलिमा समाच्छन्न हो रही है...... इत्यादि।

सभी लड़के सिर पकड़कर बैठे थे।

ठीक चालीस सेकेंड के बाद निधिराम ने बुरुन से कहा, "जाओ, इसे दिखा आओ।"

बुरुन गया। अवनी बाबू कॉपी देखकर सिर खुजाते हुए बोले, "अंग्रेज़ी

में तुम बुरे नहीं हो, लेकिन किसी छात्र की लिखी ऐसी बढ़िया अंग्रेज़ी मुझे काफ़ी अर्से से देखने को नहीं मिली है। बहुत खूब! ऐसी ही मेहनत करते रहोगे तो तुम्हें स्कालॅरशिप ज़रूर मिलेगी।''

बुरुन शर्माकर अपनी गर्दन झुकाये खड़ा रहा। साल की अभी शुरूआत थी। सभी कक्षाएँ अभी शुरू नहीं हुई थीं। पाँचवीं घंटी के बाद छुट्टी हो गयी। गेम सर ने खेलने के लिए क्रिकेट के दो सेट निकाल दिए।

स्कूल के पास के बड़े मैदान में बड़े ज़ोर-शोर से क्रिकेट का मैच शुरू हुआ। मैदान के एक तरफ़ जूनियर कक्षा के लड़के आपस में टीम बनाकर खेल रहे थे। दूसरी टीम बड़ी विचित्र थी। इसमें फेल होनेवाले छात्रों के साथ पास होनेवाले छात्रों का मैच था। गेम सर ने टीम का चुनाव कर दिया था।

बुरुन गणित में फेल होने के बावजूद प्रोन्नति या प्रमोशन, पा गया था। इसीलिए वह पास होनेवालों की टीम में था। लेकिन पास होनेवाले अच्छे लड़के खेलकूद में फिसड्डी थे। दूसरी तरफ़ फेल होनेवाले सभी लड़के ज़बरदस्त खिलाड़ी थे। उनकी जैसी ज़ोरदार बैटिंग थी, वैसी ही ख़तरनाक बॉलिंग भी। वे लोग दौड़-भागकर, छलाँग लगाकर, लेटकर बढ़िया क्षेत्र-रक्षण भी कर लेते थे। इसलिए उस दिन खेल के मैदान में पास होनेवाले लड़कों की हालत ख़राब थी।

टॉस जीतने के बाद पास होने वाली टीम ने बल्लेबाज़ी करने का फ़ैसला किया। पहले ओवर में ही दो खिलाड़ी चोट खाकर लँगड़ाते हुए मैदान से बाहर निकल आये। दो लड़के बोल्ड आउट हो गये। दूसरे ओवर में एक और आउट हो गया। मगर उसने तीन रन बना लिये थे। तीसरे ओवर में एक के बाद एक कुल दो खिलाड़ी कैच आउट हो गये। एक खिलाड़ी ने घबड़ाकर खेलने से मना कर दिया।

बुरुन की बल्लेबाज़ी बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन गेंद ठीक-ठाक ही फेंकता था। लेकिन आठ लोगों के धड़ाधड़ आउट हो जाने के कारण उसे बल्लेबाज़ी के लिए मैदान में उतरना ही पड़ा।

जब बुरुन बल्लेबाज़ी के लिए आ रहा था तब उसके कानों में वही फुसफुसाहट हुई, ''डरने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूँ।''

बुरुन ने गम्भीरता से कहा, ''हूँ।''

''सेंचुरी बनवा दूँगा। लेकिन मुन्ना याद रखना, तुम्हें मेरी इज्ज़त रखनी पड़ेगी।''

"देखी जायेगी ।"

बुरुन ने बल्ला पकड़कर क्रीज़ में खड़े होकर अपने चारों तरफ़ देखा । फेल होने वाले शरारती लड़के उसे देखकर हँस रहे थे । तेज़ बॉलर भुतुम ने उससे कहा, "अब किसी तरफ़ भी देखने की ज़रूरत नहीं है । बस, जिस रास्ते से आया है उसी रास्ते को अच्छी तरह से देख ले । अभी उसी से वापस लौटना पड़ेगा ।'

भुतुम की एक ज़ोरदार गेंद आयी । बुरुन को कुछ नहीं करना पड़ा । बल्ले को किसी ने उसकी ओर से खेल दिया था । वह गेंद जेट प्लेन की रफ़्तार से जाकर स्कूल की दोमंज़िली छत पर गिरी । छक्का !

धुप्पल में गेंद लगने की बात सोचकर वहाँ खड़े लड़कों ने ज़्यादा उत्साह नहीं दिखाया ।

लेकिन दूसरी गेंद भी उतनी ही तेज़ी से जाकर एक विशाल शिरीष के पेड़ पर लगे एक घोंसले को तोड़ती हुई नीचे गिरी । इस बार भी छक्का !

इस बार छिटपुट तालियाँ बजीं । बुरुन की टीम का कैप्टन अनिरुद्ध अपने पैर की चोट को सहलाते-सहलाते मैदान के बाहर से चिल्लाया, "ऐसे ही डटा रह बुरुन !"

बुरुन डटा रहा । उसने तीसरी गेंद पर ऐसी चोट की कि वह गेंद जाकर स्कूल के बग़ल में पंडितजी के घर के नारियल के पेड़ की फुनगी पर लगे एक सूखे नारियल को तोड़ती हुई नीचे गिरी । पंडित जी की बूढ़ी बुआ बाहर निकलकर शोर मचाने लगी, "कौन है यह शैतान लड़का जो भरी दोपहरी में पेड़ पर पत्थर फेंककर नारियल तोड़ रहा है ? ठहर ज़रा, हरि से कहकर तुझे तीन घंटे तक मुर्गा बनवाने की सज़ा दिलवाती हूँ ।"

पंडित जी का नाम हरिप्रसाद था । वे ज़रा-ज़रा सी बात पर छात्रों को मुर्गा बना देते थे ।

पंडित जी की बुआ एक हाथ से नारियल और दूसरे हाथ से गेंद को उठाकर चिल्लाते हुए बोली, "यह देखो, नारियल के साथ एक बेल भी यहाँ पड़ा मिला । मगर मेरे घर में बेल का पेड़ तो नहीं है । फिर यह बेल कहाँ से आया ?"

हरि सर की बुआ के हाथ से गेंद पाना इतना आसान नहीं था । मुर्गा बनने के डर से कोई आगे बढ़ने का साहस ही नहीं कर रहा था । खेल बंद होने की नौबत आ गयी थी ।

बुरुन ने फुसफुसाकर कहा, "ओ निधिराम ! ज़रा जाकर गेंद तो ले आओ ।"

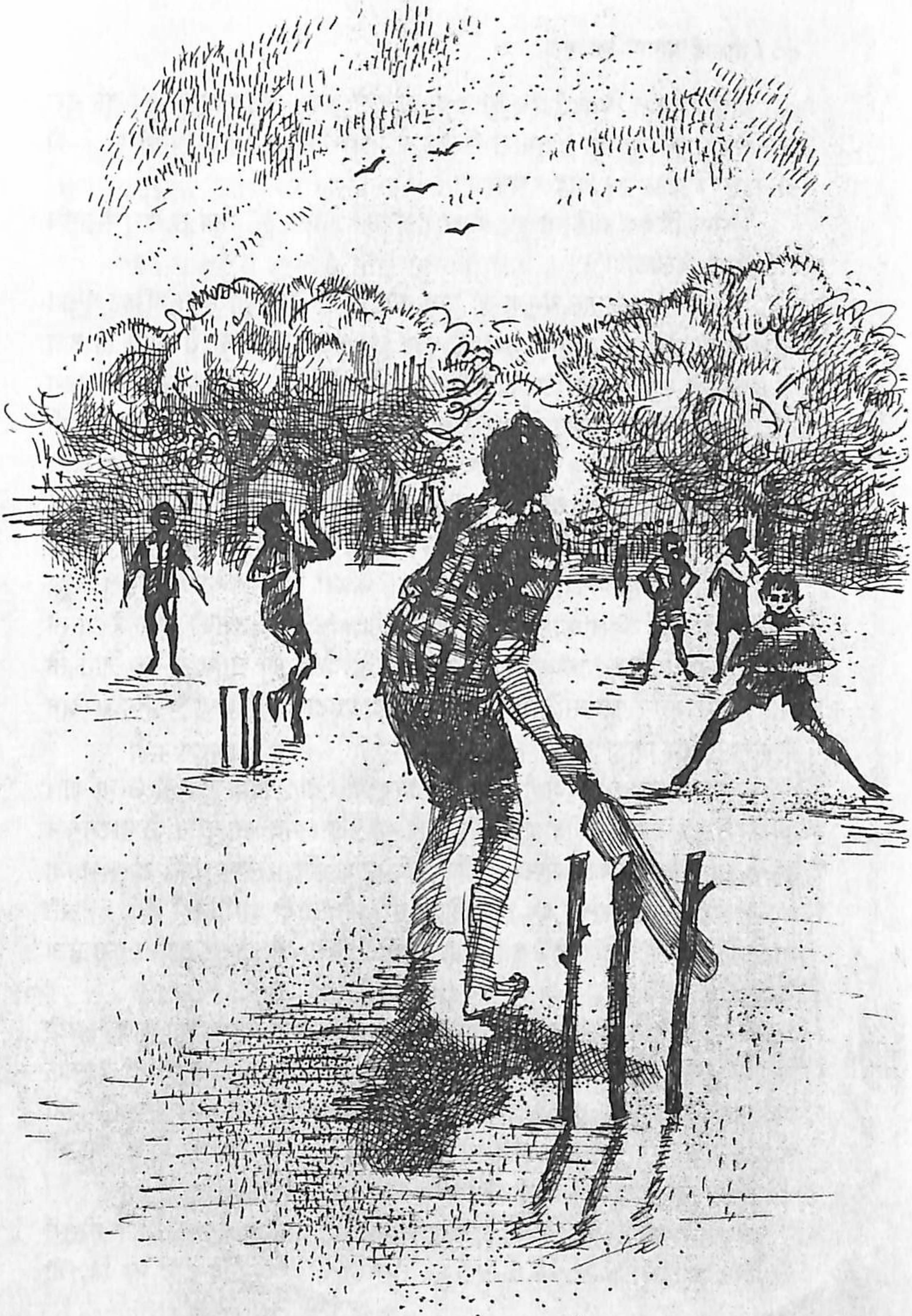

निधिराम ने बिगड़ते हुए बुरुन के कान में कहा, 'बहुत खूब' अब तुम मेरा नाम लेकर बुला रहे हो। तुम से मैं उम्र में कितना बड़ा हूँ यह जानते हो ? दो सौ साल— बड़ा इसे याद रखना।''

बुरुन फिक्क से हँसते हुए बोला, ''ठीक है, ठीक है ! अब से मैं तुम्हें निधि दा कहकर बुलाऊँगा।''

दूसरे ही क्षण एक बगूला-सा उठा और मैदान से होता हुआ हरिहर पंडित के घर की ओर जा पहुँचा। सर की बुआ के कुछ समझ पाने से पहले ही हवा के धक्के से उनके हाथ की गेंद छिटककर मैदान में जा पहुँची। सर की बुआ चीख़ने लगीं, ''अरे, पलक झपकते ऐसा बढ़िया पका बेल कहाँ चला गया ? कैसी मीठी सुगंध थी उस बेल की। सोचा था, आज उसका शरबत बनाकर हरि को पिलाऊँगी। इन दिनों बेचारे का पेट ठीक नहीं रहता है...''

दूसरे ओवर की गेंद फेंकने केष्टो आया। वह दैत्य की तरह लगता था। वह क्रिकेट की गेंद फेंकता या गोला दाग़ता, कहना मुश्किल था। वह इस स्कूल का ही नहीं, इस जिले का सबसे ख़तरनाक गेंदबाज़ था। उसकी गेंद से या तो स्टम्प टूटता या फिर बल्लेबाज़ का पैर, अगर ये दोनों गेंद लगने से बच जाते तो फिर विकेट कीपर की पसलियाँ टूटतीं। इसलिए केष्टो की गेंदबाज़ी के समय मैदान में सन्नाटा छा जाता था।

मगर स्कूल के पिद्दी मैच में वह जानबूझकर तेज़ गेंदबाज़ी नहीं करता था। आ़ज भी उसने पहली गेंद धीमी ही फेंकी थी। इस गेंद पर बुरुन के पार्टनर ने बल्ला धुमा कर एक रन लिया। केष्टो की दूसरी गेंद को भी धीमी ही कहा जा सकता था। मगर उसकी वह धीमी गेंद दूसरों को उतनी धीमी नहीं लगी। किसी लाल नागिन की रफ़्तार से उसने बुरुन के सीने के सामने आकर अपना फन उठा दिया।

बुरुन के बैट ने बड़ी लापरवाही से उठकर उस नागिन को ऐसी लात जमायी कि वह दुम दबाकर चिड़िया के रूप में दूर बादलों के देश में उड़ गयी। इसके बाद वह चित्त होकर वहाँ गिरी जहाँ जूनियर लड़के क्रिकेट खेल रहे थे। वहाँ भी उस वक़्त एक लड़का बल्लेबाज़ी कर रहा था, इसलिए वह गेंद किस टीम की थी— इसे लेकर झगड़ा खड़ा हो गया।

अपने गेंद की पिटाई होते देखकर केष्टो को गुस्सा आ गया। उसकी तीसरी गेंद कुछ ज़्यादा तेज़ न होने के बावजूद तेज़ ही थी। वह गेंद पिच पर बिजली

की गति से बुरुन की ओर लपकी। लेकिन उस दिन बुरुन का बेट बज्र से भी ज्यादा कठोर था। उसने गेंद की ऐसी पिटाई की कि वह दुम दबाकर फिर से हवा में उड़कर मैदान पार करके स्कूल की दीवार का थोड़ा पलस्तर झाड़ गई। दीवार की वह टूटी हुई जगह अफ्रीका के नक्शे की तरह लगने लगी।

पाँच मिनट में बुरुन ने तीस रन बना लिये। चारों तरफ़ से तालियों की गड़गड़ाहट होते लगी।

केष्टो ने अपनी आस्तीन चढ़ाकर गहरी-गहरी साँस ली। इसके बाद उसने मैदान के आख़िरी छोर पर पहुँचकर गेंद फेंकने के लिए दौड़ना शुरू किया। इसका साफ़ मतलब था कि अब केष्टो अपनी सबसे ज़्यादा तेज़ गेंदबाज़ी करने जा रहा था।

बुरुन इत्मीनान से खड़ा रहा। हालाँकि केष्टो की गेंद उसे ठीक से नज़र भी नहीं आयी, लेकिन बल्ला जब गेंद पर लगा तब उसे लगा कि बल्ले के दो टुकड़े हो जायेंगे।

शारदाचरण बाबू ज़मींदार थे। उनकी हवेली पर एक पत्थर की परी सौ वर्षों से पंख फैलाये खड़ी थी। उस शैतान गेंद ने जाकर परी का एक पंख तोड़ने के बाद ही अपनी रफ़्तार रोकी।

फिर छक्का!

केष्टो की पाँचवी गेंद पहले से भी ज़्यादा तेज़ थी। गेंद की रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि वह लगभग अदृश्य होकर कब आयी और कब बल्ले ने उसकी धुनाई की, बुरुन को पता ही नहीं चला। उस बार गेंद जाकर एक भूसे से लदी हुई बैलगाड़ी के भूसे के ढेर में जाकर घुस गयी। गेंद बिचारी अपनी इतनी पिटाई सह न पाने के कारण की शायद इस तरह छिपने का मौक़ा ढूँढ़ रही थी।

बड़ी कठिनाई से चीख-पुकार करके वह गाड़ी रुकवायी गयी और भूसे के ढेर से ढूँढ़-ढाँढ़कर उस गेंद को निकाला गया। इस बीच मौका पाकर पास होने वाले लड़के आकर बुरुन को अपने कंधों पर उठाकर नाचने लगे। फिर मैदान से बाहर निकलकर वे लड़के फेल होने वाले लड़कों को हाथों के इशारे से चिढ़ाने लगे।

बयालीस से एक सौ दो तक पहुँचने में बुरुन को कुल बारह मिनट लगे। कुल मिलाकर सत्ताइस मिनट में उसने अपना शतक पूरा कर लिया था और अभी तक वह नॉट आउट था।

इस बीच उसकी बल्लेबाजी की चर्चा सुनकर पहले गेम सर, इसके बाद हेड सर सहित सभी अध्यापक मैदान में पहुँच गये। ख़बर पाकर कसबे के लोग भी वहाँ आने लगे। देखते ही देखते मैदान के चारों तरफ़ लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी।

यह देखकर बुरुन शरमा गया। मगर वह करता भी क्या!

सत्रह ओवर बाउंड्री मारकर एक सौ दो रन के बाद भी बुरुन को फिर से अपनी शानदार बल्लेबाज़ी का वही सिलसिला बनाये रखना पड़ा। दूसरा शतक ठोकने में बुरुन को कुल पच्चीस मिनट लगे। बुरुन ने कुल सत्रह चौके लगाये। आउट होने का कोई सवाल ही नहीं था।

नकचढ़े गेम सर ने कहा, ''ब्रेडमैन का भी ऐसा रेकॉर्ड नहीं है। यह तो क्रिकेट का इतिहास ही पलट देगा।''

पास होनेवाले लड़कों के ढाई सौ पर पारी समाप्त घोषित कर देने पर फेल होनेवाले लड़के बल्लेबाज़ी के लिए आये। बुरुन गेंदबाज़ी के लिए तैयार था। उसके कान में निधिराम ने कहा, ''बेफ़िक्र रहो।''

फ़िक्र करने की कोई बात थी भी नहीं। फेल होने वाले लड़कों की पारी सिर्फ़ छह रन में ही सिमट गयी। बुरुन ने दो ओवर में सिर्फ़ दस गेंदे फेंकी थीं। दूसरे ओवर में चार से ज्यादा गेंद फेंकने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। हर गेंद में एक विकेट गिरा था। ट्रिपल हैट्रिक समेत उसकी गेंदबाज़ी का विश्लेषण था— 1.4 ओवर, 2 मैडन, 0 रन, 10 विकेट। उसके दो ओवर के बीच एक अनाड़ी लड़के ने एक ओवर गेंद फेंकी थी। उसी से फेल होनेवाली टीम ने छह रन बनाये थे।

गेम सर ने कहा, ''वर्ल्ड रिकॉर्ड !''

लेकिन उनके आश्चर्य चकित होने की यह शुरूआत थी। यह तो हुई क्रिकेट की बात!

ठीक पंद्रह दिनों के बाद स्कूल का वार्षिक खेल समारोह होनेवाला था। इस समारोह के लिए काफी तैयारी की जाती थी, क्योंकि स्कूल के वार्षिक खेल-कूद के बाद ही होनेवाली ज़िला स्तर की खेल-कूद-प्रतियोगिता में भाग लेने स्कूल के चुने हुए खिलाड़ियों को भेजा जाता था। इस स्कूल की साख जितनी पढ़ाई में थी उतनी ही खेलकूद में भी थी।

बुरुन को भी हर साल खेलकूद में एक-दो इनाम मिल जाते थे मगर चर्चा

करने लायक़ कोई बात नहीं होती थी। अपने वर्ग में ऊँची कूद में पिछली बार उसे तीसरा पुरस्कार मिला था और दो सौ ग़ज़ की दौड़ में वह दूसरे नम्बर पर आया था। स्कूल के अच्छे खिलाड़ियों की तुलना में यह कुछ भी नहीं था।

स्पोर्ट्स के दस दिन पहले हीट हो रही थी।

कुछ प्रतियोगिताएँ ग्रुप में बँटी हुई थीं। दो-तीन प्रतियोगिताएँ ऐसी थीं जिनमें सभी हिस्सा ले सकते थे। बुरुन ने अपने वर्ग की हर तरह की दौड़ और कूद में अपना नाम लिखवा दिया था। इसके अलावा दस हज़ार मीटर की दौड़, साइकिल दौड़ और गोला फेंकने की खुली प्रतियोगिताओं में भी बुरुन ने अपना नाम लिखवा दिया। क्रिकेट में उसका कमाल देखने के बाद स्पोर्ट्स की इतनी सारी प्रतियोगिताओं में उसके भाग लेने पर किसी ने कोई आपत्ति नहीं की। बुरुन की छिपी हुई प्रतिभा क्या रंग दिखायेगी, इसे कौन जानता था!

हीट शुरू होने के दिन ही निधिराम ने उत्साह में भरकर ऐसा हंगामा खड़ा किया कि बुरुन शर्म से पानी-पानी हो गया।

पहले सौ मीटर की दौड़ शुरू हुई। गेम सर स्टॉप वॉच लेकर खड़े थे। असिस्टेंट गेम सर के सीटी बजाकर दौड़ शुरू करने का संकेत देते ही बुरुन को लगा कि कोई तूफ़ान उसे बड़ी रफ़्तार से उड़ाये लिये जा रहा है। नतीजा यह हुआ कि बुरुन के पैरों ने ज़मीन को छुआ तक नहीं।

दौड़ ख़त्म होने के बाद गेम सर मैदान में धम्म से बैठकर अपना सिर पकड़कर बोले, ''सिर्फ़ आठ सेकेंड में सौ मीटर। ओह! मैं बेहोश हो जाऊँगा।''

वे सचमुच ही बेहोश हो जाते, मगर बुरुन ने झटपट उन्हें पकड़ते हुए कहा, ''नहीं सर, भला आठ सेकेंड कैसे हो सकता है? स्टॉप वॉच में ज़रूर कोई ख़राबी होगी।''

गेम सर ने बावले की तरह पूछा, ''ऐसी बात है?''

''जी सर!''

''सच कहते हो?''

''सचमुच, इतनी तेज़ मैं भला दौड़ सकता था?''

गेम सर ने खड़े होकर कहा, ''दौड़ने से परेशानी हो जाती, क्योंकि वर्ल्ड रेकार्ड इससे कहीं ज़्यादा समय का है।''

ऊँची कूद होने से पहले आड़ में जाकर बुरुन ने खीझते हुए कहा, ''निधिदा, यह क्या तमाशा कर रहे हो? ज्यादा गड़बड़ करोगे तो मैं जाकर गोसाईं सरदार

से तुम्हारी शिकायत कर दूँगा।"

निधिराम डरते हुए बोला, "ऐसा है कि वर्ल्ड रेकार्ड-फेकार्ड के बारे में मैं क्या जानूँ ? मुझको पहले से बताना चाहिए था।"

"ठीक है, अब जो होना था हो गया। अब सावधान हो जाओ।"

ऊँची कूद में बुरुन फटाफट निशान लाँघने लगा मगर कोई ख़ास प्रगति नहीं हुई। मगर यह भी कुछ कम नहीं था। गेम सर ने फीते से नापने के बाद कहा कि बुरुन ने आख़िरी दौर में एक ही छलांग में छह फुट की ऊँचाई लाँघी है। वे बड़ी हैरत में थे।

लम्बी कूद के वक़्त बुरुन और सावधान हो गया। सिर्फ़ बाइस फुट कूदने के बाद वह और नहीं कूद पाया।

गेम सर उसे आड़ में बुलाकर रोमांचित होकर बोले, "सुनो बुरुन १ ईश्वर ने तुम्हें कितनी ज़बर्दस्त क्षमता ही है, तुम शायद इसे समझ नहीं पा रहे हो। मैं घोषणा करता हूँ, तुम ओलम्पिक से अकेले ही एक दर्जन सोने का पदक जीतकर लाओगे। अभी से तैयारी शुरू कर दो।"

बुरुन शरमा गया। पूरे मैदान में उसी की चर्चा हो रही थी। उसे देखने के लिए लड़कों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। शहर के लोग भी यह हैरत की बात देखने चले आ रहे थे।

स्पोर्ट्स के दिन दोपहर को मैदान में तिल धरने की जगह नहीं थी। सिर्फ़ उस कस्बे के ही नहीं, आसपास के इलाके से, यहाँ तक कि ज़िला शहर से भी लोग गाड़ियों में चले आ रहे थे। हर जगह यह ख़बर फैल गयी थी कि इस कस्बे में एक ज़बर्दस्त स्पोर्ट्समैन पैदा हुआ है।

बुरुन के कारनामों से उसके दादाजी भी चकित थे। अपने पोते की ऐसी क्षमता से वे भी अपरिचित थे। उन्होंने पोते की ताक़त बढ़ाने के लिए एक बढ़िया काढ़ा तैयार करके पिला दिया था। उसी से बुरुन के शरीर में काफ़ी ताक़त आ गयी थी।

एक तरफ़ दादाजी का शक्तिवर्द्धक काढ़ा, दूसरी तरफ़ निधिराम ! दोनों को मिलाकर स्पोर्ट्स के दिन एक अविश्वसनीय कांड घटित हो गया।

पोलवाल्ट में बाँस पर झटका मारकर बुरुन उसके निशान के डंडे से लगभग दस फुट और ऊपर चला गया। नापने पर बाईस-तेईस फुट की ऊँचाई होती। पूरा मैदान ज़बर्दस्त शोर और रोमांच से भर उठा।

सौ मीटर, दो सौ मीटर, आठ सौ मीटर, बाधा दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, लोहे का गोला फेंकने यानी किस खेल में बुरुन ने लोगों को हैरत में नहीं डाला। आख़िरकार बाक़ी सभी प्रतियोगी मैदान से चुपचाप खिसकने लगे। लोग आपस में कहने लगे, "भैया, यह तो हाबू उस्ताद के भुतहा कांड जैसा ही है। नहीं तो इतनी कम उम्र का लड़का भला इतनी तेज़ दौड़ या इतनी ऊँची कूद या इतनी लम्बी छलाँग कैसे लगा सकता है ?"

स्पोर्ट्स के बाद बुरुन लड़कों के कंधों पर चढ़कर ढेर सारे इनाम लेकर घर लौटा। दादाजी ने यह सब देखकर कहा, "आख़िर कैसे नहीं होता ! यह काढ़ा तो मेरा खुद का आविष्कार है। भेलू जैसों के डाक्टरी शास्त्र में ढूँढ़ने से भी ऐसी चीज़ें नहीं मिलेंगी।"

## 6

इन दिनों बुरुन का काम काफ़ी बढ़ गया था। सुबह उठकर उसे कमरे में झाड़ू लगानी पड़ती थी, फ़र्श पर पोंछा लगाना पड़ता था, अपनी पढ़ने की मेज़ खुद ही ठीक रखनी पड़ती थी, कुएँ से नहाने के लिए पानी खींचना पड़ता था, खाने के बाद अपने बर्तन माँजने पड़ते थे, सप्ताह में दो दिन अपने कपड़े, बिस्तर का चादर और तकिये का गिलाफ़ साफ़ करना पड़ता था, अपने जूतों में पालिश करनी पड़ती थी और मसहरी लगानी पड़ती थी। बस काम ही काम था। भेलू डाक्टर के आदेश पर सभी ने उसका हाथ बँटाना बंद कर दिया था। अपमान का यहीं अंत नहीं था। गणित में फेल होने के बाद से उसके बिस्तर पर गद्दा नहीं बिछाया जाता था। बस चौकी पर दरी और चादर बिछाकर सोना पड़ता था। उसे मोजे के बगैर ही जूते पहनने पड़ते थे और रंग-बिरंगे कपड़े पहनने पर भी पाबंदी थी।

पहले पहल तो बुरुन को बड़ी तकलीफ़ होती थी। अपमान से आँखें भर आतीं। रात में अकेले लेटकर वह फफक-फफककर रोता रहता।

लेकिन अब उसे तकलीफ नहीं होती थी। सुबह होने से पहले ही उसकी नींद टूट जाती थी। निधिराम ही उसे जगा देता था। आँख खुलने पर देखता

निधिराम ने कमरे की सफ़ाई करके उसके पढ़ने की मेज़ को भी सज़ा रखा है। नहाने के समय जब वह कुएँ से पानी खींचता था तब असल में उसे पानी की भरी हुई बाल्टी खींचनी नहीं पड़ती थी। वह सिर्फ़ रस्सी पकड़कर खड़ा रहता था, बाल्टी अपने आप ऊपर चली आती थी। बर्तन मलने में भी उसे कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। कुएँ की जगत पर जाकर जूठे बर्तन रखते ही बर्तन माँज-धोकर साफ़ हो जाते थे। मच्छरदानी अपने आप ही लग जाती थी। चूँकि रात में सख्त चौकी पर लेटने से उसे तकलीफ़ होती थी इसलिए उसका भी इंतज़ाम हो गया था। रात में जाने कहाँ से एक नरम गद्दा बिस्तर पर बिछ जाता था और सुबह होते ही वह ग़ायब हो जाता था।

आजकल पढ़ाई-लिखाई में भी तकलीफ़ नहीं होती थी। पढ़ने की ज़रूरत ही क्या थी ? कक्षा में कितना ही कठिन सवाल उससे क्यों न पूछा जाता, निधिराम उसके कान में उसका सही जवाब बता देता था।

बुरुन इन दिनों बड़े आराम का जीवन बिता रहा था।

मगर निधिराम, जो उसकी इतनी ख़ातिरदारी कर रहा था उसके पीछे भी एक कारण था।

लगभग रोज़ ही रात को निधिराम बिस्तर के बगल में ज़मीन पर बैठकर पिनपिनाता रहता, ''समझे बुरुन, मैं देख रहा हूँ तुम बड़े चालबाज़ लड़के हो। वायदा करके वायदा निभाते नहीं।''

बुरुन उनीदीं आँखों से जम्हाई लेते हुए कहता, ''मुझे नींद आ रही है। अब तुम यहाँ से जाओ।''

''अरे भाई, तुम्हें सोना तो है ही। लेकिन तुमने मेरी नींद उड़ा दी है। यह तो जानते ही हो कि उस गोसाईं बागान में मेरा मज़ाक़ उड़ाने के बाद से अब मैं भूतों के समाज में मुँह दिखाने लायक़ नहीं रह गया हूँ। खुद गोसाईं बाबा ने मुझसे साफ़-साफ़ कह दिया है कि अगर बुरुन कभी तुझसे थोड़ा -बहुत डरे तभी हमारे समाज में तेरा हुक्का-पानी चालू होगा, वरना खड़ाऊँ मारकर विधर्मी भूतों की टोली में तुझे खदेड़ दूँगा।''

''तो फिर मैं क्या करूँ ?''

निधिराम ने मुँह फुलाकर कहा, ''तुम्हारे लिए कितना कुछ कर रहा हूँ और तुम मेरे लिए इतनी छोटी-सी चीज़ नहीं कर पा रहे हो ?''

''मगर मुझे तुमसे डर नहीं लगता निधि दा !''

"कोशिश तो कर सकते हो ।"

"धत तेरे की ! तुमसे डरने की बात सोचते ही हँसी आ जाती है ।"

निधिराम उदास होकर चला गया । इसके बावजूद वह दिन-रात उस बात को लेकर पिनपिनाने से बाज़ नहीं आता था ।

दादाजी इन दिनों बातें नहीं करते थे । दिन रात अपनी जड़ी-बूटियों को लेकर प्रयोग करते रहते । वे तरह तरह के नए अवलेह, काढ़ा, चूरन तैयार कर रहे थे । रात दिन जंगलों में घूम-घूमकर पेड़ों की जड़ें, उनकी छालों और पत्तियों का संग्रह करते । हीरे, मोती सोने का भस्म तैयार करते । हिरन की नाभि की तलाश में मारे-मारे फिरते । यह सब उनकी पुरानी आदत थी । लेकिन इधर वे कुछ ज़्यादा ही परेशान नज़र आते थे ।

रविवार को दादाजी ने बुरुन को बुलाकर कहा, "तुम तो दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे हो मुन्ना ! मैंने गौर किया है कि मेरे जगाने से पहले ही तुम ब्राह्ममुहूर्त में उठ जाते हो । घड़ी की सुइयों के मुताबिक बिना किसी ग़लती के सारे काम करते हो ।"

बुरुन कुछ शरमाता हुआ गर्दन झुकाये खड़ा रहा ।

दादाजी उसे अपने पास खींचकर एक हाथ से उसे अपने सीने से लगाते हुए और दूसरे हाथ से उसके सिर को सहलाते हुए बोले, "बहुत अच्छे बच्चे हो । शाबाश !"

दादाजी उसे इस तरह काफ़ी देर तक अपने सीने से लगाये रखकर बहुत धीरे -से कहा, "देखो मुन्ना ! अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ । जाने कब मर जाऊँ । इसलिए सोचता हूँ, मुझे जो कुछ भी आता है उसे अभी से तुम्हें थोड़ा-थोड़ा सिखाता रहूँ ।"

वैसे तो दादाजी के साथ बुरुन का मेल-जोल बहुत अच्छा था लेकिन इसके पहले उन्होंने कभी बुरुन को इस तरह से प्यार नहीं किया था । अपने दादाजी की ऐसी असहायता को देखकर बुरुन चौंक गया । उसके दादाजी राम वैद्यजी कभी किसी से डरते नहीं थे, न उन्होंने कभी किसी की परवाह की थी । लेकिन आज जैसे बुरुन को लग रहा था कि उसके दादाजी अब पहले वाले दादाजी नहीं रहे ।

बुरुन हमेशा से ही नटखट रहा है । गणित में फेल होने के बाद से वह थोड़ा दुःखी रहता था । इसलिए किसी की उदासी को वह झट से समझ जाता था । जिस तरह से उसका मन बदल गया था शायद उसके दादाजी के मन में भी कुछ

बदलाव आया होगा ।

बुरुन ने पूछा, "दादाजी, आप किस बात से चिंतित हैं ? मुझसे कहिए, में सब ठीक कर दूँगा ।"

राम वैद्यजी चिन्तामग्न होकर कुछ देर तक बुरुन की ओर देखते रहे । इसके बाद सिर हिलाकर बोले, "यह कोई साधारण विपत्ति नहीं है । लेकिन मैं अपने लिए नहीं सोचता मुन्ना ! बूढ़ा हो गया हूँ इसलिए अब मरने से नहीं डरता मगर सोचता हूँ, एक बदमाश आकर क्या इस सारे शहर को ही बरबाद कर देगा ?"

"बदमाश ! कौन है वह?" बुरुन ने चौंकते हुए पूछा ।

'है कोई ।"

"वह आकर क्या करेगा ?"

"वह क्या करेगा इस बारे में अभी से क्या कहा जा सकता है मुन्ना ! इसीलिए मैं सोच रहा हूँ कि समय रहते मैं तुम्हें अपनी थोड़ी-सी विद्या सिखा जाऊँ । और इस विद्या को सिर्फ़ सीखने से ही काम नहीं चलेगा, तुम्हें आविष्कारक भी होना पड़ेगा । पुरानी चीज़ों की खोज भी करनी पड़ेगी । आयुर्वेद में जितना बताया गया है मैंने उससे भी ज़्यादा दवाएँ तैयार की हैं । यह तो इसका एक पहलू हुआ । एक अच्छा चिकित्सक बनने के लिए सिर्फ़ रोग और दवा को पहचानना ही काफ़ी नहीं होता, न सिर्फ़ पैसा कमाना ही सब कुछ है । रोगी तुम्हारे कहने के अनुसार दवा लेता है या नहीं इस पर भी तुम्हें नज़र रखनी पड़ेगी । रोगी से अपने परिवार के व्यक्ति की तरह ही प्रेम करना पड़ेगा । प्रेम ही चिकित्सा का मूल मंत्र है । स्नेह, ममता, सहानुभूति के बिना अच्छा चिकित्सक नहीं बना जा सकता । इसके अलावा और भी बातें हैं । कौन-सा लक्षण देखकर किस रोगी को क्या दवा दी गयी और उसका परिणाम क्या हुआ, इन सबको एक अलग कॉपी में लिखना पड़ेगा । बीच-बीच में उसे उलट-पुलट कर देखना भी चाहिए । इस तरह करने से कभी ग़लती नहीं होती । पहले कभी अगर तुमसे ग़लत चिकित्सा हो गयी है तो बाद में उसे सुधार सकते हो । फिर दुबारा ग़लती नहीं होती । मेरे पास इस तरह की बीस-इक्कीस कापियाँ हैं । उन्हें अगर एक किताब के रूप में छपवा दिया जाए तो लोगों का बड़ा कल्याण होगा । लेकिन लगता है अब अपनी ज़िंदगी में इसे पूरा नहीं कर पाऊँगा । अपनी सारी कापियाँ में तुम्हें सौंप जाऊँगा ।"

बुरुन का मन भारी होता जा रहा था । दादाजी इस तरह से बातें कर रहे थे जैसे अब वे कुछ ही दिनों के मेहमान हों ।

थोड़ा दिन चढ़ने पर दादाजी अपने नौकर को साथ लेकर गोसाईं बागान की तरफ़ जड़ी-बूटियों की खोज में चले गये। बुरुन मौक़ा पाकर दादाजी के कमरे में घुस गया। बुरुन उदास होने पर अपने दादाजी के कमरे से च्यवनप्राश चुरा-चुराकर खाता था। दादाजी के च्यवनप्राश का स्वाद अचार जैसा लगता था।

उस कमरे में वैद्यक की दवाओं की बड़ी मीठी महक़ बसी थी। उन दवाओं की तीखी महक बुरुन को अच्छी लगती थी। सिर्फ़ इसी के लिए बुरुन का मन बीच-बीच में वैद्य बनने को करता था।

च्यवनप्राश के ज़ार से एक चम्मच च्यवनप्राश लेकर बुरुन उसे चाटते-चाटते दादाजी की आरामकुर्सी पर जाकर बैठ गया। आरामकुर्सी में दादाजी के सिर के तिल के तेल की महक़ बसी थी। वह महक़ भी बुरुन को अच्छी लगी।

अचानक हवा का एक झोंका आया। कमरे में दादाजी की मेज़ पर पड़े काग़ज़-पत्र इधर-उधर उड़ गये। एक छोटा-सा काग़ज़ उड़कर बुरुन की गोद में आ गिरा।

बुरुन ने अनमने भाव से काग़ज़ को खोलकर देखा। लाल स्याही से लिखी एक चिट्ठी थी। उसमें लिखा था— हम प्रणाम करके निवेदनपूर्वक लिख रहे हैं कि महाशय, हमारे परम पूज्यनीय सरदार हाबू महाराज को क़ाबू करने के लिए आपने जो उलटे-सीधे काम और षड्यन्त्र किये थे, उसे हमलोग भूले नहीं हैं। हाबू महाराज बहुत जल्द ही सरकारी क़ैद से रिहा होनेवाले हैं। हमलोग माँ काली के नाम से सौगंध खा रहे हैं कि हाबू महाराज के अपमान का बदला लेकर ही रहेंगे। अब अपना अंतिम समय आया समझ लीजिए। हम लोग जल्द ही आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। निवेदन इति– आपके दासानुदास हाबू महाराज के सेवक।

उस चिट्ठी को पढ़कर बुरुन हैरान रह गया। इतनी विनम्रता और नम्रता के साथ भला कोई किसी को धमकी देता है ? उसे हँसी भी आ रही थी। लेकिन अचानक अपने दादाजी के हाव-भाव और उनकी बातें याद आते ही उसकी समझ में आ गया यह चिट्ठी मज़ाक नहीं है। कोई मामूली चिट्ठी होने पर उसके दादाजी इतने बदल न जाते।

च्यवनप्राश को झटपट ख़त्म करके बुरुन अपने कमरे में चला आया। दरवाज़ा बंद करके उसने बहुत गंभीर होकर पुकारा, "निधिराम ! ओ निधि दा !"

निधिराम के कहीं नजदीक न होने पर भी चिंता की कोई बात नहीं थी।

निधिराम के असंख्य दूत चारों तरफ़ हवा में, ओने-कोने में घूमते रहते थे। उनमें ढेरों नये भूत, अनाड़ी भूत, डरपोक भूत, बेवकूफ़ भूत, पागल भूत, साधु और चोर भूत भी थे। उन सभी से निधिराम ने कह रखा था कि जब भी बुरुन को मेरी ज़रूरत पड़े, मुझे तुरंत ख़बर दे दी जाए।

आज भी एक दुबला-पतला भूत मोटे शब्दकोश के पन्नों में चपटा होकर सो रहा था। बुरुन की आवाज़ सुनते ही वह जब झट से बाहर निकला, उस वक़्त भी उसका शरीर काग़ज़ की तरह चपटा था। नींद भरी आँखों से उसने झटपट नमस्कार करके कहा, "जी, वे ज़रा मुर्दा खाने के लिए मनसागुड़ी गये हैं। वहाँ पर महामारी फैली है न!"

"मुर्दा खाने के लिए ? छीः" "बुरुन ने घृणा से अपना मुँह बिचकाया।

वह दुबला भूत हँसते हुए बोला, "जब आप भूत बनेंगे तब फिर आप ऐसी बात नहीं करेंगे। मुर्दा खाने में इतना स्वादिष्ट होता है कि उसके आगे पुलाव-बिरियानी सब मात है।"

बुरुन ने खीझते हुए कहा, "उसे अभी बुलाओ। कहो, बड़ा ज़रूरी काम है।"

दुबले-पतले भूत ने 'जाता हूँ' कहकर एक छलाँग में आकाश को पार कर लिया।

थोड़ी देर बाद ही निधिराम एक सींक से दाँत खुरचते-खुरचते हाज़िर हुआ।

'क्यों बुलाया ?"

बुरुन ने कहा, "मुँह धोकर आये हो ?"

"भूतों का भला क्या मुँह धोना।"

"पहले जाकर मुँह धो आओ। अच्छी सेहत की बातें नहीं मानते, सदाचार पर अमल नहीं करते। निधिदा, तुम सब कैसे लोग हो ?"

निधिराम शरमाकर मुँह धो आया।

बुरुन ने उससे पूछा, "हाःबू महाराज नाम के किसी आदमी को जानते हो ?"

निधिराम चौंककर बोला, "अरे बाप रे! नहीं पहचानूँगा ? उसने हम लोगों को कम तंग नहीं किया है।"

"किस तरह ?"

"ओह ! यह मत पूछो। हाबू गुंडा भूत का मंत्र जानता था। उसीसे हम लोगों को वश में करके हम से खूब काम लेता। सरसों और झाडू से खूब पिटाई

भी करता । मगर तुम उसके बारे में क्यों पूछ रहे हो ?"

"वह अगर दुबारा यहाँ आये तो फिर क्या होगा ?"

"आयेगा ? अरे बाप रे ! तब तो सर्वनाश ही समझो ।"

"तुम लोग उससे सचमुच बहुत डरते हो ?"

"उससे सभी डरते हैं । हम लोगों को कभी उसने बहुत परेशान किया था ।"

बुरुन ने गम्भीर होकर कहा, "मैं एक बात साफ़-साफ़ जानना चाहता हूँ । हाबू के यहाँ आ जाने पर तुम उसे ज़्यादा मानोगे या मुझे ?"

निधिराम ने भी गम्भीर होकर कहा, "देखो बुरुन । तुम छोटे बच्चे हो इसलिए तुम्हारी दोस्ती के नाम पर तुम्हारा सब काम कर देता हूँ । तुम्हारा सम्मान भी करता हूँ । लेकिन हाबू के साथ दूसरी बात है । उसे हम लोग प्यार से तो क्या, फूटी आँख से भी देखना पसंद नहीं करते, लेकिन उसके पास मंत्र का ज़ोर है । मंत्र के सामने तो चालाकी नहीं चलती । वह हमारी गर्दन पकड़कर हम से नौकर-चाकर का काम करवा लेगा । इसलिए अगर वह आयेगा तो मैं भी साफ़-साफ़ बता देता हूँ कि उस वक़्त हम लोग तुम्हारी सहायता नहीं कर पायेंगे ।"

"यह बात है ?"

"हाँ ! किया क्या जा सकता है, हम लोग मंत्र के गुलाम हैं ।"

बुरुन चिंता में पड कर सोचने लगा । फिर उसने पूछा, "उस वक़्त मेरे बुलाने पर भी नहीं आओगे ?"

निधिराम ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं आऊँगा, ऐसा नहीं कहता । मगर उस वक़्त अगर हाबू किसी काम में उलझा दे तब आना सम्भव नहीं होगा । पहले हाबू का काम फिर दूसरी बात ।"

"हाबू अगर तुम्हें हुक्म दे, जाओ जाकर बुरुन का सिर काट लाओ, तब क्या तुम सचमुच मेरा सिर काट लोगे ?"

निधिराम हालाँकि भूत था मगर इस बात को सुनकर उसके माथे पर पसीना चुहचुहाने लगा । बड़ी बेचैनी से वह बोला, "ऐसी अपशकुन की बातें मत करो । इन्हें जुबान पर नहीं लाना चाहिए ।"

"अगर कभी हाबू ऐसा कहे तब क्या करोगे ?"

निधिराम ने एक गहरी साँस लेकर कहा, "तुम्हें मैं प्यार करने लगा हूँ बुरुन । मैं क्या कहूँ ! मगर हाबू अगर हुक्म दे तो हमें अपना भी सिर काटकर उसे देना पड़ जायेगा ।"

# 7

होली जैसे घोड़े पर सवार होकर आ गयी ।

हाबू गुंडे की रिहाई की ख़बर एक दूसरे से होती हुई चारों तरफ़ फैल गयी । सभी को यह बात पता चल गयी ।

हाबू भले ही कितना बदमाश हो मगर इस क़स्बे में उसके कुछ परम भक्त भी थे उन्हें लगता था कि हाबू में जैसी शक्तियाँ हैं वैसी सिर्फ़ बड़े-बड़े महापुरुषों में ही होती हैं । इसलिए हाबू चोरी-डकैती कुछ भी करता, इन लोगों के लिए वह साक्षात् भगवान का छोटा भाई ही था ।

ऐसे ही लोगों में एक था पँचकौड़ी आढ्य । कभी उसने 'हाबू उस्ताद की वंदना' नाम से एक पतली-सी किताब छापी थी । उसकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ थीं—

प्रथम वंदना करहुँ देव महेश्वर ।
फिर करहुँ वंदना देव चराचर ।।
फिर मैं पूजूँ वाग्देवी के चरन ।
मात-तात चरणों में सर्व प्राण- मन ।।
उत्तर में हिमालय दक्षिण में वन ।
इसके बीच गाँव- शहर अनगिन ।।
क़स्बों में श्रेष्ठ भैटागुड़ी बागान ।
जहाँ विराजे श्री हाबू पुण्यवान ।।

इसके बाद उस वंदना में पँचकौड़ी ने आगे लिखा था—

गुणाकर हाबू के गुणों का नहीं शेष ।
पल में लोगों को बना दे वह मेष ।।
सिंह वाहन और भूत पिशाच संगी ।
निशि दारोग़ा भागा खाकर लंगी ।।
अयस्कान्त आया था अपना सीना ताने ।
कैसे वह भागा, हाबू उस्ताद ही जाने ।।
आखिरकार आया वह दारोग़ा गदाई ।
गुणाकर के पंजे से कौन बचाये भाई ।।

कभी पँचकौड़ी हाट-बाज़ार में इस किताब को बेचने के लिए खुद निकलता था। मगर गदाई दारोग़ा के हाथों हाबू के काबू होने के बाद से उसका उत्साह मंद पड़ गया था।

बहुत दिनों के बाद फिर से हाबू उस्ताद के लौटने की ख़बर पाकर उसके चेहरे पर मुस्कराहट छा गयी। राम वैद्यजी के पास एक दिन जाकर बोला, "वैद्यजी, पता है आपको, हाबू देवता फिर से वापस आ रहे हैं। जिन्होंने उन्हें जेल की हवा खिलायी थी अब उनके दिन ख़त्म हुए। क्या ख़याल है आपका ?"

राम वैद्यजी के साथ न जाने क्यों हाबू ने कभी कोई झमेला नहीं किया था। लेकिन वैद्यजी ने जब खुद ही जाकर हाबू के ख़िलाफ़ गवाही दी थी, तब हाबू ने अदालत में ही कहा था, "रामदा ! अपने अच्छा काम नहीं किया !"

हाबू की वह बात वैद्यजी भूले नहीं थे। उन्होंने मुँह बिचकाकर पँचकौड़ी से कहा, "एक मामूली आदमी को बेकार में ही क्यों देवता बना रहे हो ? हाबू चाहे जो भी हो है तो मनुष्य ही।"

पँचकौड़ी अपनी जीभ काटते हुए बोला, "छीः छीः, ऐसी बातें कहने से पाप लगता है। वे क्षमता में भगवान से कम नहीं हैं।"

"अगर ऐसा ही होता तो अपने मंत्र बल से वह जेल से निकल क्यों नहीं पाया ?"

"यह उनकी लीला है। मैं एक बार जेल में उनसे मिलने गया था। वहाँ जाकर क्या देखा, पता है ? उनके माथे पर सिंदूर का त्रिशूल बना था, बालों में लम्बी-लम्बी जटाएँ पड़ी थीं। उनकी दोनों आँखें हमेशा लाल रहती थीं। सिपाही से लेकर जेलर साहब तक उनके सामने रात-दिन हाथ बाँधे खड़े रहते थे। सैंकड़ों की संख्या में लोग मिठाई, सब्जी, मांस-मछली आदि से उनका भोग लगाते थे। सारे जेल में उनका प्रसाद बँटता था। उन्होंने मुझसे कहा था, "भाई पँचकौड़ी, मैं जेल में कुछ दिन रहकर अपनी आत्मशुद्धि कर रहा हूँ।""

"तो फिर भगवान को भी आत्मशुद्धि की ज़रूरत पड़ती है, तुम्हारा यही कहना है।"

पँचकौड़ी नाराज़ होकर बोला, "विश्वास नहीं हो रहा है न ! मैं कहे देता हूँ वैद्यजी, आपमें से कोई भी बच नहीं पायेगा।"

पँचकौड़ी के चले जाने के बाद राम वैद्यजी चुपचाप बैठकर सोचते रहे। इसके बाद वे थाने की ओर रवाना हो गये।

थाने में नये दारोग़ा आये थे। इस दारोग़ा की उम्र कम थी। बात-बात में अंग्रेज़ी झाड़ता था। मगर आदमी बुरा नहीं था। पर ज़्यादा अनुभवी न होने के कारण कामकाज में उतना माहिर नहीं हो पाया था।

वैद्यजी से हाबू की चर्चा सुनते ही दारोग़ा शंभूचरण बोला, "ओह। दैट फेमस रोग ! नहीं इस बार उसका कोई असर नहीं पड़नेवाला।"

राम वैद्यजी हँसते हुए बोले, "मार के डंडा, कर दूंगा ठंडा ? नहीं भाई, यह काम इतना आसान नहीं है।"

वैद्य जी कही गयी इस कविता की पंक्ति से शंभूचरण परिचित नहीं था। ख़ैर, उसने बड़ी लापरवाही से कहा, "वैद्यजी, नाक में तेल डालकर चैन से सोइए। हाबू को क़ाबू करने में मुझे दो दिन भी नहीं लगेंगे। मगर वह कोई गड़बड़ी करे तब न।"

होली के कई दिन पहले से कस्बे में कुछ संदेहजनक लोगों का आना-जाना शुरू हो गया था। वे लोग तिरछी नज़रों से देखते थे, किसी से ज़्यादा बात नहीं करते थे, बस ख़ामोश रहकर घूमते-फिरते थे।

हरिहरबाबू साइकिल से तिस्ताघाट गये थे। शाम के वक्त लौटते समय उन्हें कस्बे के उत्तर तरफ़ के शाल-जंगल से आनेवाली हवा में शेर की गंध मिली। उन्होंने अपनी साइकिल इतनी रफ़्तार से भगायी कि दो पहिये की गाड़ी जैसे पहिये पर दौड़ने की बजाय पंख लगाकर उड़ने लगी। बाजार के क़रीब आकर 'बा... बा...' कहकर चिल्लाते-चिल्लाते बेहोश होकर वे साइकिल समेत गिर पड़े।

लोगों की भीड़ जुट गयी। किसी ने कहा, "ऐसा लगा कि वे वाह-वाह कहकर अभी किसी को शाबाशी दे रहे थे। फिर वे बेहोश क्यों हो गये ?"

दूसरे ने कहा, "उन्होंने इतनी तेज़ साइकिल चलायी थी कि अपना करतब देखकर वे खुद ही अपने को वाहवाही दे रहे थे।"

एक बच्चे ने अपने पिता से पूछा, "पिताजी, क्या यह साइकिल भी बेहोश हो गयी है ?"

सनातन बाबू को शतरंज का नशा था। वे सारे दिन शतरंज के किसी खिलाड़ी की तलाश में रहते थे। मगर इस कस्बे में शतरंज के अच्छे खिलाड़ी थे ही कितने ? जो थे, वे हर समय उपलब्ध नहीं रहते थे। आधी रात को भी सनातन बाबू की नींद टूट जाती तो वे लालटेन की बत्ती ऊँची करके शतरंज सजा कर बैठ जाते थे। उस वक़्त उनको साथी कहाँ मिलता ? इसलिए अकेले ही गोटी बिछाकर

खुद ही दोनों तरफ़ से चालें चलने लगते थे।

इसी तरह से वे एक-रात खेल रहे थे। अचानक उन्होंने देखा कि उनकी उल्टे तरफ़ की गोटियाँ अपने आप ही चलने लगी हैं। और क्या बेहतरीन चाल थी! खेल शुरू होते न होते ही बारह चालों में वे घोड़ा और हाथी के सामने मात खा गये। जब तक खेल चल रहा था शतरंज के नशे में उन्होंने इस बात पर गौर नहीं किया था। खेल ख़त्म होने के साथ ही वे 'बाप रे!' कहकर चीख़ पड़े और डर के मारे बेहोश हो गये।

मगर यह बात ठीक थी कि कस्बे में शेर की गंध मिलने लगी थी और तरह-तरह की भुतही बातें भी घटने लगी थीं।

राम वैद्यजी की दुकान में सभी बहुत गम्भीर होकर शाम को बैठे हुए थे।

कमलाक्ष बाबू मफलर लपेटकर जाड़े में काँपते-काँपते वहाँ आकर बोले, "अब मत पूछो। उतना दामी शॉल..."

"शॉल का क्या हुआ?" राम बाबू ने चिंतित होकर पूछा।

"ले गया।"

"कौन?"

"और कौन?"

सभी उनके चेहरे की ओर देख रहे थे, लेकिन कमलाक्ष बाबू इससे ज़्यादा कुछ कहने के लिए तैयार नहीं हुए।

राम वैद्यजी ने एक गहरी साँस लेकर कहा, "जब जिस पर बुरा वक़्त आ जाए।"

मन्मथबाबू हाँ में हाँ मिलाकर एक गहरी साँस लेकर बोले, "यह बात सही है। हम लोग भले ही कितने सावधान क्यों न हों, होनी के आगे कोई ज़ोर नहीं चलता।"

राम बाबू ने उन्हें घूरते हुए कहा, "मैं अपने लोगों की बात नहीं कर रहा था। हम लोगों की होनी-अनहोनी ठीक ही है। मैं हाबू गुंडे की होनी देख रहा था।"

मन्मथ बाबू ने सतर्कता से अपने चारों तरफ़ देखते हुए कहा, "वह नाम जुबान पर मत लाओ। दीवारों के भी कान होते हैं।"

कमलाक्ष बाबू बोले, "वैद्य, तुम अपने साहस को थोड़ा कम करो। साहसी होना ठीक है, लेकिन अति साहसी होना ठीक नहीं।"

"सारा रा रा ढेक चली जा...ढेक चली जा...ढेक चली जा...!" रातभर देहातियों की बस्ती में फाग का गीत होता रहा। अगले दिन सुबह ही होली थी।

बच्चों ने दो तीन दिन पहले से ही पिचकारी, रंग, अबीर आदि सभी का इंतज़ाम कर रखा था। होली खेलने के लिए जिसके पास जैसे फटे-पुराने कपड़े थे उन्हें बक्सों से ढूँढ़कर निकाला गया। सड़े अंडे जुगाड़ करना, गुब्बारों का बम वगैरह बनाने का काम अब तक ख़त्म हो चुका था। कइयों ने आलू को आधा काटकर उसमें ब्लेड से उल्टा खोदकर 'गधा' लिख दिया था। होली के दिन दो-चार सम्पन्न घरों में होली खेलने आये व्यक्तियों का मुँह भी मीठा कराया जाता था। इस बार कौन क्या खिलायेगा कुछ लोग इसी बात पर बहस कर रहे थे।

मन्मथ बाबू का पोता भुतुम बहुत शैतान लड़का था। उसने अपने अबीर में चोरी-चोरी मिर्च की बुकनी मिला दी थी। अंडे का खोल इकट्ठा करके उसमें लाल पेटवाली चींटियाँ भर दी थीं। उन अंडों को जिसे फेंककर मारता, वह रंग से तर भले न होता, चींटियों के काटने से उसकी हालत ख़राब हो जाती थी। इसके अलावा उसने अपने रंग की बाल्टी में कच्चे गोबर की मिलावट भी कर दी थी। साथ में तारकोल की डिबिया भी थी।

भुतुम के साथ होली खेलने की बात दूर रही वैसे भी कोई उसके साथ खेलना पसंद नहीं करता था। उसके जैसा शैतान लड़का कस्बे में और दूसरा नहीं था। सिर्फ़ प्राण नाम का एक और लड़का था जो भुतुम जितना शैतान न होने पर भी कम शरारती नहीं था। प्राण भुतुम का जिगरी दोस्त था। मगर भुतुम प्राण को भी नहीं बख्शता था। एक बार उसने उसकी जेब में कनखजूरा डाल दिया था।

बुरुन को इस बार होली खेलने के लिए मना कर दिया गया था। उसके पिता ने कहा था, "अगले साल सभी विषयों में अच्छी तरह से पास होने पर और गणित में डिस्टिंक्शन पाने पर ही पहले जैसी मौज़-मस्ती कर पाओगे।"

बुरुन के पिता अक्सर स्कूल में पूछताछ करके बुरुन की उन्नति या अवनति की ख़बर लेते रहते थे। बुरुन के अध्यापक एक ही बात कहते, बुरुन की उन्नति असाधारण है। वह सिर्फ़ फाइनल में ही फ़र्स्ट नहीं होगा बल्कि और भी बहुत कुछ करेगा, जैसे कि ओलम्पिक में कम-से-कम बारह सोने का पदक जीत लायेगा, क्रिकेट में ब्रेडमैन का रिकॉर्ड तोड़ेगा, फुटबाल में बंगाल के गोष्ठ पाल को भी पीछे छोड़ देगा।

बुरुन के पिता इन बातों पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे। मगर यह सुनकर

उन्हें बिल्कुल खुशी न होती हो, ऐसी बात भी नहीं थी। लेकिन खुश होकर वे बुरुन को ढील नहीं देते के। उस पर कड़ा अनुशासन बनाये रखते थे।

होली के दिन सुबह होते-न-होते ही सड़क से लड़कों का शोरगुल सुनायी पड़ने लगा। बच्चे रंग डालने के लिए एक दूसरे के पीछे दौड़ रहे थे। वे खूब हँस रहे थे। शोर मचा रहे थे।

बुरुन उस वक़्त अपने पढ़ने के कमरे में बैठकर अपने दाँतों को भींचकर गणित के सवाल लगा रहा था। आजकल दिन भर में उसे गणित के बीस सवाल हल करने पड़ते थे। कराली बाबू के दिये हुए बम जैसे सवाल होते थे वे। उसे समझना ही मुश्किल था। परसों तक इन सारे सवालों को बुरुन बड़ी आसानी से हल कर लेता था। दरअसल यह बुरुन नहीं करता था, बुरुन के हाथों से उन्हें निधिराम हल कर देता था। लेकिन कल से निधिराम लापता था। यहाँ तक कि जो सब नये शिक्षार्थी भूत निधिराम के दूत के रूप में अगल-बग़ल घूमते रहते थे उनमें से भी किसी का पता नहीं चल रहा था। काफ़ी बुलावा भेजने पर कल दोपहर को थोड़े समय के लिए निधिराम आया था। उसके पूरे शरीर में मिट्टी लगी हुई थी, दोनों आँखें बेचारगी से भरी थीं, पसीने-पसीने हो रहा था वह। उसने कहा, ''कुछ मत पूछो ! गोसाईं बागान के जंगल की सफ़ाई कर रहा हूँ। हाबू उस्ताद आ गये हैं न। आते ही हुक्म के बाद हुक्म दिये जा रहे हैं। काम क्या इतना आसान है ? बिच्छू पौधे का जंगल अगर साफ़ करना पड़ता तब समझते।''

बुरुन रुआँसा होकर बोला, ''तुम्हारी अनुपस्थिति में मेरे कठिन सवाल, अनुवाद वगैरह कौन करेगा निधि दा ?''

निधिराम गंभीर होकर बोला, देखो बुरुन, जितना मैंने किया वह किया। अब यह सब बातें भूल जाओ। अब मेरा साथ ज़्यादा नहीं पाओगे। अब अपने पैरों पर खड़े होना सीखो।''

बुरुन ने लालच दिखाते हुए कहा, ''मैं अब तुमसे ज़रूर डरूँगा। यह वादा रहा।''

निधि राम ने हँसते हुए कहा, ''इस वक़्त अब किसी को डराने का समय नहीं है। खुद गोसाईं बाबा भी हाबू के कमरे में झाड़ू लगा रहे हैं। दम लेने की फ़ुर्सत नहीं है। तुम आखिर कितना डरोगे ? हमलोग जितना हाबू से डर रहे हैं वह कहने की बात नहीं है।''

बुरुन ने कहा, ''हाबू के हुक्म पर तुम कुछ भी कर सकते हो निधि दा ?''

निधिराम हँसते हुए बोला, "भाई, क्या सब कुछ किया जा सकता है ? हम लोगों का शरीर हवा का बना है । इसलिए हवा के ज़ोर से जो कुछ करना संभव है, वही हम लोग करते हैं ।"

बुरुन ने कहा "अगर हाबू मेरे दादाजी राम वैद्यजी की गर्दन मरोड़ने को कहे तो क्या तुम ऐसा ही करोगे ?"

निधिराम वैद्यजी का नाम सुनते ही झट से हवा में ग़ायब हो गया । बुरुन भौंचक्का रह गया । काफ़ी देर तक सोचने के बाद उसने पाया कि निधिराम के सामने अपने दादाजी का नाम लेना ठीक नहीं हुआ था । राम नाम को झेल पाना किसी भी भूत के लिए आसान नहीं होता ।

बस उस दिन निधिराम गया तो फिर काफ़ी बुलावा भेजने पर भी नहीं आया । इसलिए कल से बुरुन को अपने गणित का काम, अनुवाद वगैरह खुद ही करना पड़ रहा था । कल कराली सर के यहाँ पढ़ते वक़्त बुरुन बड़ी मुश्किल में पड़ गया था । कराली बाबू उससे जो भी पूछते उसे न बता पाने के कारण बुरुन मुँह बाये बैठा रहा । कराली सर बड़ी हैरत से बेले, "यह क्या बुरुन ? मैंने सोचा था । कि तुम आइन्स्टीन की तरह कुछ बनोगे । कल भी तुमने एक से एक कठिन सवाल हल कर के मात दिया था ।"

कल बुरुन स्कूल में ट्रांसलेशन भी नहीं कर पाया था । भूगोल की कक्षा में उसने ग़लती की थी । छुट्टी के वक़्त खेलते समय शून्य रन पर आउट हो गया था । गेंदबाज़ी भी उसने बहुत घटिया की थी । उसकी अवनति देखकर गेम सर तक हैरत में पड़ गये थे ।

इसलिए आज बुरुन उदास था । पढ़ने की मेज़ के सामने ही खिड़की थी । वहाँ से सड़क नज़र आती थी । एक भी सवाल हल न कर पाने के कारण बुरुन बड़े अनमने भाव से बैठा बाहर की ओर देख रहा था । आज होली का दिन था । सभी रंग खेल रहे थे । उसे खेलने की मनाही थी । ऊपर से निधिराम उसे छोड़कर चला गया था । हाबू गुंडा उसके दादाजी से बदला लेने के लिए वापस लौट आया था ।

बुरुन बैठे-बैठे यह ही सब सोच रहा था । ठीक इसी समय खिड़की से एक रंग से पुते हुए चेहरे ने झाँका । बुरुन के सावधान होने के पहले ही एक मुट्ठी मिर्च वाली अबीर उसके आँख-मुँह पर आकर लगी । गणित की कापी-किताब गोबर घुले मेजेन्टा रंग में तैरने लगी । साथ ही चींटियों से भरपूर एक खोखला अंडा

आकर उसके माथे पर फूटा, जिसमें से चींटियाँ निकलकर उसके सारे बदन में फैल गयीं।

मिर्च की जलन और चींटियों के काटने से क्षण भर में ही बुरुन बदहवास होकर उछलने लगा। गुस्से से वह आगबबूला हो गया। 'निधिदा', 'निधिदा' कहकर कई बार चिल्लाने के बाद उसे याद आया कि निधिराम हाबू की बेग़ारी में लगा है, वह आ नहीं पायेगा। इसलिए भुतुम को पकड़ने के लिए बुरुन एक ही छलांग में कमरे से निकल कर बाहर सड़कर पर आ गया।

भुतुम भाग रहा था। उसके पीछे दौड़ते हुए बुरुन ने सोचा, "कब तक दौड़ेगा, अभी उसे पकड़ता हूँ।"

लेकिन स्पोर्ट्स में उसने जिस तरह विश्व कीर्तिमान बनानेवाली दौड़ लगाई थी इस वक़्त वैसी दौड़ तो थी ही नहीं, उल्टे जल्दी ही वह हाँफने भी लगा। रास्ते में बच्चे चिल्लाकर उसे शाबाशी दे रहे थे। उन लोगों ने सोचा था, वह क़स्बे का अव्वल खिलाड़ी है, जिससे अकेले ही ओलम्पिक से दर्जन भर सोने का पदक जीत लाने की उम्मीद थी, वह पलक झपकते ही अभी भुतुम को जा पकड़ेगा।

लेकिन आज ऐसा नहीं हुआ। भुतुम बड़ी आसानी से काफ़ी दूर पहुँच जाने के बाद पलटकर बुरुन को अँगूठा दिखाकर चिढ़ाने लगा। साथ ही हँसने भी लगा।

बुरुन मुँह लटकाकर लौट रहा था कि बीच रास्ते में लड़कों की एक टोली ने उसे पकड़कर उस पर अच्छी तरह से रंग पोत दिया। बुरुन ने उन्हें हटाने के लिए पूरी ताक़त लगा दी पर वह सफल नहीं हो पाया। लेकिन अभी परसों तक उसके शरीर में सात हाथियों का बल था, किसी लड़के की उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं होती थी।

रंग से पुता हुआ बुरुन असहाय होकर कुछ देर तक खड़ा रहा। लड़कों की एक और टोली ने आकर पिचकारी से उसे नहला दिया। किसी ने उस पर सड़ा अंडा भी फेंका। यह सब होने के बाद फिर बुरुन घर नहीं लौटा। उन लड़कों की टोली में शामिल होकर गली-मोहल्लों में रंग खेलने के लिए निकल पड़ा।

होली की शुरूआत अबीर से हुई थी। इसके बाद रंग। फिर अलकतरा, कीचड़ और गोबर। रंग से पुतकर सभी भूत नज़र आने लगे। अंत में ऐसी हालत हुई कि कोई किसी को पहचान ही नहीं पा रहा था। सड़कों पर सभी स्वांग बने घूम रहे थे, मगर कोई भी पहचान में नहीं आ रहा था।

बुरुन उन रंग से पुते चेहरों के बीच भूतुम को ढूँढ़ रहा था। और किसी

बात के लिए न, सिर्फ़ भुतुम को पकड़कर उसके दोनों कानों को अच्छी तरह मलक दा थप्पड़ जमाने के लिए। बहुत शैतान हो गया था वह।

काफी ढूँढ़ने के बाद भूतुम उसे बकुलतला के पास नज़र आया। नाली से कीचड़ उठाकर वह लोगों पर फेंक रहा था। बुरुन ने जाकर उसका एक कान पकड़कर उसके सिर पर एक ज़ोरदार चाँटा मारते हुए कहा, "सुबह-सुबह मिर्च की बुकनी वाला अबीर फेंककर बड़ी बहादुरी दिखायी थी न। अब ?"

भुतुम बुक्का फाड़कर रोता हुआ बोला, "ठहरो, अपने बड़े भैया को बुलाता हूँ। बिशुदा, तुमने कल भी थप्पड़ मारा था और मेरी गोटियाँ छीन ली थीं।"

बुरुन को अपनी ग़लती पर पछतावा हुआ। वह भुतुम नहीं था, चौथी कक्षा का हरदम रोनेवाला लड़का फूचू था। हालाँकि फूचू ने भी उसे पहचाना नहीं था, उसे बिशु समझ लिया था। बुरून वहाँ से झटपट खिसक गया।

आखिरकार बुरुन को भूतुम कुम्हार टोले में मिला। रंग की बाल्टी में वह मिट्टी का तेल मिला रहा था। बुरुन ने जाकर खप्प से उसका हाथ पकड़कर कहा, "भुतुम ! अब बचकर कहाँ जायेगा ? सुबह-सुबह बड़ी..."

भुतुम ने हैरत से उसे देखकर कहा, "देख मोना ! दुबारा मज़ाक़ करेगा तो मैं उस दिन की तरह गुलेल से मारूँगा। हमारे मुहल्ले के लड़के को लँगड़ी मारने के बाद उस दिन इतना पीटे जाने पर भी तुझे शर्म नहीं आयी ?"

इतना कहकर उसने जैसे ही अपनी जेब से गुलेल निकालकर निशाना लिया कि बुरुन जान बचाकर भागा। पीछे से एक कंकड़ आकर उसकी रीढ़ की हड्डी पर ठन्न से लगा। पहले की बात होती तो निधि दा उस कंकड़ का रुख़ दूसरी ओर बदल देता। लेकिन निधिराम तो आज नहीं था।

भुतुम को ढूँढ़ने के चक्कर में इस तरह कई बार गलत भुतुम से बुरुन का सामना हुआ। हालाँकि उनमें से भी कोई बुरुन को पहचान नहीं पाया।

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आखिरकार परेशान होकर बुरुन ने रथतला में एक जामुन के पेड़ के नीचे एक सीधे-सादे लड़के को खड़ा हुआ देखा। बेचारा लड़का रंग से नहाया हुआ चुपचाप खड़ा था। उसके हाथों में न कोई पिचकारी थी और न कोई जंगली रंग ही था। सिर्फ़ थोड़ी-सी अबीर थी। बुरुन ने उसके पास जाकर पूछा, "सुनो भाई, नोआपाड़ा के भुतुम को तुमने कहीं देखा है ?"

उस लड़के के मुस्कराते ही उसके लाल-नीले दाँत झलक गये। उस लड़के ने बहुत शांत होकर कहा, "हाँ देखा है। लेकिन ज़रा बताओ तो तुम हो कौन ?"

"मैं बुरुन हूँ ।"

"ओह चैम्पियन ! तुम तो यहाँ के गौरव हो । हमारे घर में तुम्हारी चर्चा होती रहती है। आओ, ज़रा तुम्हें अबीर लगा दूँ। लगाऊँ न, बुरा तो नहीं मानोगे ?"

उसके इतने भद्र और अच्छे व्यवहार से बुरुन मुग्ध होकर बोला, "अपना अबीर क्यों बरबाद करोगे भाई ? मेरे शरीर पर तो अब रंग लगाने की कोई जगह ही नहीं बची ।"

उस लड़के ने दुखी होकर कहा, "मैं भागकर किसी को रंग नहीं लगा सकता इसलिए आज मैं किसी पर रंग ही नहीं डाल पाया ।"

यह सुन कर बुरुन को दया आयी । उसने अपना चेहरा बढ़ाते हुए कहा, "ठीक है, मुझे रंग लगा दो ।"

वह लड़का अपने हाथ के अबीर को बुरुन के चेहरे पर फेंककर भाग खड़ा हुआ । मिर्च की बुकनी वाली अबीर से बुरुन की नाक, मुँह और आँखें जलने लगीं । वह लड़का भागते-भागते ज़ोर से बोला, "बेवकूफ़ बना दिया । मैं ही भुतुम हूँ । मुझे पकड़ नहीं पाये ।"

गुस्से से बुरुन बेकाबू हो गया । वह आँखें पोछते-पोंछते आवाज़ की दिशा में भुतुम को पकड़ने के लिए दौड़ा । उसके पैरों की आहट और उसके गले की आवाज से बुरुन समझ गया कि भूतुम गोसाईं बागान की तरफ़ जा रहा है । शहर का सबसे बढ़िया ताल वहीं पर था । गोसाईं बगान के पास उस विशाल ताल को लोग समुद्र दीघी कहते थे । वह साल भर पानी से लबालब भरा रहता था । ऐसा बढ़िया पानी और कहीं नहीं था । लेकिन काफ़ी दूर और डर की जगह होने के कारण वहाँ नहाने के लिए लोग जाते नहीं थे ।

बुरुन को साफ़ सुनायी पड़ा कि भूतुम दौड़कर समुद्र दीघी में छलाँग लगाते हुए बोला, "कैसा बेवकूफ़ बनाया । मुझे पकड़ नहीं पाये ।"

बुरुन ने भी बिना सोचे समझे जाकर उस दीघी में छलाँग लगा दी । पानी में कुछ देर तक गोते लगाने के बाद उसे धीरे-धीरे साफ़ नज़र आने लगा । तब वह अपने चारों तरफ़ देखता हुआ भुतुम को ढूँढ़ने लगा ।

लेकिन उस ताल में कहीं कोई नहीं था । चारों तरफ़ ठंडा शांत पानी था । कहीं भी बुलबुला तक नहीं उठ रहा था । लेकिन वह ताल इतना बड़ा था कि उसे एक बार में पूरा देख पाना मुश्किल था । बदमाश भुतुम पानी में डुबकी लगाकर तैरता हुआ कहीं दूसरी जगह जा निकलेगा, यह सोचकर बुरुन काफ़ी देर तक

पानी में तैरता रहा। लेकिन भुतुम कहीं नज़र नहीं आया। कहीं वह डूब तो नहीं गया ? लेकिन वह डूबनेवाला लड़का तो नहीं था। आये दिन वह अपने घर के बग़ल वाले तालाब में पड़ा रहता था। चित्त, डुबकी, तिरछी, हर तरह की तैराकी में वह माहिर था। वह साँस भी काफ़ी देर तक रोके रख सकता था। तब फिर भुतुम कहाँ गया ?

उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते बुरुन दक्षिण दिशा के टूटे घाट के क़रीब चला गया। डुबकी लगाकर अपने पैरों से तालाब की गहराई में वह उसे खोजने लगा। अगर भुतुम वाकई डूब गया हो तो नीचे कहीं उसका शरीर तो पड़ा होगा।

अचानक घाट के ऊपर से किसी ने बड़े गम्भीर स्वर में उससे पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

बुरुन ने चौंककर अपने सामने एक जटाजूटधारी आदमी को खड़े हुए देखा। काफ़ी भारी-भरकम चेहरा था उसका। उसने लाल रंग का कपड़ा पहन रखा था और उसी रंग की चादर ओढ़ रखी थी। उसके गले में रुद्राक्ष की माला थी। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी और मूँछें थीं।

बुरुन ने एक डूबी हुई सीढ़ी पर गले तक पानी में खड़े होकर कुछ अटकते हुए कहा, "शायद एक लड़का पानी में डूब गया है। उसे ही ढूँढ़ रहा था।"

वह आदमी कोई साधु-वाधु रहा होगा। उसने बड़ी गम्भीरता से कहा, "इस ताल के पानी से देवी माँ की पूजा होती है, इसीलिए इसमें तैरना मना है। तुम बाहर निकल आओ।"

बुरुन थोड़ा डर गया था। धीरे-धीरे पानी से निकलकर घाट पर खड़े होते ही उस आदमी ने उससे दुबारा पूछा, "कौन हो तुम ?"

बुरुन पानी में भीगने के कारण ठंड से काँप रहा था। उसने उसी तरह काँपते हुए कहा, "मैं बुरुन हूँ, भेलू डाक्टर का लड़का। राम वैद्यजी मेरे दादाजी हैं।"

यह सुनकर उस आदमी का चेहरा पके आम की तरह मीठा हो गया। उसने मुसकराकर कहा, "यह कहो। आओ, आओ, आज होली का दिन है, तुम्हें मुँह मीठा कराऊँ। तुम्हारे पिताजी और दादाजी के साथ मेरी पुरानी जान-पहचान है। चले आओ।"

यह कहकर उस आदमी ने खुद ही आगे बढ़कर बुरुन को बाँहों से पकड़कर उठा लिया। बुरुन समझ गया कि उस आदमी के शरीर में असुरों जैसी ताक़त है।

गोसाईं बागान के झुरमुटों के नीचे से पगडंडी गयी थी। दिन में भी वहाँ अंधेरा छाया रहता था। एक भुतहा वातावरण था वहाँ का। वह आदमी बुरुन का हाथ कसकर पकड़े हुए आगे बढ़ रहा था। बुरुन को यह सब कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। उसने पूछा, "आप कौन हैं ?"

"मैं ?" हो-हो करके हँसते हुए वह आदमी बोला, "मैं एक साधु हूँ। मुझसे डरो मत। कभी इस कस्बे में सभी मुझको हाबू उस्ताद के नाम से जानते थे। अभी भी कोई-कोई पहचानता है। तुम्हारे दादाजी और पिताजी तो अच्छी तरह से पहचान लेंगे।"

बुरुन को जैसे बिजली का झटका लगा। अच्छा, तो यही हाबू उस्ताद है।

गोसाईं बागान के खंडहर के आसपास की जमीन साफ़ हो गयी थी। सभी कमरे साफ़-सुथरे चमक रहे थे। कमरे में पाँच-सात बदमाश जैसे लोग बैठे या लेटे हुए थे। उन सभी की आँखें लाल थीं और बीच-बीच में कर्कश स्वर में 'शिव शम्भू' की आवाज़ लगा रहे थे। अचानक ज़मीन को कँपाते हुए कहीं नज़दीक से ही 'घेऽडाऽम' करके किसी शेर के दहाड़ने की आवाज़ आयी। ऐसी भयानक आवाज़ बुरुन ने पहले कभी नहीं सुनी थी।

उसके काँपते ही हाबू उस्ताद ने कहा, "डरने की ज़रूरत नहीं है। वह मेरा पालतू शेर है। इतने दिनों तक वह जंगल में था। मेरे लौटने की ख़बर पाकर वह शेर भी वापस लौट आया है।"

बुरुन बहुत डर गया था। उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "मुझे छोड़ दीजिए। मैं घर जाऊँगा।"

हाबू ने हँसते हुए उसकी पीठ पर हाथ फेरकर कहा, "जाओगे, ज़रूर जाओगे। तुम्हें ज़रा मिठाई खिला दूँ। इस जगह को थोड़ा घूम-फिर कर देख लो। शायद यह जगह तुम्हें इतनी पसंद आ जाए कि तुम्हें अपने घर लौटने की इच्छा ही न हो।"

बुरुन ने हाबू से अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा, "नहीं, नहीं ! मैं घर जाऊँगा।"

अचानक हाबू ने उसकी आँखों पर हाथ फेरकर बहुत धीमे स्वर में कहा, "ऐसी सुन्दर जगह छोड़कर कहाँ जाओगे ?"

अपनी आँखों पर हाथ फेरे जाते समय बुरुन ने आँखें बंद कर ली थीं। आँखें खोलते ही चकित होकर वह देखता ही रह गया। न वहाँ कोई खंडहर था।

न कहीं कोई जंगल था, उसने देखा एक सुन्दर बगीचे में वह खड़ा था। चारों तरफ़ ढेरों फूल खिले हुए थे, मीठी सुगंध फैली हुई थी। पेड़ों पर कोयल, मैना, गौरैया आदि चिड़ियाँ बोल रही थीं। फूलों पर नन्हीं तितलियों की तरह परियाँ उड़ती फिर रही थीं। वहाँ एक छोटी नदी कलकल करती हुई बह रही थी। पक्के घाट पर एक रंगीन नाव बँधी हुई थी। वहाँ की सारी चीज़ें छोटे-छोटे खिलौनों की तरह थीं। लेकिन सब बड़ी सुन्दर लग रही थीं। वहाँ के आकाश का रंग हरा था। रंग के डिब्बे में जितने तरह के रंग होते हैं, उतने तरह के विभिन्न आकार के रंगों वाले बादल आसमान में तैर रहे थे। कोई-कोई बादल बहुत नीचे आकर लगभग सिर को छूता हुआ गुज़र जाता था। उन बादलों पर बैठने की छोटी-छोटी खूबसूरत गद्दियाँ थीं। एक बादल ने उसके पास आकर कहा, "बुरुन, मुझ पर बैठोगे? चलो तुम्हें घुमा लाऊँ।"

मंत्रमुग्ध होकर बुरुन बादल पर सवार हो गया। साबुन के फेन जैसी मुलायम गद्दी पर बैठकर वह धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा। बहुत ज़्यादा ऊँचाई पर नहीं, ज़्यादा से ज़्यादा यही कोई तिमंज़िले मकान की उँचाई तक पहुँचकर बादल बुरुन को लेकर आगे बढ़ने लगा।

थोड़ी ही दूर पर एक छोटा पहाड़ था, जिसके शिखर पर बर्फ़ जमी हुई थी। पहाड़ के पीछे सूरज डूब रहा था। बड़े आश्चर्य की बात थी। इस सूरज का चेहरा बिल्कुल किसी हँसते-मुस्कराते आदमी के चेहरे की तरह था। उसके भी नाक, कान, आँखें और ओंठ थे। बुरुन को देखकर सूरज ने कहा, "तुम्हारा हुक्म मिलने पर ही मैं उगूँगा और डूबूँगा।"

बुरुन चकित होकर देखने लगा। इसके बाद बोला, "तुम थोड़ा रुको। मैं सब कुछ अच्छी तरह से देख लूँ। इसके बाद अस्त हो जाना।"

बादल ने कहा, "सूरज के डूब जाने के बाद भी यहाँ अँधेरा नहीं होता। चंदामामा हैं, इतने सितारे हैं, सपनों का उजाला है।"

बादल ने उसे एक छोटे-से रेलवे स्टेशन के पास उतार दिया। स्टेशन की इमारत कई रंगों से रँगी थी। प्लेटफार्म पर पीली मोरम बिछी हुई थी। एक छोटे से रंगीन लालटेन से हरा-लाल-नीला प्रकाश निकल रहा था। एक नन्हीं-सी ट्रेन खड़ी होकर सुस्ता रही थी। बुरुन ने उस ट्रेन की खिड़कियों में बड़े विचित्र और मज़ेदार चेहरे देखे। एक खिड़की पर उसे डोनाल्ड डक नज़र आया, दूसरी खिड़की पर टिनटिन और कैप्टन को आमने-सामने बैठकर किसी छिपे ख़ज़ाने के नक्शे

में डूबे हुए देखा, टिनटिन के कुत्ते कुट्टूस ने एक बूढ़ी डाइन का पीछा करके उसे एक दूसरे डिब्बे में चढ़ने को मजबूर कर दिया। उसने एक कंपार्टमेंट की खिड़की पर भुतुम को बैठे हुए देखा। लेकिन भुतुम से लड़ाई होने के कारण बुरुन ने झट से अपनी आँखें फेर लीं। टिंग टिंग करके मधुर घंटी बजते ही गार्ड साहब ने सीटी बजाकर गाड़ी छूटने का संकेत दिया और बुरुन की ओर देखते हुए बोले, ''झटपट सवार हो जाओ।'' गार्ड का चेहरा देखकर बुरुन तो हैरत में पड़ गया। वह फैंटम का नाटा साथी गुरुन था।

बुरुन एक डिब्बे में सवार हो गया। उसने खिड़की पर बैठकर देखा कि लोक कथाओं के देश की तरह खूब सुन्दर एक देश के भीतर से होकर गाड़ी जा रही थी। सभी कुछ छोटे-छोटे बड़े मनोहारी रंग के थे।

जिस डिब्बे में बुरुन सवार हुआ, उसमें ढेरों खिलौने बैठकर बिस्कुट खाते हुए बड़े महीन स्वर में आपस में बातें कर रहे थे। खिलौना कुत्ता इधर-उधर पुफ-पुफ करके भौंकता हुआ घूम रहा था। खिलौना बाघ दहाड़ रहा था। खिलौना हाथी एक खिलौना बंदर को अपनी सूँड़ मे उठाकर झुला रहा था।

गाड़ी एक जंगल के किनारे के छोटे-से स्टेशन पर रुकी। स्टेशन का नाम था– 'पिकनिक'। गुरुन ने आकर सभी से कहा, ''सब यहाँ उतर जाओ। यहाँ आज पिकनिक मनेगी।''

बुरुन उतरकर सभी के साथ जंगल में गया। बड़ा सभ्य और भव्य जंगल था वह। उसमें कहीं भी काँटे नहीं थे। बिच्छू पत्ते नहीं थे। चारों तरफ़ सुन्दर पेड़, फूल और चिड़ियाएँ थीं। छोटे-छोटे शेर, सिंह, हाथी और गैंडे घूम-फिर रहे थे। रंग-बिरंगे साँप अपनी धुन में मस्त थे। उन्हें देखकर ज़रा भी डर नहीं लगता था। बुरुन ने एक शेर की पीठ पर हाथ फेरा। एक साँप को उठाकर उसे थोड़ा प्यार करके छोड़ दिया।

दिन का प्रकाश खत्म होने को ही नहीं आ रहा था। सूरज पहाड़ के पीछे रुका हुआ था। और उस मनोहर ठंडे प्रकाश में जंगल के बीच अँधेरे-उजाले में डोनाल्ड डक, टिनटिन, गुरुन, बुढ़िया डाइन, खिलौने और जंगली जानवरों ने मिलकर हुल्लड़ मचाते हुए जैसी पिकनिक की, उस मज़े का बयान नहीं किया जा सकता। भुतुम ने जाकर अनुनय-विनय करते हुए कहा, ''बुरुन दा! कल अबीर लगाकर बहुत ग़लत काम किया था मैंने। अब ऐसा नहीं करूँगा। कान पकड़ता हूँ।''

बुरुन ने गम्भीर होकर कहा, "और चींटियाँ ?"

"हाँ, यह ग़लती भी हो गयी। यह देखो, दस बार कान पकड़कर उठ-बैठ रहा हूँ। अब तो दोस्ती कर लो।"

भुतुम को सुधरते देखकर बुरुन को बड़ी खुशी हुई। उसने उससे दोस्ती कर ली। इतना सुन्दर देश छोड़कर अब बुरुन को कहीं भी नहीं जाना था। उसने मन -ही-मन यह फ़ैसला कर लिया।

# 8

दोपहर ढल कर शाम होने जा रही थी। बुरुन और भुतुम को ढूँढ़ने के लिए जिन लोगों को चारों तरफ़ भेजा गया था, वे सभी निराश होकर लौट आये।

यह ख़बर सुनकर मन्मथबाबू बीमार पड़ गये; और राम बाबू लगातार हुक्का गुड़गुड़ाने लगे। दोनों परिवारों में रोना-धोना मच गया।

शाम की आख़िरी डाउन रेलगाड़ी भी स्टेशन से गुज़र गयी। उसकी कू-झिक-झिक की आवाज़ ख़त्म होते न होते ही पूरा वातावरण शेर की घेऽ डाऽम् की दहाड़ से काँप उठा। एक बार ! दो बार ! तीन बार ! और ठीक उसी वक़्त पूनम का चाँद आकाश में पीली रोशनी फैलाता हुआ निकल आया। लेकिन उस चाँदनी में चारों तरफ़ का वातावरण बहुत भुतहा नज़र आ रहा था।

कस्बे की हर सड़क सूनी थी। कहीं पर एक भी आदमी नहीं था। रास्ते में कुत्ते-बिल्ली तक नहीं थे। हर घर का दरवाज़ा अंदर से बन्द था। बाहर हड्डियों को कँपानेवाली ठंडी हवा बह रही थी।

राम वैद्यजी अपनी दुकान में अकेले बैठे हुए थे। रोज के बैठकी जमाने वालों में से आज कोई नहीं आया था। चारों तरफ़ ख़ामोशी छायी हुई थी। राम वैद्यजी चिंता में डूबे हुए हुक्का गुड़गुड़ाये जा रहे थे। सोचते-सोचते अचानक वे खुद ही से कह पड़े, "हूँ ! तो यही बात होगी।"

उन्होंने जैसे ही यह बात ख़त्म की, आले पर रखी शीशी-बोतलें खड़खड़ाकर

हिल उठीं। राम वैद्यजी ने चकित होकर अपने चारों ओर देखा। सोचा, शायद यह उनका वहम होगा। इसके बाद फिर एक गहरी साँस लेकर बोले, "हूँ! तो फिर यही बात होगी।"

उनके कहने के साथ ही दुबारा सभी शीशी-बोतलें आपस में ठनठन करके टकरा गयीं।

राम वैद्यजी जानते थे कि घबड़ा जाने या उत्तेजित होने से कभी भी कोई काम नहीं बनता। वैसे भी वे कोई डरपोक आदमी नहीं थे; क्योंकि जो लोग सच्चे और अन्याय से दूर रहनेवाले होते हैं उन्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती। वे अपने जी को कड़ा करके अपने इष्टदेव का जाप करने लगे। जाप करते-करते ही वे बोले, "कौन ? क्या चाहते हो ?"

दरवाज़े की आड़ से किसी ने नकियाते हुए कहा, "अपना जाप बंद कीजिए तभी तो मैं नज़दीक आऊँगा।"

राम वैद्यजी ने अपना जाप रोककर कहा, "अब कहो।"

वह नकिआया हुआ स्वर आड़ से निकलकर कमरे के बीच में चला आया। लेकिन राम बाबू को कोई भी नज़र नहीं आया। हवा में से एक आवाज़ आयी, "मुझसे डरिए मत। हम सभी बुरुन के दोस्त हैं। मेरा नाभ नकियासुर है।"

"बुरुन कहाँ है ?"

"गोसाईं बागान के तलघर में। समुद्र दीघी के दक्षिण के घाट में पानी के नीचे छह नम्बर की सीढ़ी में जो दरार है, वहाँ जाने का वही सबसे आसान रास्ता है। पानी में डुबकी लगाकर दरार में घुसकर दस क़दम चलते ही रास्ता मिल जायेगा। वह रास्ता सीधे तलघर को ही जाता है। वहाँ पर बुरुन और भुतुम दोनों ही मौजूद हैं।"

"वहाँ जाया नहीं जा सकता ?"

"क्यों नहीं जाया जा सकता ? इसके लिए तरीक़ा है। लेकिन वहाँ जाने से कोई लाभ नहीं होगा। वे लोग वहाँ से आना ही नहीं चाहते।"

"यह क्या कह रहे हो ?"

"जी यही ख़बर तो देने आया था। हाबू ने अपने वशीकरण मंत्र से उन्हें रोक रखा है। हम लोगों से भी मंत्र के बलबूते पर दिन-रात काम लेता रहता है। ज़रा भी आराम करने नहीं देता। पूरे शरीर में दर्द हो गया है। वैद्यजी आपके पास इस दर्द को दूर करने की दवा है क्या ?"

'है । मगर वह आदमियों के लिए है । तुम्हें वह दवा क्या फ़ायदा पहुँचायेगी ?''

''तो फिर जल्दी ही हम लोगों के लिए भी कोई दवा बना दीजिए ।''

राम वैद्यजी कुछ सोचने लगे । बोले, ''काम इतना आसान नहीं है भाई ! पहले यह सोचकर देखना होगा कि जब तुम लोगों का शरीर ही नहीं है तब बीमारी कहाँ होती है । नाड़ी की गति से कुछ समझूँ तो इसका भी उपाय नहीं है । इसके बाद यह भी परेशानी है कि तुम लोगों का पेट नहीं होता इसलिए दवा पेट में पहुँचकर अपना असर नहीं दिखा पायेगी । तुम लोगों के शरीर में मालिश भी नहीं चलेगी । इसलिए तुम लोगों के लिए कोई हवाई दवा तैयार करनी पड़ेगी । यह काम बहुत मुश्किल है । लेकिन मैं कोशिश करूँगा ।''

नकियासुर खुश होकर बोला, इससे हम लोगों का बड़ा उपकार होगा वैद्यजी ! हम लोगों की बात तो कोई सोचता ही नहीं । इस हाबू बदमाश को ही लीजिए । यहाँ आने के बाद से हम लोगों से कैसा अमानवीय काम करवा रहा है ! बिच्छू पत्ते का जंगल साफ़ करो, कँटीले पेड़ उखाड़ो, कमरे की सफ़ाई करो, ताल की जलकुंभियाँ साफ़ करो, इसे लाओ, उसे ख़बर दो, उसको पकड़ के ले आओ, बेगार का कोई अंत नहीं है । बस हरदम नचाये जा रहा है । मुझे जब भी कभी मौक़ा मिलेगा तो मैं सबसे पहले उसकी गर्दन तोड़ डालूँगा ।''

उत्साहित होकर राम वैद्यजी बोले, ''सचमुच तोड़ोगे ?''

''वही तो कह रहा हूँ । हालाँकि हाबू की गर्दन तोड़ना आसान काम नहीं है । उसने हमें मंत्र बल से चारों तरफ़ से बाँध रखा है । इच्छा होने पर भी कुछ किया नहीं जा सकता । मगर इससे आप यह मत समझियेगा कि हम सभी खुशी-खुशी हाबू का हुक्म मान रहे हैं । मौक़ा पाते ही हम लोग काम में कोताही बरतते हैं । एक क्षण का काम करने में तीन दिन लगा देते हैं, तीन दिनों का काम तीन महीने में पूरा करते हैं । पिछले साल हाबू की कालीपूजा में फटिकबाबू ने चंदा नहीं दिया था इसलिए हाबू ने मुझे बुलाकर गुस्से से कहा था, 'जाओ, जाकर फटिक की मूँछें उखाड़ लाओ ।' जानते हैं मैंने क्या किया ? फटिक बाबू की मूँछों के बदले उनके बकरे की दाढ़ी उखाड़ कर ले गया । पहले तो हाबू समझ नहीं पाया था, फिर जब उसे पता चला तब उसने मुझे बेदम मारा था । मैंने अपना सिर खुजलाते हुए कहा था, 'जी, अंधेरे में ठीक से समझ नहीं पाया था ।' उसे फिर से मारने के लिए देखकर मैंने कहा, 'जी मुझे ठीक से सुनायी नहीं दे रहा है ।

बूढ़ा हो रहा हूँ न, इसलिए फटिक के बदले फटिक का बकरा और मूँछों की जगह दाढ़ी सुन लिया था।' लेकिन वैद्यजी इनसानों का भला नहीं करना चाहिए। यह जो फटिक बाबू का मैंने उपकार किया था, उसके बदले फटिक बाबू ने न जाने मुझे कितना अभिशाप दिया। कहा था, जिसने मेरे बकरे की दाढ़ी उखाड़ ली है उसका नाश हो जाए। वह नरक में जाए। नरक में यमदूत उसे दस हज़ार साल तक उबाल कर, फिर दस हज़ार साल तक तल कर, फिर दस हज़ार साल तक धूप में डाल कर उसे सुखाया जाए।''

वैद्यजी ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा, ''दुखी मत हो ! फटिक समझ नहीं पाया था। मैं उसे समझा दूँगा। भैया नकियासुर, तुम नाराज मत होना।''

यह कहकर वैद्यजी ने उठकर एक काग़ज़ की पुड़िया में थोड़ा कपूर, गंधक, मंगरेला, इलायची चूर्ण, हींग तथा और भी कई प्रकार का चूर्ण मिलाकर मेज़ पर रखते हुए कहा, ''इसे ले जाओ। शरीर में दर्द होने पर या थकान होने पर इसे सूँघ लेना। एक शीशी आयुर्वेदिक सुँघनी भी ले जाओ। इस आले में रखी है। अगर इससे फ़ायदा हो तो मैं भूतों के लिए और भी कई प्रकार की दवाएँ बनाना शुरू कर दूँगा और उस नयी चिकित्सा विधि का नाम दूँगा–भूत आयुर्वेद।''

अपना हवाई हाथ बढ़ाकर नकियासुर ने पुड़िया उठा ली। वैद्यजी ने देखा वह पुड़िया शून्य में तैर रही थी। एक ज़ोरदार साँस खींचने की आवाज़ आयी। इसके बाद एक ज़ोरदार छींक ! नकियासुर कहने लगा, ''आह ! बड़ा आराम हुआ है वैद्यजी ! शरीर का दर्द जैसे छींक के साथ ही बाहर निकल गया। ज़बरदस्त दवाई है।''

राम वैद्यजी खुश होकर बोले, ''दवा के लिए अब चिंता मत करना। आजकल लोग वैद्यों के पास आना नहीं चाहते। अनाड़ी एलोपैथिक डाक्टरों के दरवाज़े पर धरना देते हैं। इसलिए अब आदमियों का इलाज करने में मेरी भी रुचि नहीं रह गयी है। बेहतर होगा कि अब मैं भूतों का ही इलाज शुरू कर दूँ।''

नकियासुर ने एक बार और छींकते हुए कहा, ''जो आज्ञा !''

राम बाबू ने बड़े प्रेम से पूछा, ''अब ज़रा कहो भैया नकियासुर, उन दोनों लड़कों का उद्धार कैसे करूँ ?''

नकियासुर डरते-डरते बोला, ''अरे बाप रे ! उद्धार करना तो बड़ा मुश्किल है वैद्यजी ! अगर किसी तरह से उद्धार कर भी लें तो उन्हें बचा पाना बड़ा मुश्किल होगा।''

रामबाबू ने चिंतित होकर पूछा, "फिर उपाय क्या है ?"

"अगर किसी तरह बुरुन अपने मन के ज़ोर से वशीकरण मंत्र को काट दे, तभी उसका उद्धार हो सकता है। बाहरी व्यक्ति इसमें कुछ भी नहीं कर सकता। जो करिएगा, सोच-समझकर करियेगा... आक्... आक्... आक् छीं ! आपकी दवा से बड़ा फ़ायदा हुआ वैद्यजी !"

रामबाबू बड़ी तृप्ति से बोले, "होगा कैसे नहीं ? मैं ठहरा विख्यात राम वैद्यराज ! मैं मुर्दे में भी जान डाल सकता हूँ।"

लेकिन इस बात को ख़त्म करने के पहले ही वैद्यजी समझ गये कि पुड़िया समेत नकियासुर सटाक से खिसक गया है। रामबाबू के उसे बार-बार बुलाने के बावजूद कोई जबाव नहीं मिला। "ऐसा क्या हो गया भाई ?" कहकर राम वैद्यजी सोच में डूब गये। इसके बाद उन्हें ख़याल आया, अचानक ही उन्होंने बेख़्याली में नकियासुर के सामने अपना नाम ले लिया था। यह नाम उन्हें नहीं सहता। मन-ही-मन उन्होंने तय किया कि भूतों का इलाज़ अगर उन्हें करना ही हो तो किसी भी तरह उनके सामने अपना नाम लेना ठीक नहीं होगा।

## ९

करालीबाबू होली की चाँदनी रात को अपने घर के सामनेवाली सड़क पर चहलक़दमी कर रहे थे। एक बड़े कठिन रूटओवर को हल करने के लिए वे सुबह से ही कोशिश कर रहे थे। मगर वे कर नहीं पाये। करते भी कैसे ? दिन भर कस्बे के बच्चे-बूढ़े हो-हुल्लड़ मचाकर रंग खेल रहे थे। ऐसे शोर-गुल में भला सवाल हल किया जा सकता था ? सवाल हल नहीं कर पाने से कराली सर का सिर गर्म होकर तपने लगा था। अकसर ऐसा ही होता है। और सिर में गर्मी चढ़ने पर क्या जाड़ा, क्या गर्मी, क्या दिन, क्या रात कराली सर तालाब के पानी में घंटों गले तक डूबे बैठे रहते थे। और इस आदत के कारण ही कराली सर अनजाने में ही काफ़ी कुशल तैराक हो गये थे। चाहने पर बड़े आराम से पाँच-सात-दस मिनट तक वे पानी के अंदर साँस रोककर बैठे रह सकते थे। यह कहना ही पड़ेगा कि अगर कराली सर तैरने की किसी प्रतियोगिता में उतरें तो उन्हें हरा

पाना बहुत कठिन होगा।

ख़ैर, जो भी हो, आज कराली सर का रूटओवर का सवाल हल नहीं हो पाया। साँझ तक तालाब में डूबे रहने के बाद अब जाकर उनका दिमाग़ ठंडा हुआ था। सड़क पर चहलक़दमी करते हुए वे गोल चाँद की ओर देखते हुए शून्य संख्या की बात सोचने लगे। वे यह सोचकर चकित हो रहे थे कि शून्य जैसी रहस्यमय चीज़ और कोई नहीं है। वास्तव में देखा जाए तो यह शून्य या ज़ीरो ही सारी संख्याओं का मूल स्रोत है। इस दुनिया के किसी भी संख्या-शास्त्र के मूल में यह शून्य ही है।

चारों तरफ़ चाँदनी में नहाये पेड़-पौधे, धरती-आसमान सब कितने सुन्दर लग रहे थे। इन सबके पीछे भी एक प्रोपोर्शन या अनुपात था। आकाश कितना स्वच्छ रहे, चाँदनी कितनी फैलो, कितने पेड़-पौधे या कितनी धरती रहने पर कितने सौन्दर्य की सृष्टि होगी, क्या इसके पीछे कोई गणित नहीं है ?

असल में आकाश, हवा, चाँदनी या अँधेरा सभी में गणित समाया है। यह सब सोचते हुए कराली सर रोमांचित हो गये।

ठीक इसी वक़्त हवा को चीरती हुई, चाँदनी को कँपाती हुई किसी शेर की दहाड़ सुनायी पड़ी— 'घे ऽ ड़ा ऽ म् ।' एक बार ! दो बार ! तीन बार !

लोग 'शेर -शेर' कहकर चिल्लाते हुए दौड़कर अपने घरों में घुस गये। कराली सर थोड़ा-सा चौंके, लेकिन घबड़ाये नहीं। सिर्फ़ मन-ही-मन बोले, "साउंड ! साउंड मीन्स वाइब्रेशन। एंड वाइब्रेशन मीन्स एनर्जी।"

काफ़ी सोच-विचारकर कराली सर ने पाया कि इस सुन्दर आनुपातिक ज्योत्स्ना रात में शेर की दहाड़ जैसी एक नयी उर्जा या वाइब्रेशन (कम्पन) के पैदा हो जाने से यह सारा अनुपात तहस-नहस हो गया। यानी पूर्णिमा का सौन्दर्य अब पहले जैसा नहीं रहा। लोग डर गये। अच्छा, डर भी क्या कोई एनर्जी (ऊर्जा) है ? या यह एबसेन्स ऑफ एनर्जी या 'ऊर्जा का अभाव' है ?

घर के लोग आकर कराली सर को पकड़कर घर ले गये।

दूसरे दिन सुबह नींद से उठकर पूर्व के आकाश के गहरे लाल रंग के सूरज को देखकर कराली बाबू फिर से शून्य संख्या की बात सोचने लगे। शून्य को न गुणा किया जा सकता है न इसका भाग किया जा सकता है और न ही शून्य से कुछ घटाया ही जा सकता है—शून्य हमेशा ही सम्पूर्ण शून्य रहता है।

यह सब सोचते हुए कराली सर ने स्नान किया, खाना खाया फिर स्कूल

चले गये ।

इधर स्कूल में बड़ा हंगामा मचा हुआ था । लड़के अपनी कक्षाओं में नहीं जा रहे थे । स्कूल शुरू होने की घंटी भी नहीं बज रही थी । चारों तरफ़ लोग बहुत गम्भीर होकर बातें कर रहे थे । पता चला कि कल से स्कूल के दो छात्र- बुरुन और भुतुम लापता हैं । कहीं भी उनका पता नहीं चला । साथ ही पिछली रात को कस्बे में कई बार शेर की दहाड़ भी सुनाई पड़ी थी । सभी उसी के साथ एक संयोग बैठा रहे थे । अधिकतर लोगों की यही धारणा थी कि बुरुन और भुतुम के नाम से शोक प्रस्ताव पारित करके स्कूल में छुट्टी कर दी जाए । कुछ लोगों का यह भी कहना था कि उन दोनों लड़कों का किसी बदमाश ने अपहरण कर लिया है । किसी का कहना था कि वे समुद्र दीघी में डूब गये हैं । बात जो भी जो, बुरुन के लापता हो जाने से कराली सर बहुत हताश हो गये । बुरुन जैसा छात्र उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था । हालाँकि पिछली वार्षिक परीक्षा में बुरुन को गणित में तेरह नम्बर ही मिले थे, लेकिन इन दिनों बुरुन की गणित की प्रतिभा को देखकर कराली सर की दृढ़ धारणा थी कि वह आइन्स्टाइन की तरह ही महान होगा । ऐसे छात्र के लापता होने पर भला किसे दुःख नहीं होता । बुरुन ने उनसे एक बार कहा था, "सर । गणित के नियम से हम लोग एक में एक जोड़कर उसे दो कहते हैं । मगर क्या यह ठीक है ? इस धरती पर कोई चीज़ किसी दूसरे से नहीं मिलती । किसी पेड़ के असंख्य पत्तों को मिलाकर देखा जाए तो कोई भी एक पत्ता हू-ब-हू दूसरे पत्ते से नहीं मिलता । उनके आकार में, रंग वगैरह में कुछ न कुछ फ़र्क़ तो होता ही है । यहाँ तक कि बालू के एक कण के साथ बालू के दूसरे कण में भी फ़र्क़ नज़र आयेगा । इसलिए एक-के साथ-एक का योग दो कैसे हो सकता है ? क्योंकि एक दूसरे से और दूसरा तीसरे से बिल्कुल अलग हैं ।"

कराली सर ने यह सुनकर बड़े ही हैरत से कहा था, "तब उसे क्या कहोगे ?" बुरुन ने जवाब दिया था, "एक के साथ जोड़ने पर दो एक होंगे । उसी तरह तीन एक, या चार एक ।"

इतनी कम उम्र में बुरुन के दिमाग़ में एक की ऐसी तत्त्वालोचना देखकर कराली सर खुशी से नाच उठे थे । कराली सर भी इस बात को जानते थे कि पदार्थ विज्ञान के अनुसार इस दुनिया में कभी दो चीज़ें एक जैसी हो ही नहीं सकतीं । इसलिए एक के साथ एक जोड़ने पर दो कैसे हो सकता है ? इस बात पर भी कराली सर अक्सर विचार करते रहते ।

हेड सर सचिन सरकार ने सभी अध्यापकों को बुलाकर कहा, "जहाँ तक मेरी बात है, मुझे लगता है कि वे दोनों अभागे लड़के शेर का ही शिकार हो गये हैं। लेकिन बिना किसी प्रमाण के शोक सभा कैसे की जा सकती है ? मगर शेर के उपद्रव से स्कूल के लड़कों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आज स्कूल में छुट्टी कर रहा हूँ। आप लोग भी सावधान रहियेगा।"

हेडमास्टर साहब की बात सुनते-सुनते इतने दुःख में भी कराली सर के दिमाग़ में गणित का सवाल नाच रहा था। वे सोच रहे थे कि अगर दो लड़कों को एक शेर खा जाए तब एक के साथ दो का योग होने पर गणित के नियम से तीन होता है। लेकिन प्रचलन में दो लड़के धन एक शेर इज़ इक्वल टू एक शेर होगा। बुरुन, भुतुम और शेर मिलकर तीन प्राणी नहीं होंगे। गणित का नियम यहाँ काम नहीं आता। और भी दुःख की बात यह है कि बुरुन जैसे गणित्त के मेधावी छात्र को खा जाने के बावजूद शेर का दिमाग़ गणित में बेहतर नहीं हो सकता। उस शेर को कभी पता ही नहीं चलेगा कि गणित की दुनिया की कितनी बड़ी प्रतिभा को उसने नष्ट कर दिया है।

आवेग से भर जाने के कारण कराली सर की आँखों में आँसू आ गये। गुस्से से उनका शरीर काँपने लगा। वे अपने आप से कहने लगे, "उस शेर को ख़त्म करना ही पड़ेगा।"

गेम सर बग़ल में बैठे हुए थे। कराली सर की बात उनके कानों में जाते ही वे भी आँखें पोंछकर भर्राये गले से बोले, "बुरुन से मुझे बहुत आशाएँ थीं। ओलम्पिक से उसे कम से कम दस-बारह सोने के पदक तो मिलते ही। उस शैतान शेर को ख़त्म करने की बात मैंने भी बहुत सोची है। लेकिन सुनता हूँ कि वह किसी तांत्रिक का शेर है। वह तांत्रिक तंत्र-मंत्र और वशीकरण में माहिर है।"

कराली सर गणित और विज्ञान के अलावा कुछ नहीं मानते थे। इसलिए हो-हो करके हँसते हुए बोले, "चिंता मत कीजियेगा। मुझे एक मजबूत लाठी-सोंटा जो भी हो, दीजिए। इसके बाद देखियेगा एनर्जी मोमेन्टम और वेलोसिटी के आगे सारा तंत्र-मंत्र धरा रह जायेगा।"

गेम सर खुश होकर बोले, "यह कौन-सी मुश्किल बात है। जैवलिन ही ले जाइए। भाला का भाला, लाठी की लाठी।"

वही हुआ। सब लड़के जब अपने घर चले गये, सड़कें जब थोड़ी सूनी हो गयीं, उस वक़्त एक जैवलिन अपने कंधे पर रखकर कराली सर तेज क़दमों से

गोसाईं बागानं की ओर रवाना हुए ।

राम वैद्यजी अपने बरामदे में बैठकर हुक्का गुड़गुड़ाते हुए आकाश-पाताल के कुलावे मिला रहे थे । घर में रोना-धोना मचा हुआ था । उनकी भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था । बुरुन गोसाईं बागान के तलघर में क़ैद था । वहाँ पर पहुँचना कठिन होते हुए भी असम्भव नहीं था । नकियासुर ने शार्ट कट का रास्ता बता दिया था । किसी भी अच्छे तैराक के लिए वहाँ पहुँचना मुश्किल नहीं था । लेकिन मुश्किल था बुरुन की इच्छा शक्ति को जागृत करना । बुरुन की इच्छा-शक्ति जागृत हुए बिना हाबू की मंत्र शक्ति को नष्ट करना सम्भव नहीं था । चिंता करते-करते वैद्यजी दुबले हो गये । उनकी आँखों के नीचे काले धब्बे उभर आये ।

अचानक सड़क से कराली सर को अपने कंधे पर एक भाला रखकर जाते हुए देखकर राम बाबू के दिमाग़ में बिजली कौंध गयी । वे एक छलाँग में बरामदे से उतरकर लगभग दौड़ते हुए कराली सर की धोती की लांग पकड़कर खींचते हुए बोले, "कराली बाबू ! आप कहाँ जा रहे हैं ?

कराली बाबू ने बुरुन के दादाजी को देखकर बड़े दुःख से कहा "बुरुन के लिए हम सभी बड़े दुःखी हैं राम बाबू ! मैं उस शेर को सबक़ सिखाने जा रहा हूँ ।"

राम बाबू ने खुश होकर अपनी तेज़ नज़रों से कराली सर को अच्छी तरह देखने के बाद कहा, "आपकी बहादुरी देखकर मुझे खुशी हो रही है । जाने से पहले कृपा करके मेरा बनाया एक काढ़ा पीते जाइए । उससे शरीर में ताक़त आयेगी । और इसके साथ ही दो-एक भेद की बातें भी आपको बताऊँगा । हर समय बहादुरी दिखाने से ही काम नहीं चलता, कौशल भी होना चाहिए ।" यह कहकर कराली बाबू को अपने कमरे में ले जाकर राम बाबू ने कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद कर दिया ।

काफ़ी देर तक वे दोनों बैठकर आपस में सलाह-मशविरा करते रहे ।

## 10

---

शाम ढलने के बाद आज भी आख़री डाउन गाड़ी स्टेशन छोड़कर कू-झिक-झिक करके चली गयी । थोड़ी देर बाद ही प्रतिपदा का चाँद मुसकराता हुआ

आसमान में निकल आया। सियारों का एक झुंड कहीं पर हुआ-हुआ करके चीख़ने लगा, जिसे सुनकर मोहल्ले के कुत्ते भौंकते हुए उन्हें धमकाने लगे। अचानक इसी समय कोई गीदड़ करुण स्वर में पुकार उठा। सभी जानते हैं कि गीदड़ शेर का साथी होता है। गीदड़ की आवाज़ ख़त्म होते-न-होते ही 'घे ऽ ड़ा ऽम' की दहाड़ से चारों दिशाएँ काँप उठीं। इसके साथ ही ढलती साँझ को ही बस्ती में सन्नाटा छा गया। सभी अपने-अपने घरों में जान बचाने के लिए दुबके पड़े काँप रहे थे।

शहर के दक्षिण और गोसाईं बागान की घनी झाड़ियों से बिना किसी डर के चुपचाप करालीं सर आगे बढ़ रहे थे। उनके कंधे पर जैवलिन था। राम वैद्यजी ने कराली सर के शरीर पर किसी बदबूदार तेल की मालिश कर दी थी। कहा था, "जाड़े की रात में ठंडे पानी से घबराने की अब कोई बात नहीं है। यह तेल बड़ी मुश्किल से मिलता है। इसे लगाकर दक्षिण ध्रुव में चले जाने से भी निमोनिया का ख़तरा नहीं रहेगा।" ख़ैर, यह तेल ज़रूर गुणकारी होगा पर इसकी बू बहुत ही बुरी थी। वैद्यजी ने कराली सर को थोड़ा-सा काढ़ा भी पिला दिया था। उस काढ़े का स्वाद भी अच्छा नहीं था। लेकिन उसे पीने के बाद से ही कराली बाबू के अंदर फुर्ती आ गयी थी और उनका दिमाग़ भी ठंडा बना हुआ था।

कराली सर दबे क़दमों से समुद्र दीघी के किनारे जा पहुँचे। एक झाड़ी की आड़ में अंधेरे में खड़े होकर उन्होंने अपने चारों तरफ़ देखकर अंदाज लगाया। चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। चाँदनी के मुँह पर जैसे किसी भुतहा कुहासे की ठेपी लगी हुई थी। ऐसा जान पड़ता था कि चारों तरफ़ परछाइयों जैसे भूत-प्रेत मँडरा रहे हों। कराली सर की देह में थोड़ी सिहरन-सी हुई। मन-ही-मन एक रूटओवर लगाते ही उनका डर खत्म हो गया।

वह ताल समुद्र की तरह ही काफ़ी बड़ा था। लेकिन कराली सर को उसे पूरा पार नहीं करना था। वैद्यजी के कहने के मुताबिक वे सही जगह पर पहुँचकर पश्चिमी किनारे पर चले आये थे। यहाँ से दक्षिण के घाट की तरफ़ पैदल जाना निरापद नहीं था। वहाँ तक तैरकर जाना ही ठीक था। कराली सर ने हिसाब लगाकर देखा कि यहाँ से वहाँ तक पानी के अंदर डुबकी मारकर पहुँचने में बीस मिनट से कम नहीं लगेंगे। मगर वे ज़रा भी नहीं घबड़ाये। बस पानी में उतरने से पहले बाँस की झाड़ियों की आड़ में बैठकर मन ही मन उन्होंने गणित का एक कठिन सवाल लगा लिया।

इसके बाद अपने कपड़े उतारकर सिर्फ़ एक हाफ़ पैंट पहनकर वे बाँस की

झाड़ियों के अंधेरे से निकलकर किसी साँप की तरह सीने के बल रेंगते हुए अपने जैवलिन समेत वे बड़ी ख़ामोशी से पानी में उतर गयें।

उन्हें थोड़ी ठंड ज़रूर लग रही थी मगर इससे कोई परेशानी नहीं हो रही थी। जो दिक्कत थी वह पानी के अंदर अँधेरे के कारण हो रही थी। वे किधर जा रहे थे, अपने निशाने पर जा रहे थे कि नहीं, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था। उसके बावजूद वे ख़ामोशी से आगे बढ़ते रहे। अचानक उन्हें लगा कि उनके अगल-बगल बड़ी-बड़ी पनडुब्बियाँ चल रही हैं। आतंक से उनका शरीर बर्फ़ बन गया। सर्वनाश ! दुश्मनों के पास पनडुब्बियाँ भी थीं, यह तो पता नहीं था। झटपट वे पानी के ऊपर आ गये। आसमान में चाँद की ओर देखते हुए उन्होंने मन-ही-मन दस लाख दस हज़ार दस को तीन लाख तीन हजार तीन से भाग दे दिया। उनका मन चंगा हो गया। उन्होंने अपने चारों तरफ़ अच्छी तरह से देख लिया। दक्षिण दिशा का घाट अभी दूर था। जैवलिन को पकड़कर फिर से डुबकी लगाते ही उनका भ्रम टूट गया। उन्होंने जिन्हें पनडुब्बी समझा था वे सब दरअसल समुद्र दीघी की ख़ास कालबोस, चितल, बोयल, कला और बड़ी रोहू मछलियाँ थीं। इस ताल की मछलियों को कोई डर के मारे पकड़ता नहीं था, इसीलिए काफ़ी दिनों से बढ़ते-बढ़ते वे मछलियाँ इतनी बड़ी हो गयी थीं और उनके शरीर पर काई भी जम गयी थी।

एक बार और साँस लेने के लिए ऊपर आकर फिर डुबकी लगाते ही कराली सर ने देखा कि उनके सामने एक भयंकर मूर्ति अपनी लम्बी बाँहें फैलाकर रास्ता रोके खड़ी थी। वह अपने बड़े-बड़े दाँतों को निकालकर हँस भी रही थी। कराली सर ने जैवलिन तानकर मन ही मन एक और सवाल लगाने की कोशिश की। लेकिन घबड़ाहट में उन्हें कुछ याद ही नहीं पड़ा। वह भयंकर मूर्ति जैवलिन को देखकर भी नहीं घबड़ायी बल्कि हाथ-पैर फैलाकर हँसती ही रही। वह अपनी जगह से तिल भर भी नहीं हिली। कराली सर ने थोड़ा साहस सँजोकर कुछ और नजदीक जाकर देखा तो पाया हे भगवान ! यह तो हाल ही में विसर्जित की गयी एक काली प्रतिमा थी। अभी तक उसके ढाँचे से अच्छी तरह से मिट्टी और रंग का पलस्तर भी नहीं उतरा था।

तीसरी बार फिर से साँस लेकर और दम बाँधकर कराली बाबू ने दक्षिण दिशा के घाट के सामने पहुँचकर बहुत सावधानी से जैसे ही एक बार और साँस लेने के लिए सिर उठाया ही था कि कहीं बहुत नज़दीक बिजली गिरने की तरह

शेर की दहाड़ सुनायी पड़ी— 'ग्रे ऽ ड़ा ऽ म् ।'

अचानक उस दहाड़ से उनका शरीर थोड़ा अकड़ जाने के कारण कराली सर डुबकी लगाना ही भूल गये । घाट के उस खुलेपन और चटक चाँदनी में वे बेवकूफ़ों की तरह सिर उठाये हुए खड़े रह गये । अचानक घाट के किनारे एक विशाल चेहरे वाले मनुष्य की छाया नज़र आयी । उस आदमी ने गरजकर पूछा, "कौन है रे ?"

कराली बाबू ने झट से डुबकी लगायी । दरअसल उन्होंने अपने मन से वह डुबकी लगायी, ऐसा नहीं था । उन्हें लगा जैसे किसी ने उनकी टाँग पकड़कर पानी के अंदर खींचकर छोड़ दिया हो । सौभाग्यवश उन्हें किसी ने खींच लिया था, अन्यथा उनका शरीर ऐसा अकड़ गया था कि उनसे डुबकी लगाते ही नहीं बनता ।

पानी के अंदर छह नम्बर की उस सीढ़ी को ढूँढ़ने में कुछ और वक़्त लगता, लेकिन मज़े की बात यह हुई कि कराली सर के डुबकी लगाने के साथ ही जैसे किसी ने उनके हाथ की जैवलिन को पकड़कर खूब धीरे से उन्हें खींचते हुए दरार के सामने ले जाकर छोड़ दिया ।

आख़िर हो क्या रहा था ? क्या वे पकड़े गये थे ? कराली बाबू कुछ भी समझ नहीं पा रहे थे । लेकिन सोचने का वक़्त बिल्कुल नहीं था । मन-ही-मन एक सरल सवाल हल करके उस सुरंग में घुसकर कई क़दम बढ़ते ही उन्हें एक रास्ता नज़र आया । यहाँ पर कमर भर पानी था । रास्ता धीरे-धीरे ऊँचा होता गया था । यह बात घुप्प अँधेरे में टटोलकर चलते-चलते उन्होंने समझ ली थी ।

काफ़ी दूर से किसी शोर-गुल की आवाज़ आ रही थी । क्या उन लोगों को उनका आना पता चल गया था ?

समय कम था । कराली सर हाथ में जैवलिन लेकर अँधेरा रास्ता पार करते हुए आगे बढ़ने लगे । वह अँधेरे में डूबी हुई एक सुरंग थी । हर क़दम पर आगे बढ़ते हुए उन्हें अपने पैरों के नीचे पत्थरों की बटिया, काई, सोते हुए मेढक आदि का अहसास होता रहा । शायद एक साँप को भी उन्होंने कुचल दिया था या उन्हें ऐसा ही लगा । मगर वे बेरोक-टोक आगे बढ़ते रहे । अँधेरे में ठीक से हिसाब नहीं कर पाने के कारण एक दो बार वे फिसल कर गिरे भी । इसके बावजूद वे चलते रहे । अब उन्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा । पाँचवीं बार फिसल कर गिरने के बाद वे सीधे एक दरवाज़े से ज़ोर से टकराकर 'अरे बाप रे'... कह कर सिर पकड़कर बैठ गये ।

लेकिन आराम करने का समय कहाँ था। उन्होंने टटोलकर देखा दरवाज़े पर एक पुराना ताला लटक रहा था। क्षणभर वक़्त बरबाद किये भी बिना जैवलिन की नोक को ताले के अंदर घुसाकर झटका देते ही जंग लगा वह ताला झट से खुल गया।

कमरे में कोई रोशनी नहीं थी, लेकिन काफ़ी ऊँचाई पर बने एक झरोखे से पूरा चाँद नज़र आ रहा था। और उस चाँद का प्रकाश किसी टार्च की तरह सीधे बुरुन के चेहरे पर पड़ रहा था। कराली बाबू ने देखा एक बोरे के बिस्तर पर बुरुन और भुतुम अगल-बगल पड़े हुए सो रहे थे। दोनों के चेहरे पर बड़ी शांति थी, उनके होंठों पर मुस्कान छायी हुई थी। मगर उस मंद प्रकाश में भी यह साफ़ नज़र आ रहा था कि वे दोनों बहुत कमज़ोर हो गये थे। इतने कमज़ोर कि हिलना-डुलना भी उनके लिए भारी पड़ता। पिछले दो दिनों में ही वे दोनों कितने दुबले हो गये थे।

बुरुन से उन्हें एक बात कहनी थी। राम वैद्यजी ने उस बात को कराली सर को बार-बार रटा दिया था। लेकिन वह बात इतनी मामूली और, इतनी बेतुकी की थी कि उसे बुरुन को कहने का कोई मतलब ही नहीं था। मगर रामबाबू ने बार-बार उन्हें याद दिया था कि वह वाक्य बुरुन के लिए मंत्र की तरह ही काम करेगा। वैद्यजी बहुत बुद्धिमान आदमी थे। उनकी कोई बात काटी भी नहीं जा सकती थी।

उस बात को कहने के लिए कराली सर धीरे-धीरे बुरुन के सिर के पास जाकर खड़े हो गये। फिर घुटने मोड़कर बैठ गये। बहुत सीधी-सी वह बात थी। वैद्यजी ने कह दिया था कि उसे थोड़ा ज़ोर से कई बार एक सुर में पहाड़े की तरह दोहराना पड़ेगा। वैद्यजी ने बार-बार उनसे पूछा था, "यह बात याद रहेगी न कराली बाबू ? भूल तो नहीं जायेगे ? यह बात जितनी भी मामूली हो लेकिन बुरुन की जान बचाने के लिए यह बेहद ज़रूरी है।"

दुर... ! उस वक़्त कराली बाबू हँसे थे। इससे भी कितनी मुश्किल बातें उन्हें याद थीं। और यह तो कोई बात भी नहीं थी। बिल्कुल सीधा-सादा एक वाक्य था जिसे एक सुर में पहाड़े की तरह रटाना था।

उस कमरे के बाहर कहीं नज़दीक ही अचानक 'घे ऽ ड़ा ऽ म्' की आवाज़ आयी और एक धीर भारी पदचाप उसी ओर आती सुनायी पड़ी।

समय बिल्कुल नहीं था। कराली सर बुरुन के कान के पास अपने मुँह को

लाकर ज़ोर से वह वाक्य कहने ही वाले थे कि वे बड़े हैरत से गूँगे बन गये। वह वाक्य ही उनके दिमाग़ से बिल्कुल निकल गया था। अब वह उन्हें याद ही नहीं आ रहा था।

'घेऽ ड़ा ऽ म्।— हू ...ऊ... म...!'' फिर से शेर की दहाड़ आयी। इस बार बिल्कुल क़रीब से। पैरों की आहट भी धीरे-धीरे नज़दीक आती गयी।

कराली सर गुस्से से अपने सिर के बाल नोचने लगे। वह बात उन्हें किसी तरह से भी याद नहीं आ रही थी।... हाँ हाँ... उसमें एक शब्द था नम्बर... और एक और क्या था... अरे वह... तेरह... तेरह... बिल्कुल यही... दूसरी तरफ़ एक दरवाज़ा था। उस दरवाज़े की लोहे की साँकन खोले जाने की आवाज़ हुई।

कराली सर ने अपनी मुट्ठी के झटके से अपने सिर के बाल नोंच लिये। तेरह... तेरह... पहाड़े के सुर में... बुरुन... बुरुन... बुरुन...

दरवाजे का पल्ला चरमराता हुआ धीरे-धीरे खुल रहा था। दरवाजे की दरार से एक मशाल की पीली रोशनी नज़र आयी। एक विशाल चेहरे वाला लाल वस्त्रधारी आदमी पत्थर की तरह सख़्त चेहरा करके मशाल उठाकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। उसके पीछे-पीछे काली-पीली धारियों वाला एक भारी-भरकम शेर भी चला आ रहा था।

कराली सर के बेजान हाथों से छूटकर जैवलिन ज़मीन पर गिर पड़ी। वे चकित होकर मुँह बाये खड़े थे। उनका दिमाग़ भन्ना रहा था।

शेर ने पुकारा द्र... घ्रे ऽ इ ऽ इ ऽ अ...

खून को जमा देनेवाली भयानक दहाड़!

कराली सर बेहोश होने वाले थे। हो भी जाते, पर आख़िरी क्षणों में उन्हें वह पूरा वाक्य याद आ गया।

इसके साथ कराली सर पाठशाला के मानिटर की तरह विकट स्वर में ज़ोर-ज़ोर से चीख़कर कहने लगे— ''बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह। बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह। बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह। बुरुन, तुम्हें मिला है...''

पत्थर की तरह उस विशाल चेहरे वाले आदमी ने आगे बढ़ते हुए गर्जना की, ''माँ, माँ! तुझे मनुष्य का रक्त चाहिए? तू शव साधना करना चाहती है माँ? आज तेरी ही इच्छा पूरी हो जाए।''

कराली सर सब भूल गये थे। अपना नाम तक उन्हें याद नहीं रहा। लेकिन

वे लगातार सुर में पहाड़ा पढ़ने की तरह बस यही कहते जा रहे थे, ''बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह । बुरुन तुम्हें मिला है गणित में तेरह...!''

'ग्रे ऽ ड़ा ऽ म् ।'

''तारा ! तारा ! माँ !''

ग्रे ऽ ड़ा ऽ हू ऽ म् । एक बार और दहाड़ मारकर उस शेर ने बिजली की गति से सामने छलाँग लगायी ।

कराली सर को बस इतना पता चला कि वह शेर कमर से उनकी पैन्ट को नुकीले दाँतें में कसकर एक छोटी मछली की तरह डुलाते हुए उन्हें लिये जा रहा था और वह भारी भरकम चेहरे वाला आदमी गरजता हुआ कह रहा था, ''तारा ! तारा !''

कराली सर शेर के मुँह से लटकने क बावजूद गले की पूरी ताक़त लगाकर चीख़ रहे थे ''बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह ! बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह । बुरुन, तुम्हें... ''

एक नन्हे से खिलौने के हवाई जहाज़ पर सवार होकर बुरून और भूतुम चाँद के देश में चले आये थे । यहाँ की धरती सुनहरी थी और बड़े गज़ब की लग रही थी । इसी तरह वहाँ सुनहरे पेड़-पौधे, सुनहरी घास और आसमान में चारों तरफ सुनहरी रोशनी छायी हुई थी ।

चाँद की बुढ़िया चरखा कातना बंद करके उनके लिए पीठा बनाने लगी । बुरुन और भुतुम नजदीक के एक छोटे से रूपहले पहाड़ के झरने में नहाने चले गये ।

चारों तरफ़ चिड़ियों की चहचहाट थी । मोर उड़ रहे थे । बादलों की नाव पर चढ़कर बच्चे इधर-उधर घूम रहे थे । चारों तरफ़ खेलकूद, जादू, पिकनिक, सरकस और आइसक्रीम की धूम थी । वहाँ लिखने-पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं थी । स्कूल-पाठशाला नहीं थे । बस चारों तरफ़ मज़े ही मज़े थे ।

भूतुम ने कहा, ''हम लोग यहाँ से कभी लौटकर नहीं जायेंगे ।''

''अरे छोड़ो ! अब भला लौटना कौन चाहता है !''

बुरुन और भुतुम ने जादू का खेल देखा सरकस देखा, बच्चों के साथ खेल में हिस्सा लिया । आइसक्रीम खाते-खाते झरने के पानी में जी भरकर स्नान किया । झरने के नीचे बने एक सुन्दर तालाब में तैरे भी ।

अचानक बुरुन को ऐसी खुशी और कभी न ख़त्म होनेवाली मस्ती के बीच

मज़ा किरकिरा कर देनेवाला एक वाक्य सुनायी पड़ा, "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह !"

एकाएक सारी मस्ती न जाने कहाँ ग़ायब हो गयी। उसका मन उदास हो गया। इसे कहने वाले की तलाश में उसने अपनी नज़रें चारों तरफ़ दौड़ायीं। उसने संदेहवश एक चिड़िया को ढेला मारकर उड़ा दिया। लेकिन इस बीच फिर किसी की आवाज़ आयी, "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह। बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह !"...

बुरुन को गुस्सा आ गया। वह गला फाड़कर चिल्लाया, "अच्छा नहीं होगा, मैं कहे देता हूँ।"

लेकिन इसके बावजूद नेपथ्य से, हवा से, आसमान से यही एक बात वहाँ गूँजने लगी, "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह। बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह ! बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह !"

बुरुन गुस्से में काँपने लगा। एक छलाँग में झरने के पानी से बाहर निकलकर बड़े-बड़े ढेले उठाकर चारों तरफ़ फेंकने और चिल्लाने लगा, "मैं कहे देता हूँ अच्छा नहीं होगा। मैं तोड़-फोड़ दूँगा। सब नष्ट कर दूँगा।"

उसके पैरों के नीचे की ज़मीन कह उठी, "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह !"

पहाड़ ने भी दोहराया, "बुरुन... तुम्हें मिला है गणित में तेरह... !"

इसके बाद पेड़-पौधे, पक्षी, नदी का पानी, चाँद, बादल सभी एक साथ पहाड़ा पढ़ने के स्वर में कहने लगे "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह... ! बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह... ! बुरुन तुम्हें..."

गुस्से के मारे बुरुन ने एक पेड़ उखाड़ लिया। इसके बाद गुस्से में भरकर उसके दोनों हाथों से जो कुछ भी मिलता गया, उसे तोड़ने लगा। उसने आसमान तोड़ दिया, पहाड़ तोड़ दिया, फ़र्श तोड़ दिया... तोड़ते-तोड़ते उसने चारों तरफ़ सब ख़ाली कर दिया।... सब कुछ ख़त्म हो गया।

बुरुन ने तहख़ाने में धीरे से अपनी आँखें खोलीं। सामने देखते ही वह समझ गया, उसके ऊपर इतनी देर तक सपनों का जो बोझ लाद दिया गया था, वह हट गया है।

उसके कानों में फुसफुसाकर जैसे किसी ने कहा, "बुरुन, आज पहली बार किसी ने अपने आत्मबल से हाबू की मंत्र शक्ति को काट फेंका है। शाबाश !

हाबू की अब सारी तैयारियाँ बेकार हो गयी हैं। जिस पल तुमने हाबू का मंत्र काट दिया, उसी पल से हाबू की सारी ताक़त ख़त्म हो गयी।''

बुरुन ने कहा, ''निधिदा !''

लेकिन निधिराम उस वक़्त कहाँ था। वह पलक झपकते ही हवा के वेग से अपने लोगों को यह ख़बर देने दौड़ गया था।

सुरंग से हाथों में मशाल लेकर हाबू ऊपर जा रहा था। सामने भयंकर शेर था। उस शेर के मुँह से कराली सर लटक रहे थे। लटकते हुए भी वे अस्फुट स्वर में बड़बड़ा रहे थे, ''बुरुन, तुम्हें...''

अचानक शेर ने रुककर कराली सर को बड़े आहिस्ते से ज़मीन पर लिटा दिया। इसके बाद धीरे-धीरे घूमकर हाबू के सामने खड़ा होकर अपना भयानक जबड़ा फैलाते हुए दहाड़ा— 'घ्रे ऽ ड़ा ऽ म् !'

शेर की दोनों आँखें चमक रही थीं, लाल जीभ से लार टपक रही थी, उसकी मूछें काँटों की तरह खड़ी हो गयी थीं।

और उसी क्षण हवा में भयंकर कोलाहल मचाते हुए चारों तरफ़ से भूतों ने चिल्लाना शुरू किया, ''हाबू अब तुम मरोगे ! हाबू अब तुम मरोगे ! हाबू अब तुम मरोगे !'' वे हू-ब-हू कराली बाबू की तरह पहाड़ा पढ़ने लगे।

क्षण भर के लिए अचकचा जाने के बाद हाबू की समझ में आ गया कि अब उसके मंत्र का बल ख़त्म हो गया है। जिन लोगों को उसने इतने दिनों तक वश में कर रखा था, वे सब अब उसके ख़िलाफ़ सीना तानकर खड़े हो गये थे।

हाबू के जीवन में ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी थी। गदाई दारोग़ा के हाथों वह एक बार ज़रूर बेवकूफ़ बना था, लेकिन गदाई भी उसका मंत्र नहीं काट पाया था। सरकस का शेर लाकर साहसी गदाई उसकी पीठ पर चढ़कर इस ख़ूबी से गोसाईं बागान में आया था कि हाबू ने समझा था कि गदाई भी कोई सिद्ध तांत्रिक है।

घबड़ा जाने से हाबू की अक्ल गुम हो गयी थी इसलिए उस वक़्त वह अपने मंत्रों का कमाल नहीं दिखा पाया था। लेकिन इसके बाद जेल में बैठकर वह चोरी-छिपे साधना करके और ज़्यादा सिद्धियाँ प्राप्त करके निकला था। लेकिन अचानक सब बेकार हो गया। अब उसकी सारी शेख़ी धरी रह गयी थी।

क्षणभर में अपनी बुद्धि लड़ाकर हाबू उस मशाल को शेर के मुँह में झोंककर उसके बग़ल से तीर की गति से भागा। उसके पीछे-पीछे वह मुँहझौंसा शेर भी

काल बनकर दौड़ा। शेर के पीछे भूतों की भीड़ थी। और उनके पीछे हाथ में मशाल लेकर हाफ़पैन्ट पहने हुए कराली सर दौड़ रहे थे।

कराली सर उस वक़्त भी चिल्ला रहे थे, "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह !..."

लेकिन हाबू की जान उस बार बच गयी।

कराली सर का हाफ़पैन्ट वाला विकराल चेहरा और "बुरुन, तुम्हें मिला है गणित में तेरह...' के शोर से परेशान होकर शायद वह शेर जंगल में भाग गया था। हाबू जान बचाने के लिए दौड़ते समय एक बबूल के पेड़ की जड़ से ठोकर खाकर गिर पड़ा। भूतों की भीड़ वहाँ पहुँचकर जब उसकी गर्दन तोड़ने जा रही थी, तभी कराली सर, 'बुरुन, तुम्हें मिला है...' चीख़ते हुए वहाँ हाजिर हो गये। उनके शरीर पर वैद्यजी ने जो तेल लगा दिया था उस तेल की तेज़ बदबू से ज़्यादातर भूत वहाँ से दूर छिटककर क़ै करने लगे। बाक़ी सारे भूत, "बुरुन, तुम्हें मिला है..." की चिल्लाहट को कोई नया मंत्र समझकर घबड़ाकर बुत की तरह खड़े रह गये।

इसीलिए हाबू की जान बच गयी। लेकिन जान बच जाने के बावजूद उसके अपमान का अंत नहीं रहा। स्कूल के बूढ़े दफ़्तरी के रिटायर होकर अपने गाँव चले जाने के कारण उस जगह पर हाबू को लगा दिया गया।

हाबू अब स्कूल का घंटा बजाने लगा, हर कक्षा में परीक्षा या छुट्टी की नोटिस ले जाने लगा। अब वह पुराना हाबू नहीं रहा। सारा कस-बल निकलकर चूहा बन गया था। भूत-प्रेतों से बुरी तरह डरने लगा था। इसलिए वह दिन-रात 'राम राम'... का जाप करता रहता।

वैद्यजी की जैसी बढ़ोत्तरी हुई, वह कहने की बात नहीं हैं। उनकी दुकान में हर वक़्त रोगियों की भीड़ लगी रहती थी। मगर रोगियों का कहना था कि उस भीड़ में सभी आदमी नहीं होते थे।

खेलकूद या पढ़ाई-लिखाई में निधिराम अब बुरुन की कोई मदद नहीं करता था। राम वैद्यजी ने मना कर दिया था। मगर बुरुन ने अपनी कोशिशों से ही खेलकूद और पढ़ाई में काफ़ी उन्नति कर ली थी। लेकिन इस बार भी अर्द्धवार्षिक परीक्षा में उसे गणित में तेरह नम्बर ही मिले, जबकि उसने सौ अंकों के सभी सवाल सही हल किये थे।

बाद में पता चला कि कराली सर ने कक्षा में सभी लड़कों को थोक में तेरह

नम्बर बँटा था उन्होंने सभी को फेल कर दिया था। लड़कों ने जाकर जब उनसे पूछा, तब वे मुसकराते हुए सभी की पीठ थपथपाकर बोले, "तेरह नम्बर बड़ा पावरफुल होता है। समझ गये न ! मैं इन दिनों तेरह नम्बर को लेकर काफ़ी सोच-विचार कर रहा हूँ। विचार करते-करते मुझे लगा, हर किसी को जीवन में कम-से-कम एक बार तेरह नम्बर ज़रूर मिलना चाहिए।"

Indian ... 115976 17.11.04

किशोर पाठकों में
वेहद लोकप्रिय **शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय**
ने कई रोचक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी नई
पुस्तकों का इन्तज़ार करने में भी बड़ा मज़ा आता है।
ऐसी ही मज़ेदार और रोमांचक कारनामों से भरपूर *गोसाईं बागान का भूत* उपन्यास एक ऐसी रोचक कृति है जो एक बार हाथ आई नहीं कि पाठक इसे पढ़े बिना मानेंगे नहीं। इसमें लेखक से कई सवाल पूछे गये हैं जिनमें पहला यह था कि क्या भूत सचमुच इतने परोपकारी होते हैं ? दूसरे, भूत अगर राम नाम से इतना डरते हैं तो इस उपन्यास के एक भूत का नाम निधिराम क्यों रखा गया? लेखक का मानना है कि नाम में राम लगाना और राम का नाम लेना दोनों अलग-अलग बातें हैं। तीसरा सवाल यह कि साँप का ज़हर क्या खुद साँप पर असर करता है ? अगर करता है तो राम वैद्यजी का नाम सुनकर भूत क्यों भाग जाते हैं ? वह भी तो एक नाम ही है। दरअसल वैद्यजी के नाम में विशुद्ध राम है। इसके आगे-पीछे कुछ भी नहीं लगा। भूतों के मन को समझना बहुत कठिन है : कभी वे राम नाम सुनकर काँप उठते हैं तो कभी किसी राम की परवाह नहीं करते। अब अगर कोई भूत अनजाने में राम वैद्यजी का नाम ले ही ले तो हम क्या कर सकते हैं ? भूतों से भी ग़लती हो सकती है।

मामला बड़ा पेचीदा था—इसीलिए कोई फेरबदल किये बिना अपनी तमाम गड़बड़ियों के साथ यह उपन्यास सबके सामने है। अगर किसी पाठक को कहीं कोई ऐसा परोपकारी भूत मिल जाय तो सच्चाई का पता और सवालों का जवाब मिल सकता है।

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 896 G
00115976

ISBN-81-260-0226-3
मूल्य तीस रुपये

आवरण : दीपक हरिचन्दन